राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

'राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी' के अन्तर्गत प्राचीन राजस्थानी-गुजराती-हिन्दी भाषाके जो ग्रन्थ प्रेसोंमें छप रहे हैं उनकी नामावलि।



पद्यात्मक रचनाएं -

१. कान्हड दे प्रबन्ध-कर्ता जालोर निवासी कवि पद्मनाभ।
२. गोराबादल-पदमिणी चउपई-कर्ता कवि हेमरतन।
३. वसन्तविलास-फागु काव्य।
४. कूर्मवंशयशप्रकाश अपर नाम लावारासा-कर्ता चारण कवि गोपालदान
५. क्यामखां रासा - कर्ता मुस्लिम कवि जान।

गद्यात्मक रचनाएं -

६. वांकी दासरी ख्यात।
७. मुंहता नैणसीरी ख्यात।
८. राठोड वंसरी उत्पत्ति।
९. खींची गंगेव नींबावतरो दोपहरो, राजान राउतरो वात वणाव आदि।
१०. ढाढाला एकलसिंगडरी वात।

छपनेके लिये तैयार होनेवाले कुछ ग्रन्थ

राजस्थानी सुभाषित रत्नाकर।

पुरातन राजस्थानी गद्य संचय।

जहांगिर यशश्चन्द्रिका - कवि केशवदास कृत।

रणमल्लछन्द - कवि श्रीधरव्यास कृत।

जलाल गहाणीरी वात।

कुतवदी साहजादेरी वात।

हितोपदेश गवालेरी भाषा

वेताल पाचीसीरी वार्त। इत्यादि - इत्यादि।

चारण कविया गोपालदान विरचित

कूर्मवंश यशप्रकाश

अपर नाम

लावारासा

विस्तृत भूमिका एवं टिप्पणीआदिसे समलंकृत

संपादन कर्ता

महताब चन्द्रजी खारैड

प्रकाशन कर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर

जयपुर, (राजस्थान)

[प्रथमावृत्ति, प्रति सं० ७५०]

विक्रमाब्द २०१०] मूल्य ३) [illegible] ७५ न० पै० [खिस्ताब्द १९५३

मुद्रक—पी. एच्. रामन्, एसोसिएटेड ए. एन्ड प्रि लि, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई ७

लावारासा - अनुक्रमणिका

**
*

किंचित् प्रास्ताविक

'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'में प्राचीन **राजस्थानी एवं हिन्दीके**, जिन कतिपय ग्रन्थोके प्रकाशन करनेका निश्चय, पिछले वर्षके प्रारभमें, किया गया था उनमेंका प्रस्तुत ग्रन्थ चारण कविया गोपालदान विरचित **'कूर्मवंशयशप्रकाश'** अपरनाम **'लावारासा'** भी एक है जो अब इस प्रकार सुसपादित और समुद्रित होकर, प्रथम वार प्रकाशमें आ रहा है और विद्वानोके कर-कमलमें उपस्थित हो रहा है।

जिस समय प्रस्तुत ग्रन्थके सपादनकर्त्ता श्री महताव चन्द्रजी खारैडसे, इस कृतिके विपयमें कुछ परिचय मिला और इनकी की हुई प्रतिलिपि देखनेमें आई, उस समय यह ज्ञात नही हुआ था कि इस ग्रन्थकी और भी प्रतिया कहीसे उपलव्व हो सकती हैं। खारैडजीने जिस मूल प्रति परसे अपनी प्रतिलिपि की थी वह प्रति भी मुझे प्रत्यक्ष देखनेको नहीं मिली। अत जैसी प्रतिलिपि खारैडजीकी थी उसीको छपनेके लिये प्रेसमें भेज दी गई। प्रेसने ग्रन्थका आधेसे अधिक भाग एकसाथ कपोज करके भेज दिया और उसका सशोधन वगैरह हो कर उतना भाग छप गया, तब फिर प्रेसने वाकीका भाग भी एकसाथ कपोज करके करेक्शनके लिये भेजा। उस समय अकस्मात् भगतपुरा (खूड) के निवासी उत्साही राजपूत युवक श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत द्वारा ज्ञात हुआ कि इस ग्रन्थकी दो-एक प्रतिया तो उनके निजके पासमें है और कुछ अन्य प्रतिया अन्य सज्जनोंके पास भी उनने देखी है इत्यादि। प्राचीन ग्रन्थोंके सपादनकी हमारी अपनी शैली है कि प्रकाशनके लिये जो ग्रन्थ तैयार किया जाय उसकी जितनी भी प्राचीन प्रतिया ज्ञात या उपलव्ध हो सकती हो उन्हे प्राप्त करना, देखना एव उनका परस्पर मिलान करना और फिर उनके आधार पर उसका यथाशक्य शुद्ध पाठ तैयार करके, उसे प्रेसमें छपनेके लिये भेजना। लेकिन, प्रस्तुत कृतिके विषयमें हम अपनी इस शास्त्रीय सपादन शैलीका प्रयोग नही कर सके। क्यो कि जिन अन्य प्रतियोके अस्तित्व का जब हमें परिचय मिला, तब तो इसके पाठका मुद्रण कार्य प्राय समाप्त होने पर था। इसलिये इस ग्रन्थका प्रस्तुत प्रकाशन केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर किया जा रहा है और इससे इसमें शब्द, वाक्य, पक्ति आदिकी दृष्टिसे कई प्रकारकी अशुद्धियोका होना अनिवार्य है। यदि भविष्यमें इसके पुनर्मुद्रणका प्रसग उपस्थित हुआ तो, उपलव्ध अन्यान्य प्रतियोका मिलान कर, उन परसे एक विश्लेषणात्मक और अनुसन्धानात्मक आवृत्ति–जिसे इग्रजीमें 'क्रिटिकल एडिशन' कहते है–तैयार होनी चाहिये।

श्रीयुत सौभाग्यसिंहजी शेखावत हमे सूचित करते है कि–

'लावारासा' की मेरे पास ३–४ प्रतिया है। एक तो मैंने हाजिर कर ही दी थी ३ प्रतिया और है। ये प्रतिया मुझे विभिन्न व्यक्तियोंसे उपलव्व हुई है। इनमेंसे (१) एक प्रति तो मेरे प्रपितामहके पास ही थी जो कि ठिकाना खूडमें कामदार थे। (२) दूसरी कुमार श्री देवीसिंहजी, मडावावालोंसे मिली है। (३) तीसरी सुखदानजी सिंढायच ग्राम दुलचासकी कलमी,

वारैठ प्रभुदानजी कवीरसरसे मिली है। कहते हैं कि यह प्रति गोपालदानजीकी हस्तलिखित प्रतिसे अनुकृत हुई है जो सबसे अच्छी है और मेरी प्रतिसे अधिक मिलती है। इनके सिवाय, ठाकुर बहादुरसिंह वानूडा (खूड) के पास भी एक प्रति है जो पहली और तीसरी प्रतिसे मिलती हैं। इनके अतिरिक्त कल्याणदानजी मानदानजी कविया दीपपुरा, सीकर, ठाकुर किशनसिंहजी परसरामपुरा (उदयपुरवाटी) एव रावराजा सरदारसिंहजी, उनियाराके पास भी इसकी प्रतिया है।" यद्यपि जैसा कि ऊपर सूचित किया गया है प्रस्तुत आवृत्ति, केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर सपादित हुई है अत इसमें पाठभेद, पक्तिभेद, छन्दभेद आदि स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होगे – तथापि इसके सपादक श्री सारडजीने इसे यथाशक्य शुद्ध रूपमें तैयार करनेका यथेष्ट श्रम लिया है और मूलके नीचे कठिन एवं अल्पपरिचित शब्दोका अर्थ आदि दे कर ग्रन्थके समझने समझानेका यथोचित प्रयत्न किया है। साथ ही में अच्छी विस्तृत भूमिका लिख कर ग्रन्थगत इतिहासका जो स्पष्ट दिग्दर्शन करानेका प्रयत्न किया है उससे ग्रन्थके अध्ययनकी उपयोगिता अधिक सिद्ध होगी।

सर्वोदय साधना आश्रम
चदेरिया (मेवाड)
दि १०–४–५३.

जिनविजय मुनि

भूमिका

वीरभूमि राजस्थान अपनी अमर वीर सतानोकी वीरता, त्याग एव उदारताके लिये जगप्रसिद्ध है। इसके सपूतोकी गौरव-गाथाएँ गा कर अनेक महाकवि अपने यशको, अक्षुण्ण बना गये है। इन महाकवियोने अपनी रचनाएँ राजस्थानकी प्रसिद्ध काव्यभाषा डिंगलमें की हैं। कहना नही होगा कि यह काव्यभाषा वीर-रसके व्यजित करनेमें अन्य भाषाओसे अपना स्थान कुछ ऊँचा रखती है, किन्तु यह भी बात नही है कि इस भाषामें अन्य रस उत्तमतासे व्यजित ही नही हुए हो। इस भाषामें करुण, शृगार और शात रस भी बहुत सुदरतासे व्यजित किये गये हैं, जिनका अनूठापन चित्तको बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है।

राजस्थानकी वीर गाथाओको गाने वाले इन महाकवियोमेंसे अनेक तो ऐसे थे जो स्वयं युद्धक्षेत्रमें अपनी वाणी और भुजाओ, दोनोका चमत्कार बताते थे, जिनके रचित ग्रथोका उपयोग इतिहासकारोने अपने इतिहासग्रथोमें किया है। इन महाकवियोका उद्देश्य अपने आश्रयदाताओका अत्युक्तिपूर्ण यशोगान ही नही था, वरन् ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित करना भी था। ऐसे ही कवि-शिरोमणियोमें कविया गोपाल भी थे, जिनके रचित 'कुर्मवशयशप्रकाश' अर्थात् 'लावारासा' में दोनो उद्देश्योका सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक, अर्थात् कूर्मवशयशप्रकाश (लावारासा) स्व पुरोहित हरिनारायणजी, बी ए, विद्याभूषणको किसी राजपूत सज्जनसे प्राप्त हुई थी, जिनका विचार इसे प्रकाशित करा देनेका था। श्रद्धेय पुरोहितजीने यह पुस्तक सम्पादन करनेको मुझे दी। सम्पादन और टिप्पणियोका कार्य सन् १९३७ ई के आसपास ही समाप्त हो चुका था। भूमिकामें देनेके लिये ऐतिहासिक-सामग्री एकत्रित की जा रही थी, इधर महासमर आरभ हो जानेसे कागज दुष्प्राप्य हो गया। सुतराम् इस पुस्तकका प्रकाशन-कार्य रुक गया। सवत् २००२ वि में पुरोहितजी साहबके निधनसे भूमिकामें जो कुछ उनके विचार लिखे जानेको थे, वह उन्हीके साथ चले गये। अब भूमिकाका भार भी मेरे ऊपर ही आ पडा। मेरे लिये यह कार्य बिलकुल नवीनतम ही रहा। पुरोहितजी भूमिकामें क्या-क्या देना चाहते थे, यह मुझे इस विषयमें उनसे हुई बातचीतसे मालूम हो गया था। उसी आधार पर चल कर, प्रस्तुत सामग्री एकत्रित कर, उपस्थित कर रहा हूँ। यद्यपि इसमें अनेक प्रकारकी त्रुटियाँ पाठकोको प्राप्त होगी, तथापि मुझे आशा ही नही, विश्वास है कि विद्वान् पाठकगण मेरी अल्पज्ञता एव प्रथम प्रयासको ध्यानमें रख कर क्षमा करेगे।

कविया गोपालजीका यह दूसरा ग्रथ प्रकाशित हो रहा है। इससे पूर्व इनका एक ग्रथ श्रद्धेय स्व. पुरोहित श्री. हरिनाराणजी द्वारा सपादित "शिखरवशोत्पत्ति पीढ़ी वार्त्तिक" (सीकरका इतिहास) नागरी प्रचारणी सभा, काशी, द्वारा सचालित "बालाबख्स राजपूत चारण पुस्तकमाला" में प्रकाशित हो चुका है। उस पुस्तककी भूमिकामें कविका जो परिचय अन्वेषणके पश्चात् दिया है, उसका सार पाठकोके लिये यहाँ दे दिया जाता है —

कविया गोपालका पूरा नाम गोपालदान कविया था। यह अनेक डिंगल-पिंगल शास्त्रोंके ज्ञाता, अनन्य साहित्यसेवी एव "बालाबक्स राजपूत चारण पुस्तकमाला" के सस्थापक बारहठ श्री बालाबक्स पाल्हावतके मामा थे। इन्होंने उक्त दोनों ग्रथोंके अतिरिक्त 'कृष्णविलास' एव अनेक स्फुट गीत छद बनाये थे। यह भी सुना जाता है कि इन्होंने 'काव्य प्रकाश भाषा' और 'सभा-प्रकाश भाषा' नामक दो ग्रथ और बनाये थे। ये सभी अप्रकाशित हैं। कविने अपना परिचय 'कृष्णविलास' और 'लावारासा' में दिया है, वह क्रमश इस प्रकार है–

कृष्णविलाससे–

कवि जन कवियो दिव्यकुल, चारण चंडीवाल।
'अलूभक्त'के, वशमें, कहत नाम गोपाल॥
'अलू' नद 'नरपाल' भय, 'नरू' नंद 'मघवान'।
'मेघराजके' सुत भये, 'गिरधर' नाम सुजान॥
'गिरधर' सुत 'माहू' भये, 'माहू' सुत 'हरिराम'।
पुत्र भये हरिरामके, 'विजयराम' गुण धाम॥
'विजयरामके' पुत्र फिर, 'दौलतराम' बखान।
सुत भये 'दौलतरामके', ताको नाम जु 'ज्ञान'॥
पुत्र भये फिर 'ज्ञानके' 'जलूदान' 'खुमान'।
'रामनाथ' 'श्योनाथ' ये, चार बधु समजान॥
हम भये पुत्र 'खुमानके', नाम 'गुपाल' कहाय।
बरन्यू ग्रथ नवीन यह, नृपकी आज्ञा पाय॥

लावारासासे–

दातोपुर दक्खिन दिसा, सीकर उत्तर कोन।
कूहर पच्छिम जानिये, पूर्व जीणको भोन॥
ताके मध्य उदैपुरो, बसत सुकविको ग्राम।
उन्नत 'पर्वतहर्ष'को, तहँ भैरवको धाम॥
कविजन कवियो दिव्यकुल, चारण चडीवाल।
'अलूभक्तके' वशमें, अह मम नाम गुपाल॥

इन उद्धरणोंके आधार पर चारण-कुलभूषण 'गोपालदान' कविया सीकर के 'उदयपुरा' अपर नाम 'चोखाका बास' ग्रामके निवासी थे। यह ग्राम सीकरसे ५ कोस दक्षिणकी तरफ हर्षके ऐतिहासिक पर्वतसे १ कोस और 'जीणमाता'के स्थानसे दो कोस है। इनके पिताका नाम 'खुमान' था। इनके तीन भाई और एक बहिन थी। इनके दो विवाह हुए थे और पाच पुत्र और २ पुत्रिया थीं। इनकी जन्मतिथि ठीक ठीक तो ज्ञात नहीं हुई, किन्तु इनका स्वर्गवास भाद्रपद कृष्ण ४ स.

१९४२ विक्रमाब्दमे, १५ दिनकी बीमारीके पश्चात्, अपने ग्राम उदयपुरामें, ७० वर्षकी अवस्थामें हुआ। इससे इनका जन्म सवत १८७२ वि निकलता है। इन्होने अपनी शिक्षा अपने काका कवि रामनाथसे और तिजारेमें—जो इलाका अलवरमे है—रह कर श्रीबलवतसिंह रईससे प्राप्त की थी। यह श्रीबलवंतसिंह अलवरके रावराजा श्रीबख्तावरसिंहकी पासवान 'मूसी'के पुत्र थे।

'शिखरवंशोत्पत्ति पीढी वार्त्तिक'में कविने ग्रथ निर्माणका समय स १९२६ वि दिया है उस प्रकार इस ग्रथ 'लावारासामें' नही दिया। यह ग्रथ किस समय लिखा गया, इसका ठीक ठीक समय प्रमाणाभावमें कुछ बताया नही जा सकता है। किन्तु अनुमान ऐसा होता है कि लावारासाके पाचवे प्रसगमें जिस युद्धका कविने वर्णन किया है, उस युद्धका होना "तवारिखे महमूदाबाद याने टोकके" लेखक सैयद मुहम्मद असगरअली "आबरू"ने हिजरी सन् १२६५ में लिखा है। हिसाबसे यह हिजरी सन् सवत् १९१० वि में पडता है। इससे यह तो निश्चय हो जाता है कि स १९१० से पूर्व यह ग्रथ नही बना। और यह भी निश्चित ही है कि इस समयके पाच दस वर्ष बाद भी इतना जल्दी यह ग्रथ नही बना होगा। मेरा अनुमान यह कि इस ग्रथका निर्माण "शिखर-वशोत्पत्ति पीढी वार्तिक"के पश्चात् स १९२६ वि के पश्चात् होना चाहिए। एक ऐतिहासिक ग्रंथकी समाप्तिके बाद वैसा ही दूसरा ग्रथ लिखनेकी प्रवृत्ति होना स्वभावत उचित प्रतीत होती ह। 'लावारासा'में कविने ग्रथ-निर्माणका उद्देश्य भी कुछ ऐसा ही प्रकट किया है—

सूरवीर रजपूत कुल, कवि चारण कुल जानि।
जो न वहत निज धर्मजुत, दहुँ कुल दीरघ हानि॥
आदि धर्म छिति छत्रकुल, पूरन पैज प्रतीत।
दान करन मारन मरन, रजपूतो यह रीत॥
सँग रहनो सपति-विपति, सुख दु ख सहनो सत्थ।
कीरत कहनो दान जुध, कुल चारण यह कत्थ॥
याते हम यह ग्रथमें, परिश्रम कियो अपार।
सुजस कच्छ कुलको कियो, अपनी मति अनुसार॥

इससे यह प्रकट है कि कविने अपना पूर्ण अधिकार समझ कर इस ग्रथकी रचना की। इसका रचना-काल जैसा कि ऊपर अनुमान किया गया है—स १९२६ वि के पश्चात् स १९३० वि के आसपास होना चाहिए।

प्रस्तुत ग्रथ 'लावा रासामें' कविने अपनी डिंगल भाषाको छोड कर, शताब्दियोंसे क्रमश विकसित होती आ रही उस राजस्थानी भाषाका प्रयोग किया है, जो उत्तर-भारतमें गुजरातसे अतरवेद (प्रयाग) तक प्रचलित थी। इसके साथ ही इस ग्रथमें फारसी, अरबी, सस्कृत, डिंगल और राज-स्थानके देशी शब्दोका कविने प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त मुसलमानोंके मुखसे खडी बोली

और पंजाबीके पुटसे युक्त भाषाका कविने प्रयोग कराया है। ग्रथमें वर्णन, प्रसग और रसके अनुकल काव्यके रीतिग्रंथोंके अनुसार किया गया है। स्थान २ पर वर्णनको सजीव करनेके लिए उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षादिका प्रयोग उत्तम रीतिसे किया गया है। जैसे–

"जम्बूर रन्घ्र रन्ध्रके, गिरेन्द्रसे रसैं लवै"।
"हूर अपच्छर सूर वरि, वैठि विमाननि जात।
दम्पति मानहु तीज दिन्, डूलहर वैठि डुलात"॥
"चलत मोर सावात, मनहु डडुर बूद घन"।

और भी "कितेक हूर अच्छरी, विमान वैठि उत्तरी, कितेक जात व्योमको मनो अरठ्ठ की घरी"। एक स्थान पर उत्प्रेक्षाओंकी छटा देखिये–

आमुरके उर मध्य, दन्त अन्तक सम वसिय।
मानहु रन्ध्र मुसाल, खंभ ज्वाला गनि जैसिय॥
वसन वेघि कटाक्ष कोर कुलटा दृग कढ्ढिय।
हृद्ढ वेघि जम हृडढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय॥
ऊवरी जानि नम्पा जलद, चुवत श्रोन रंग जढ्ढियो।
मानहु कुमारि जावक सहित, करवातायन कढ्ढियो॥

इसके अतिरिक्त और भी कई स्थल है जिन्हे पाठकगण यथास्थान देखेंगे। सम्पूर्ण ग्रंथ वीररस-प्रधान है। अत. इस रसके अनुकूल ही छदोंका प्रयोग कर वर्णनीय दृश्यको साकार वना दिया हैं। वैसे इस ग्रथमें दोहा, सोरठा, छप्पय, दुर्मिल, भुजगप्रयात, मोतीदाम, भुजगी, त्रोटक, निसाणी और पद्धरी छदोंका प्रयोग वहुलतासे है, इसके साथ ही त्रिभगी, वेक्खरी, नाराच, दीर्घनाराच, और वेताल छंदोंका भी कहीं-कहीं प्रयोग है। परन्तु इन छदोंके प्रयोगमें कविने वड़ी दक्षता दिखाई हैं। किस वर्णन अथवा विषयमें कौन सा छद उपयुक्त होगा, जिससे प्रसग सजीव एव साकार हो उठे, वैसी ही लय वाला छद प्रयोग कर, कविने अपनी विशेषता प्रकट की है। यथास्थान पाठकगण इसका अनुभव करेंगे। इसके साथ ही पाठकगण यह भी अवलोकन करेंगे कि जिस विषयका कविने वर्णन आरभ किया है, उसका शब्दों द्वारा अविकल चित्र सामने उपस्थित कर दिया है। इससे यह न समझा जावे कि वर्णनमें कविने कोई दोष ही नही आने दिया है। एकाध ऐसे भी स्थल है, जहाँ कवि वर्णन-प्रवाहमें वह भी गया है। यथा–

"चलावत अंकुसतें हुजदार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार"।
"भरि वत्थ वत्थ गलवाँहि करि, ऐम असुर हिन्दुव मिलत।
मानहु अनेक दिन वीछुरे, उर मिलाय व्रघव मिलत"॥

उक्त दोनो स्थल चिन्तनीय है। एक स्थान पर वर्णन कुछ टूटा हुआ-सा ज्ञात होता है। 'लदानायुद्ध' प्रसगमें जहाँ मीरखा अपने परिवारके कैद होने पर शोक प्रकट कर रहा है, उस स्थान पर शोक करते करते ही एक दम चढाईका वर्णन उचित प्रतीत नही होता। ऐसा लगता है कि इन दोनो स्थलोंके मध्यमें कुछ अश छूट गया हो, यदि इनको जोडनेके लिए कवि कुछ बीचमें और कहता तो ठीक होता। ऐसे एकाध स्थलको छोड कर सब प्रकारसे ग्रथ सुदर है। फिर भी हणुतिया ग्रामके पाल्हावत वारैठ श्री चतरदानने जो स्व श्री वालावक्सजीके काका थे, निम्नाकित दोहा 'लावारासा'के विषयमें रच कर कविया गोपालदानकी खिल्ली उडाई है—

"चोर चोर तुक चदकी, ग्रथ बणायो गोप।
मीसण सूरजमल्लकी, उचक लई कछु ओप।।

इस दोहे में उक्त पाल्हावत वारैठने लावारासाको महाकवि चदके 'पृथ्वीराज-रासा'से और वूदीके महाकवि सूर्यमलके 'वशभास्कर'से तुके और उपमायें चुरा कर बनाया हुआ इगित किया है। मैने पृथ्वीराज रासा और वशभास्करका कई स्थलोसे अध्ययन किया है। मुझे तो पृथ्वीराज रासाकी भाषामें और लावारासाकी भाषामें कही भी समानता प्रतीत नही हुई, तुकोकी चोरीकी बात तो अलग रही। महाकवि चद और कविया गोपालदानकी भाषा और वर्णन शैलीमें रातदिनका अन्तर है। इसका निर्णय तो पाठकगण स्वय भी, पृथ्वीराज रासाके अध्ययनसे कर सकते है। रही उपमाओको चुरानेकी बात, उपमा, उत्प्रेक्षा, आदिकी चोरी, चोरी नही कही जा सकती है। पूर्ववर्ती कवियो द्वारा प्रयुक्त उपमा, उत्प्रेक्षा आदिका ग्रहण परवर्ती कवियो द्वारा होता ही आ रहा है। इसमे चोरीका दोष नही। माना कि एक कविने मुखको चद्रमा कहा और अन्य कवियोने उसका अनुकरण किया तो इसमें चोरी क्या? इसमें तो कहनेकी शैलीका पार्थक्य ही मौलिकता का मूल कारण है। कविया गोपालदान और महाकवि सूर्यमल समवयस्क और समकालीन थे। कविया गोपालने अपने काका रामनाथके साथ महाकवि सूर्यमलसे वूदीमें भेंट की थी और कवि गोपालने वशभास्करका श्री रामनाथसे अध्ययन भी किया था, जिसका प्रभाव उसके चित्त पर पडा था। लावारासामें यह प्रभाव झलकता अवश्य है, परन्तु इसे चोरी कदापि नही कही जा सकती। वास्तवमें बात यह है कि उक्त दोहा केवल हास्य मात्र है, क्यो कि कवि गोपालदान और पाल्हावत श्री चतरदान आपसमें व्याई (समधी) थे। इसके साथ-साथ आपसमें गहरे स्नेही भी। इनमें आपसमे हास्य उपहास्य निरतर होता रहता था, जिसके पचासो छद प्रसिद्ध हैं। श्री चतरदान, गोपालदानकी और श्री गोपालदान श्री चतरदानकी, इस प्रकार अवसर प्राप्त होने पर, हँसी उडाया ही करते थे, जिसमें मनमुटाव लेश मात्र भी नही रहता था। कविया गोपालदानने भी एक दोहे में श्री चतरदान पाल्हावतकी खूब खवर ली है—

"सापिन, वीछिन, गोहरी, ल्यालन पाल्हन-नार।
वाझ रहेते वहुत गुन, व्याये करत बिगार।।"

अस्तु, उक्त "चोर-चोर तुक चदकी" दोहेमे सिवाय हास्यके और तथ्य नही है।

'कूर्मवंश यशप्रकाश में' (लावारासा में) कविने कछवाहो एव उसकी नरूका शाखाके वीरो द्वारा लडी हुई लडाइयोका रोचक ढगसे ओजपूर्ण शब्दोमें वर्णन किया है। इस ग्रंथमें ५ युद्धो का, ५ प्रसगोमें वर्णन है जिसका कथासार क्रमश इस प्रकार है —

[१] प्रथम प्रसंग

इस प्रसंगमें शिव स्तुतिके पश्चात्, जयपुराधीश महाराज श्री जगतसिह और जोधपुरपति महाराज श्री मानसिहके युद्धका वर्णन है। इसमें पोकरणके ठाकुर चापावत सवाईसिहने जोध-पुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी धौकलसिहको मान कर, मानसिहके विरुद्ध, सवाईजगतसिहको अपनी ओर करके आक्रमण किया। इस युद्धमें स जगतसिहके साथ खेतडीके राजा अभयसिह, महणसरके ठाकुर लक्ष्मणसिह, दीवान रायचद, गोगावत रायचद, सीकरके लक्ष्मणसिह, खडेले, नवलगढ, दांता, उणियारा, धूला, झिलाय, नाथावत और राजावत सरदार, बीकानेरके सूरतसिह और अमीरखा अपनी अपनी सेना सहित सम्मिलित हुए। यह युद्ध परवतसर (जोधपुर राज्य) के पास हुआ। युद्धके कुछ दिन बाद महाराज मानसिहके सहायक गण, कुचामन ठाकुरके अतिरिक्त, उनका साथ छोड़ कर महाराज स जगतसिहकी ओर मिल गये। इससे महाराज मानसिहको भाग कर जोधपुरके किलेकी शरण लेनी पडी। महाराज स जगतसिहने धोकलसिहको नागोरमें गद्दी पर बैठा कर, जोध-पुर पर आ कर घेरा डाल दिया। फिर महाराज सवाई जगतसिह तो जयपुर लौट आये। इधर महाराज मानसिहने अमीरखाको अपनी ओर मिला लिया। उसने छलबल करके मारवाडको लूटा। सवाईसिहको मार डाला। फिर ढूढाड़मे आ कर लूटमार करने लगा। महाराज जगतसिह अपने राग रगमें ही लगे रहे।

[२] द्वितीय प्रसंग — प्रथम लावा युद्ध

अमीरखाने ढूढाडमें बहुत लूटमार की, किन्तु महाराज स जगतसिहने इसका कोई प्रबंध नही किया। इस प्रकार लूटमार करता हुआ वह लावाके समीप आया और वही अपने डेरे खड़े करवा दिये। उस समय मुन्नूखाने कहा कि किलेमें बहुत धन है। यदि आज्ञा हो तो युद्ध किया जावे अथवा कुछ लेने-देनेकी बात की जावे। इस पर नवाबके चाचा मीर मुल्लाखाने कहा कि ये नरूके राजपूत सदासे बहुत ही प्रबल रहे है, इनसे युद्ध करना उचित नही है। देखो सैयदोने आँमेर और जोधपुरने साभर पर युद्ध किया था, उस समय वे दोनो जो हार गये थे तब इन नरूके राजपूतोने ही सैयदोंसे उसी स्थान पर लोहा लिया था और बादशाही सेनाके माही मुरातब छीन कर आँबेरपति सवाई जयसिहको ला दिये थे। इससे इन नरूकोंसे तो 'लेने-देनेंकी ही बात तै करनी

चाहिए। किन्तु अमीरखाने इसकी वात नही मानी और किलेको घेर लिया। लावा-पतिने भी प्रत्युत्तर अच्छा दिया। इस प्रकार यह युद्ध छै मास तक चलता रहा। इसमें नरूकोका प्रसिद्ध वीर सहलसिंह मारा गया, मीरखाकी भी वहुत हानि हुई। इससे वह वहुत घवरा गया। अतमे 'लेने-देने'की वातचीत आरभ कर धोखेसे कवर हनुमतसिंहको पकड कर और घेरा उठा कर चल दिया।

[३] तृतीय प्रसंग – लदाना-युद्ध

इस प्रकार हनुमतसिंहको ले कर अमीरखा वहाँसे चला गया। यह वात खुमानसिंहको वहुत ही खटकी। वह लावासे लदाने गया, और वहाँ कँवर भारतसिंहसे वातचीत की। भारतसिंहने युद्धकी तैयारी की और माधवनग्रका (माधवराजपुरका) किला अपने अधीन कर, एक पत्र अमीरखाको लिखा कि या तो तुम कुवर हनुमतसिंहको छोड दो या युद्धके लिये तैयार हो जाओ। पत्र पाने पर अमीरखा वहुत क्रुद्ध हुआ और उसने पत्रका प्रत्युत्तर दिया कि हमने लावाके युद्धमे दो लाख रुपये खर्च किये हैं, इसलिये हनुमानसिंहको छुडानेके लिए दो लाख रुपये दो, नही तो हम भी युद्धके लिये तैयार हैं। यह वात जव आसमानखाने सुनी तव उसने अमीरखाँसे अर्ज की कि आपको ऐसा उत्तर देना उचित नही है। मुझे कल ही एक स्वप्न आया है कि उसने (भारतसिंहने) आपकी स्त्रियो आदिको कैद कर लिया है। इस पर वडा भयकर युद्ध हुआ है। इस युद्धमें हमारी वहुत वडी हानि हुई है। इसलिए पत्र सोच समझ कर भेजा जावे। इस तरह आसमानखाने वहुत समझाया किन्तु अमीरखाने एक भी वात नही सुनी। अतमें दूतको उत्तर दिया कि वह (भारतसिंह) हमारे पावोमें आ कर गिरे और दड स्वरूप हमको रकम दे। यह समाचार दूतने आ कर भारत-सिंहको कहे। भारतसिंहने क्रुद्ध हो कर अमीरखांकी वेगमोको जो उस समय 'टोरडीमें' थी पकड लिया। जव यह वात अमीरखाको ज्ञात हुई तो वह अत्यन्त ही क्रोधित हुआ और उसने माधवराजपुरे पर चढाई कर दी। यह युद्ध नौ महिने तक चलता रहा। इसमें अमीरखाकी वहुत हानि हुई। अतमें उसने एक दूत भारतसिंहके पास भेजा और कहलाया कि आप हमारे कुटुम्वको छोड दीजिये, हम हनुमतसिंहको छोड देंगे। भारतसिंहने इसका उत्तर भेजा कि तुम हनुमतसिंहको तो छोड ही दो और अपनी वेगमोको छुडवानेके लिए एक लाख रुपया हर्जानेका दो। यदि यह अस्वीकार हो तो युद्धके लिए तैयार रहो। अतमें विवश हो कर अमीरखाको हनुमतसिंहको छोडना पडा और एक लाख रुपये और अनेक वस्तुएँ भारतसिंहको भेजी। इस प्रकार अपनी वेगमोको छुडा कर अमीरखा वहाँसे चला गया।

[४] – चतुर्थ प्रसंग – उणियारा-युद्ध

यहाँसे अमीरखा अजमेर जियारतको गया। वापिस आते समय उसने साभरको लूटा। इस समय तक राजस्थानमें अग्रेजोंके पाँव वहुत कुछ जम गये थे। अग्रेजोने सामर पर

आ कर अमीरखाको घेर लिया। फिर अंग्रेजी सरकारने अमीरखाको टोंक आदि दिला कर उसे नवाब बना दिया। कुछ दिनों बाद अमीरखाका देहान्त हो गया। अब टोंकका स्वामी उसका पुत्र वजीरउद्दौला हुआ। टोंककी सीमा पर उणियारा एक ठिकाणा है। वहाँके स्वामीका भी स्वर्गवास हो गया। उनके स्थान पर फतहसिंह वहाँके स्वामी हुए। स्वर्गवासी उणियारे नरेशने बभोरका किला अपने दूसरे पुत्रको दिया था। उसने आपसी झगड़ेसे यह किला टोंक वालोंको दे दिया। जब यह किला टोंक वालोंके हाथमें आ गया तब उणियारे वालोंकी कुछ और जमीन भी अपने अधिकारमें कर ली। जब यह बात फतहसिंहको ज्ञात हुई तो उसने अपने सिपाही वहाँ भेजे। इस स्थान पर एक छोटा युद्ध हो गया जिसमें २० व्यक्ति मुसलमानोंके मारे गये और बाकीके भाग गये। वजीरउद्दौलाको जब यह समाचार ज्ञात हुआ तो उसने एक सेना उणियारेकी ओर भेजी। उस सेनाने वहाँ जा कर बहुत उत्पात किया। फतहसिंहने भी मुसल्मानी सेनाको दबानेके लिये अपनी सेना भेजी। कई दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा। अतमें मुसलमानी सेनाके पाव उखड़ गये और वे युद्धस्थल छोड कर टोंक भाग गये।

[९] पंचम प्रसंग – द्वितीय लावा-युद्ध

द्वितीय लावा-युद्धके समय लावाके स्वामी कर्णसिंह थे। एक समय भावनगरका एक पहलवान टोंकमें आया। नवाब वजीरउद्दौलाने उसका बहुत सम्मान किया और उसे अपना 'उस्ताद' बना लिया। जब वह जाने लगा तो नवाबने उसे बहुत द्रव्य आदि भेंटमें दिये। जब वह पहलवान टोंकसे विदा हो कर जा रहा था उस समय आगे आ कर मार्ग भूल गया और वह अपने साथियो सहित लावाकी ओर आ निकला। वह लावाके बाहर तालाबके किनारे महादेवके मदिरके पास ठहरा। प्रात.कालका समय था, लावाका कोई राजपूत सुभट महादेवकी पूजन करनेको आया था। उसने महादेवकी पूजन की, और गाल बजा कर स्तुति करने लगा। उसके कपोलोंकी आवाज उस पहलवानने बाहरसे सुनी और सुनकर वह जूते पहिने हुए ही मंदिरमें प्रवेश करने लगा, उसको कई व्यक्तियोंने अदर जानेसे रोका परन्तु वह उन्मत्त नही रुका। अदर जाने पर उस सुभटने भी पहलवानको निकालना चाहा उस पर दोनो ओरसे तरवारे निकल पडी। एक छोटा-सा युद्ध हो गया, सम्पूर्ण देवालय रक्तसे रग गया। वह पहलवान अपने साथियो सहित मारा गया। एक छोटा लडका बचा, वह भाग कर रोता-रोता नवाबके पास आया और उसने सम्पूर्ण कथा सुनाई। इस पर नवाब बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने लावा पर चढाई करनेकी आज्ञा दे दी। इस पर स्वर्गवासी नवाबके चाचाने उसे बहुत समझाया किन्तु उसने एक भी नही सुनी और अपनी सेना ले कर लावा पर चढाई कर दी। बनास नदीके किनारे अपने डेरे डाले। इस युद्धमे नवाबके साथ जावरे भावनगर आदिकी भी सेना थी। लावाके स्वामी कर्णसिंहने भी प्रतिकारका प्रबध किया। इस युद्धमें फतहसिंह उणियारेसे, हनुमतसिंह श्योरासे, भारतसिंह लदानेसे और चोरू महरयाके

स्वामी भी लावाकी सहायतार्थ सम्मिलित हुए। कर्णसिंहके एक भाई अलवरमें थे। उनको भी सूचना भेजी गई। वह अपनी और अलवरकी सेना सहित आये। मारोठके मेडतिया राठौड सुजानसिंह भी इस युद्धमे अपने दलवल सहित सम्मिलित हुए। युद्ध आरभ हो गया। इधर पन्नासिंहने टोकको जा घेरा और वहा लूटमार करने लगा। यह समाचार नवावको भी मिले। युद्ध भयकर होता जा रहा था। नवावका सेनापति मसूरखा मारा गया। तव कुतव्बीखाने वड़े कौशलसे हमला किया। इस हमलेको सुजानसिंहके दरोगा हाजरयाने वडी वीरतासे रोका और अतमें वह वीरगतिको प्राप्त हुआ। इधर कुतव्बीखा भी मारा गया। अव युद्धकी वागडोर स्वय नवावने संभाली। वहुत भयकर युद्ध हुआ। मुसलमानी सेनाके पाव उखड गये। वह छिन्नभिन्न हो कर इधर उधर भाग निकली। नरूकोकी सेनाने वहुत दूर तक उनका पीछा किया और छोडी हुई युद्ध-सामग्रीको अपने अधिकारमें करके वापिस लौट आई।

इसके अनन्तर कविने अपना परिचय तथा ग्रथनिर्माणका कारण वताया है।

ऊपर कुर्मवशयशप्रकाशके (लावारासा) के पाचो प्रसगोका जो कथासार दिया गया है, वह सत्य घटनाओंके आधार पर, कवि द्वारा कल्पना शक्तिसे काव्यत्वके रूपमे, प्रस्तुत किया गया है। इनमे प्रथम प्रसगकी घटनाको छोड कर वाकी चारो प्रसगकी घटनायें कछावाहोकी नरूका शाखा और मुसलमान लुटेरोंके मध्य हुए युद्धोंके वर्णनकी है। इनका परिचय देनेसे पूर्व, तत्कालीन परिस्थितियो और वातावरणका सिंहावलोकन कर लेना उपयुक्त होगा।

अठारवी शताब्दीका अतिम चरण और उन्नीसवी शताब्दीका आदि चरण, सम्पूर्ण भारतीय जनताके लिए दुर्भाग्यपूर्ण, अशात एव निकृष्टतम था। देशमें चारो ओर लूटमार एव अराजकताका साम्राज्य था। वगालमे ईस्ट इडिया कम्पनीके कर्मचारियोंके अत्याचारोंसे जनता पिसती जा रही थी। मध्यप्रदेश और राजस्थान प्रात मराठे, *पिंडारी और पठान

---

* पिंडारी लोग दक्षिणमें कर्णाटकके निवासी थे। घास काट कर वेचना इनका मुख्य आजीविका कार्य था। ये पहिले हिन्दु थे वादमें मुसलमान हो गये। ये गोमास नहीं खाते थे और देवताओंकी पूजा और व्रत उपवास भी करते थे। इनमें अनेक जातियोंके मिल जानेसे यह सकर जाति वन गई। कहते हैं कि ये लोग पिंड नामक शरावका अधिक सेवन करनेसे पिंडारी कहलाने लग गये। वादमें इन लोगोंने अपनी आजीविकाका साधन दस्युवृत्ति वना लिया था। औरगजेवके शासनकालमें इन पिंडारी दस्युओंका नेता पुनप्पा वहुत प्रसिद्ध हुआ है। मुगल सेनाओंसे इसके कई युद्ध हुए थे। जव मुगल दक्षिणमें अपना आधिपत्य फैला रहे थे उस समय ये पिंडारी महाराष्ट्र सेनामें भरती हो गये थे। धीरे धीरे ये लोग भयकर अत्याचारी और दारुण प्रजापीड़क हो गये थे। पानीपतकी तीसरी लडाईमें चिंगली और हुल नामक दो सरदार पद्रह हजार सवारोंके साथ उपस्थित थे। पेशवा वाजीराव प्रथमने जव मालवा पर आक्रमण किया था, उस समय गाजीउद्दीन पिंडारीने पेशवाकी सहायता की थी। इसी समयसे ये लोग मालवामें वस गये थे। मालवामें इनके वसनेके पश्चात् तुकोजीराव होल्कर और महादजी सेंधियाने इन लोगोंको अपनी सेनामें भरती कर लिया था। तभीसे इनके दल होल्करशाही और सेंधिया-शाहीके नामसे विख्यात हो गये थे। तलवार और भाला इनके मुख्य अस्त्र थे। पद्रह व्यक्तियोंके दलके पीछे एक वदूक भी इन लोगोंके पास थी। घोड़ेकी सवारीमें ये लोग वहुत ही तेज थे। ये

लुटेरो द्वारा आये दिन रोंदे जा रहे थे। मुगल सम्राटके हाथ नाम मात्रकी सत्ता थी। वह इनका कुछ भी प्रतिकार करनेमें असमर्थ था। राजस्थानके नरेश भी शक्तिहीन हो रहे थे। ये लोग इन लुटेरोंको इनके उपद्रवोंसे बचनेके लिये अच्छी रकम देते थे, किन्तु ये लोभी लुटेरे अधिक प्राप्तिके लिए अपने उपद्रव बंद ही नहीं करते थे। इन दस्युओंमें पठानों की संख्या अधिक थी। इनका प्रमुख अमीरखा अत्यन्त चतुर, बुद्धिमान एवं शक्तिशाली था। उसने राजस्थान विशेष कर ढूँढाड़में अपनी कार्यवाहियाँ अधिक दिखलाई थीं, जिससे धन-जनकी इतनी अधिक हानि हुई थी कि उसका अनुमान लगाना कठिन है। इसके साथ इतने अधिक भयकर और बर्बरतापूर्ण युद्ध हुए थे, जिनकी कथा सुनने मात्रसे कायरोंके जी दहल उठते है और वीरोंके भुजदड फड़क उठते है। उस समयमें बहुत ही कम मनुष्य ऐसे रहे होंगे, जो इन युद्धोंमें सम्मिलित न हुए हो और इन युद्धोंमें इतने अधिक व्यक्ति काममें आये थे कि जिनका स्मरण आज भी जयपुरमें एक कहावत द्वारा किया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्तिकी खोज करता हुआ किसीसे प्रश्न करता है तो उसे उत्तर मिलता है कि वह तो मीरखाकी लडाईमें मारा गया। अस्तु। इस ग्रथ अर्थात् 'लावारासा' में अमीरखा और उसके पुत्रसे हुए युद्धका चार प्रसगोमें वर्णन है। यह अमीरखा ढूढाड में अमीरखा पींडारीके नामसे प्रसिद्ध था। यद्यपि यह पिंडारी नहीं था, पिंडारी दस्युओंकी प्रसिद्धिसे पिंडारियो जैसे कार्य करनेसे (लूटमार करनेसे) वह इस नामसे विख्यात हो गया था। यह पठान था जैसा कि निम्नाकित अवतरणोंमे प्रकट होगा—

इतने शीघ्रगामी थे कि एक एक दिनमें चालीस-पचास मीलका सफर कर जाते थे। यही कारण था कि इनका पीछा नहीं किया जा सकता था। इन्हें वेतन नहीं दिया जाता था। ये लूटके द्रव्यसे संतोष कर लेते थे। इन दिनों करीमखा, वासिल मुहम्मद और चीतू पिंडारियोंके मुख्य सरदार थे। सेंधिया और होल्करने करीम और चीतूको नर्मदाके किनारे जागीरें दे रखी थी। अत ये नवाब कहलाते थे। इन लोगोंने दस्युवृत्तिमें अत्यधिक धन और शक्ति सचय कर ली थी। इनके इस अभ्युदयसे सेंधिया भी भयभीत हो गया था। अंतमें कुछ लोभ दे कर इन्हे कैद कर लिया था चीतूने ७ लाख रुपया दे कर ४ वर्ष पश्चात् मुक्ति प्राप्त की। मुक्ति लाभ कर उसके हृदयमें प्रतिहिंसानल धधक उठी। फिरसे सेना एकत्रित कर सेंधियाके अधिकृत प्रदेशोंमें घोर अत्याचार करने आरंभ कर दिये। अतमें सेंधिया दौलतरावने भूपालके पश्चिम प्रातवर्त्ति प्रदेशमें और भी ५ जागीरें दे कर उससे अपना पिंड छुड़ाया। करीमको उनकी माताने सेंधियाको छै लाख रुपया दे कर छुड़ाया। इसने भी अपने दलमें सम्मिलित होते ही सेंधियासे बदला लेना आरंभ किया। किन्तु यह सेंधियाका अच्छी तरह सामना न कर सका और भाग कर अमीरखाकी शरणमें आ गया। इन पिंडारियोंके दारुण अत्याचारोंसे मालवा, राजस्थान, दक्षिण और ब्रिटिश शासनाधिकृत प्रातवासी अत्यन्त त्रस्त हो गये थे। अत अतमें लार्ड हेस्टिंगजने इन दस्युओंकी ३४००० सेनाका दमन करनेके लिए एक लाख २० हजार सेना एकत्रित की। पहिले नई सधियोंके अनुसार, मराठोंकी शक्ति अच्छी तरह जकडी गयी। फिर पिंडारियों पर चारों ओरसे आक्रमण आरंभ किये गये। इतनी बड़ी सेनाका सामना करना हसी खेल नहीं था। करीमखांने हथियार डाल दिये, उनको गोरखपुरके जिलेमें एक जागीर दे दी गई। वासिल मुहम्मदने निराश हो कर आत्महत्या कर ली। चीतू कुछ दिनों तक लड़ता रहा अतमे वह जगलमें भाग गया, जहां उसको एक चीतेने खा डाला। इनके दल छिन्नभिन्न कर दिये गये। इस तरह सन् १८१८ ई० में पिंडारियोंका अत हो गया।

कहते हैं कि खुदावन्द करीमने व्यक्तियो पर राज्य करनेके लिए मलिक तालूतको उत्पन्न किया। उसके दो पुत्र हुए, बुरहिया और अरमिया। अरमियाके अफगानिया नामक पुत्र हुआ और बुरहियाके आसफ नामक। आसफ राज्यका मत्री नियुक्त हुआ और अफगानिया राज्यका सेनापति। इसी अफगानियाकी सतानें अफगान नामसे प्रसिद्ध हुई और उनकी जीविकाका आवार शस्त्र रहा। अफगानियाकी सतानोमें आगे चल कर अब्दुलरशीद नामक व्यक्ति बहुत ख्यात हुआ जिसने 'पठान' की उपाधि धारण की। तबसे ये अफगान 'पठान' कहलाने लगे।

इन पठानोमेंसे कालेखा बुनरवाल सालारजईका पुत्र ताविलखा उर्फ तालेखा जोहड-बनीर देहलीके मुहमदशाह बादशाहके समयमें भारतमें आ कर नवाब अली मुहम्मदके यहाँ नौकर हुआ। जब मुहम्मदशाह बादशाहने नवाब अली मुहम्मद पर चढ़ाई की तो तालेखां भी दूसरे अफगानोंके साथ साथ नवाबका साथ छोड कर तरीनासरायके निकट आ कर बस गया। नवाब अलीमुहम्मदके मरनेके कुछ समय पश्चात् तालेखा भी यही पर मर गया। उसके पुत्र मुहम्मदखाको नवाब अलीमुहम्मदके सेनापति दूदेखाने फिर अपने पास नौकर रख लिया, दूदेखाके मरनेके बाद मुहम्मद हयातखाने नौकरी छोड दी और कुछ जमीन ले कर खेतीबाडीका कार्य आरभ कर दिया। सन् ११८२ हिजरी तदनुसार सन् १७६४ के मई मासमें उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम अमीरखा रखा गया। अमीरखा बाल्यावस्थासे ही होनहार वीर मालूम होता था। छ सात वर्ष खेल कूदमें व्यतीत हुए। वह बादशाह और वजीरका खेल अधिक पसद करता था। वह स्वय बादशाह बन जाता था। अपने दूसरे साथियोमेंसे किसीको वजीर, किसीको सेनापति, किसीको सिपाही आदि बना कर अपने बाल-स्वभावानुसार क्रीडा किया करता था। यहाँ तक कि जो कुछ उसे खरचनेको पैसे अपने माता-पितासे प्राप्त होते थे, इस खेलमें अपने साथियोमें बाट दिया करता था। उसके इस स्वभावसे उसके माता-पिता अप्रसन्न थे। वे कई दफा डाट भी चुके थे कि यदि तेरी ऐसी ही आदत रही तो तू घरमें कुछ भी न रख सकेगा। लेकिन इस महत्वाकाक्षी बालकके हृदय पर इन सबका कुछ भी असर नही होता था। उसका यह स्वभाव जैसेका तैसा बना रहा। एक दिन एक पहुँचे हुए मुसलमान महात्माने इसे महत्वाकाक्षी और भाग्यशाली देख कर कहा कि क्या तू महत्वाकाक्षाका दूध पियेगा? दूधका नाम सुन कर अमीरने बाल स्वभावानुसार पीने की इच्छा प्रकट की। उस महात्माने शराब का प्याला भर कर अपने होठो से लगाकर अमीरको दिया। अमीरने कभी शराब देखी भी नही थी। जैसे ही उसने प्याला अपने होठोंसे लगानेके लिए ऊँचा उठाया कि शराबकी गध नाकमें पहुँची और प्याला जमीन पर फेंक कर उसने महात्माको सैकडो गालिया दी। उस महात्माने उसकी गालियोकी ओर ध्यान न दे कर उससे कहा "अरे मूर्ख, तेरी आशाओ और महत्वाकाक्षाओका प्याला तेरे हाथमें था जिसको तूने नासमझीसे फेंक दिया, जा तेरे भाग्यमें यही था।" अमीर उस समय तो कुछ समझ नही सका किन्तु बडे होने पर इस घटनाका स्मरण कभी उसे सुखद प्रतीत नही हुआ।

इस प्रकार अमीर अपनी बाल्यावस्था व्यतीत कर बड़ा हुआ। जब यह १५ वर्षके लगभग हुआ होगा, इसने अपनी महत्वाकांक्षाको पूर्ण करने और भाग्यकी परीक्षा करनेका विचार किया। इससे इसके माता-पिता अत्यंत स्नेह रखते थे और इसे कहीं जाने नहीं देते थे, अत. माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त किये विना ही यह घरसे निकल पडा। यह घरसे लखनऊ गया, फिर वहाँसे मेरठ आया। यहाँ गुलाम कादिरखाकी सेनामें सम्मिलित हो गया। किन्तु इच्छानुसार सफलता प्राप्त नहीं हुई। इसने यह समझ कर कि विना माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त किये ही आनेसे सफलता नहीं मिली है, वह वापिस घर लौट कर आ गया। अब यह यौवनावस्था प्राप्त युवक २० वर्षका हो चुका था—इस समय इसका शरीर गठीला और मास-पेशियां दृढ थीं। शरीर की ऊँचाई मध्यम थी। आकृतिसे साहस और वीरत्व प्रकट होता था, इस कारण मुखाकृति अत्यंत प्रभावोत्पादक थी। इसके साथ ही शरीर और मुखाकृतिसे अत्यत भाग्यशाली प्रतीत होता था। महत्वाकाक्षाएँ इसकी मुखाकृति पर अपना घर वनाये हुए थीं। इस प्रकारका व्यक्ति घर कब तक रह सकता था। एक दिन अपने माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त कर कुछ आदमियों सहित घरसे जीविकोपार्जनार्थ चल ही तो पड़ा। घरसे निकल कर घूमता हुआ मालवे पहुँचा, वहाँ सेनामें भरती हो गया। यहाँ कुछ दिन रहनेके बाद यह युसुफखां रिसालदारके पास आया। रिसालदारने इसे भाग्यशाली देख कर अपने पास रख लिया। यहाँ कई दिन रहनेके पश्चात् रिसालदार और अमीरखां दोनो जोधपुरके महाराज विजयसिंहके पास आये। इन्हीं दिनों रिसालदार अपनी पुत्रीका विवाह अमीरके साथ करना चाहता था, किन्तु अमीरको यह अच्छा नहीं लगा, अत' उसका साथ छोड़ कर अमीर ईडर चला आया, दो मास यहाँ रह कर यह बडौदा आ गया। इस समय इसके पास ३००-४०० आदमी एकत्रित हो चुके थे। इन आदमियों सहित इसने गायकवाडकी नौकरी कर ली। यहाँ भी यह अधिक दिन नहीं ठहर सका, घूमता हुआ सूरत पहुँचा, जहाँ गायकवाडके पंडितसे इसका परिचय हुआ जो सूरतमें चौथ वसूल करता था। अंग्रेज व्यापारियोंके कारण चौथ वसूल नहीं हो रही थी, अत. अमीरने सहायता करके चौथ वसूल करा दी। यहाँसे अमीर भोपाल चला आया। भोपालमें इस समय छत्तेखांकी सन् १७९४ ई मृत्यु हो जाने से भिन्न भिन्न दलो द्वारा सेना एकत्रित की जा रही थी। अमीर अपने आदमियो सहित नवाब हयात मुहम्मदखांके पास नौकर हो गया। यहीं पर इसका परिचय गोशमुहम्मद फैयाजउल्लाखा बंगस, मुरीद मुहम्मदसे हो गया। इसने यहाँ कई काम किये, जिससे इसकी प्रसिद्धि हो गई। यहाँ एक वर्ष रह कर अमीर रघुगढ़के राजा जयसिंह और दुर्जनसाल खींचीके पास आगया। इस समय यह खींची राजा अत्यन्त कठिनाईमें थे, क्यों कि सेंधियाने किसी वातसे विगड कर अपने यहाँसे इनको निकाल दिया था। ये लोग दस्युवृत्तिसे अपना निर्वाह कर रहे थे। इन्ही दिनोंमें राजा रघुगढ और सेंधियामें युद्ध आरम हो गया। अमीरने खींचियोंकी सहायता की जिससे सेंधियाको पीछे हटना पड़ा; किन्तु खींचियोंके एक सरदारसे अमीरका झगड़ा हो जानेके कारण, अमीर

यहाँ भी अधिक नही ठहर सका। यहाँसे अलग हो कर मरहठा सरदार बालाराव इगलियाके पास, जो भोपालका प्रबधक था, आ कर नौकर हो गया। अमीरको फतहगढके किले और नवाब गोशमुहम्मदकी रक्षाका भार सौंपा गया। किन्तु मुराद मोहम्मदकी मृत्यु हो जाने और बालाराव इगलियाका वहाँसे सबध टूट जानेके कारण, अमीरका सबध भी फतहगढसे छूट गया। कुछ दिन अमीर इस प्रयत्नमें रहा कि बजीरखाके यहाँ नौकर हो जावे, परन्तु सफलता नही प्राप्त हुई।

अमीरखाने अब तक अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी। इस ख्यातिने ही अमीरके भाग्यको जसवतराव होल्करके भाग्यसे जा मिलाया। इसी समय अर्थात् हिजरी सन् १२१४, तदनुसार १७९९ ई से अमीरखा और जसवतराव होल्कर तब तक साथ साथ रहे, जब तक कि अग्रेजोने इन्हे अलग अलग होनेके लिए विवश नही किया। इस समय जसवतराव होल्कर बडी विपत्तिमें था। इसके बडे भाई काशीरावने सब कुछ छीन कर इसे राज्यसे बाहर निकाल दिया था। होल्करने अमीरसे प्रतिज्ञा की कि जैसे जैसे प्राप्ति होगी उसका आधा भाग कर लिया जायेगा। सर्वं प्रथम काशीरावसे ही इनका युद्ध हुआ, जिसमें इनकी विजय हुई। जसवंतराव अब सम्पूर्ण मालवेका स्वामी हो गया।

यद्यपि अमीरखां जसवतरावका नौकर था किन्तु उसने अमीरके साथ कभी भी नौकरो जैसा व्यवहार नही किया। आपसमें इनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण था। यहाँ तक कि अमीरखा हर काम करनेमें स्वतत्र था, जिसे चाहता सेनामें रख लेता था, जिसे चाहता उसे निकाल देता था। इस स्वतत्रताके साथ साथ इसे कष्ट भी बहुत उठाने पडते थे। रुपयेकी तगीके कारण जब सेनाको वेतन नही मिलता था तो वह स्थान स्थान पर लूटमार किया करती थी, और जब इस प्रकार भी आवश्यकताकी पूर्ति नही होती थी, तो नवाब अमीरखाको सेना अत्यन्त दुःखी करती थी। यहाँ तक कि उसे तोपके मुहसे बाध कर देर तक धूपमें रखती थी। लेकिन समय पडने पर यही सेना अपने स्वामीके लिए अपने प्राणो की आहुती देनेमें जरा भी पीछे नही हटती थी। होल्करने इस सेनाके खर्चके लिए अमीरको कई गाव जागीरमें भी दे रखे थे, किन्तु इससे उसका व्यय अधिक ही था। इस कारण अमीरखाकी यह सेना राजस्थान, मालवा, बुदेलखड आदि स्थानो पर बराबर दस्युता किया करती थी। धीरे-धीरे यह दस्युओका दल बढता ही गया, यहाँ तक कि इस दलमें ३५,००० हजार व्यक्ति और ११५ तोपें एकत्रित हो गयी थी। अस्तु।

अमीरखाके इस प्रकार स्वतत्र होने तथा होल्करके सम्मान सहित अमीरके साथ व्यवहार करनेसे, होल्करके कई एक सरदार अमीरसे अप्रसन्न रहते थे। ये लोग होल्करके कान भरने लगे, जिससे उसके हृदयमें सदेहने घर कर लिया। यह बात अमीरसे गुप्त न रह सकी। सुतराम् अमीरखाने एक दिन समय पा कर एकान्तमें होल्कर को पकड कर

और उसके कमरवदसे एक छोटी कटार निकाल कर कहा–"मैं इस समय एकाकी हूँ, यदि मेरे मार डालनेमे तुम्हारी भलाई होती हो तो यह छुरी लो और मुझे मार डालो, जरा भी विलव न करो।" इस पर होल्कर लज्जित हो कर कहने लगा कि ऐसी कोई भी वात नही होगी, जिससे तुम्हे कष्ट हो। इसके पश्चात कभी भी ऐसी कोई घटना नही हुई। तवसे यह वरावर मिल कर कार्य (दस्युता) करते रहे।

उसी समयमें महादजी सिंधिया पूनासे उज्जैन आया था। होल्करकी सेनाने इसे लूट लिया। इस पर महादजी सिंधिया चितौडमे लखवाके पास चला गया। होल्कर और लखवामे शाहजहापुरके किलेमें युद्ध हुआ जिसमें लखवा हार कर भाग गया। उवर दौलतराव सिंघियाका अग्रेज सेनापति कुलूससाहव दक्षिणसे सिरौंजमें आया। सिरौंज अमीरखा को होल्करकी ओरसे जागीरमें मिला हुआ था। अत. वहाँ अमीरखाकी ओरसे एक प्रववक अविकारी युसुफखा रहता था। उसने अमीरको कुलूस साहवके आनेकी सूचना भेजी। अमीरखाने सिरौंज पहुँच कर उसे वहाँसे भगाया। फिर नागपुरके राजाको ३॥ घटेके युद्धके पश्चात् देवरीके निकट परास्त किया। इवर फिर दौलतराव सिंधिया, वलवत राव वोकडा और चौरस साहव जिसके साथ बीस हजार पिडारी थे, उज्जैन आये। होल्करके पास इस समय सेना कम थी, अत वह केसूरी चला गया और वहा उसने उन दो सेनाओको लूट लिया जो वलवतरावकी सहायताके लिए दक्षिणसे आई थी। फिर अमीरखां को चौरस साहव आदिके साथ युद्ध करनेको बुलाया। होल्कर और अमीरखाने मिल कर उन्हें भागनेके लिए विवश कर दिया। इसके पश्चात् दोनोने मिल कर स्थान स्थान पर वडी लूटमार की। कुछ दिन साथ रह कर फिर अलग अलग हो कर काम करने लगे। सन् १८०५ ई. मे जसवतराव होल्कर और अग्रेजोंके वीच युद्ध हुआ। यह युद्ध डीगमें हुआ था, जिसमें होल्करको परास्त होना पडा और भरतपुरमें शरण लेनी पडी। लार्ड लेकने होल्करका पीछा किया और भरतपुरके राजा रणजीतसिंहको कहलवाया कि जसवतराव को उन्हे सौंप दे। किन्तु राजा रणजीतसिहने जसवतरावको देनेके लिए इनकार कर दिया इस पर भरतपुरका किला घेर लिया गया। इस समय अमीरखा भी होल्करकी सहायताके लिए आ गया था। उसने अग्रेजोंके सिपाहियोको हैरान करना आरभ किया। उसका विचार था कि जो सहायता और रसद कर्नल मेरीके साथ अग्रेजोके लिए आती है उसे भरतपुर न पहुँचने दी जावे, किन्तु वह सफल नही हो सका। इस पर राजा रणजीतसिहने इन्हे सलाह दी कि एक व्यक्ति तो यहाँ भरतपुरमें रहे और दूसरा शत्रुके देशमें जा कर लूटमार करे। जसवंतरावका जानेका साहस नही हुआ क्यो कि वह फरुखावाद और डीगके युद्धमे हार चुका था। अत अमीरखा वहाँमे रुहेलखडकी ओर चला। जैसे ही अमीरखा रवाना हो कर चला, जनरल स्मिथने अपने सवारो और तोपखानेके साथ उसका पीछा किया। अमीरखा आगरा, फरुखावाद आदिको लूटता हुआ मुरादावाद पहुँचा। वहाँ अग्रेज कुछ सिपाहियोंके

साथ पडे हुए थे। दो दिन तक वे उससे लडते रहे। इतने हीमें जनरल स्मिथ भी जा पहुँचा। जनरल स्मिथके पहुँचनेसे अमीरखा अपनी सेनाको ले कर पहाडोकी ओर भागा, जनरल भी उसके पीछे पीछे चला। अफजलगढके पास दोनोका युद्ध हुआ किन्तु अमीरखा ठहर न सका। युद्धस्थल छोड कर रूहेलखडके गावोको लूटता हुआ गगापार हो गया। इस समय इसके साथ केवल १०० सिपाही रह गये थे। इसलिए फिर इसने सेना एकत्रित की और जसवतरावके पास चला आया। इधर लार्ड लेकने जसवतरावको सधि कर लेनेके लिए विवश कर दिया। जब सधि होने लगी तो लार्ड लेकने जसवतरावसे यह कहा कि इस सधिपत्र पर अमीरखाके भी हस्ताक्षर होने चाहिए। अमीरखाको यह स्वीकार नही था। इस पर जसवंतरावने अमीरखाकी बहुत खुशामद की और कहा कि मुझे इस समय एक करोड बीस लाख मिला है, जिसमेंसे मै आधा दे दूगा। इस समय ३० लाखके गाव देता हूँ, वाकी दक्षिणा और गाव प्राप्त कर दे दूगा। इस पर बडी कठिनाईसे अमीर राजी हुआ। उसने अपने प्रतिनिधि भेज कर जसवतरावसे गावोका लेखा मगवा लिया। जसवतरावने नवाबकी इच्छानुसार गवर्नर जनरलसे टोक, अलीगढ, मालवेसे सिरौंज और पडावा, मेवाडसे नीमाहेडा, खीचीवाडेसे छवडा नवावको खर्चमें लिख दिये।

अमीरखाको अव रहनेके लिए, अच्छा स्थान मिल चुका था और उसकी अवस्था भी वढ चुकी थी। अत उसने मुहम्मद अय्याज खाकी पुत्रीसे सन १२२१ हिजरी तदनुसार सन् १८०६ ई में अजमेरमें विवाह कर लिया। इस स्त्रीसे हिजरी १२२२ (सन् १८०६) में इसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम वजीर मुहम्मद रखा गया। इस समय तक इसका (अमीरखाका) दल वहुत वढ गया था। उसका आतक चारो ओर छाया हुआ था। कुछ दिन वाद अमीरखाको जयपुरके राजा सवाई जगतसिंहने जोधपुरके राजा मानसिंहसे युद्ध करने के लिए अपनी सहायतार्थ वुला लिया।

घटना इस प्रकार हुई कि उदयपुरके राणा भीमसिंहकी कन्या कृष्णा कुमारी अत्यन्त सुन्दर थी। उसका वाग्दान (सगाई) राणाने जोधपुर नरेश भीमसिंहके साथ किया था। जव भीमसिंहका निसतान स्वर्गवास हो गया और जोधपुरकी गद्दी पर मानसिंह बैठे तो राणाने कृष्णा कुमारीका विवाह उसके साथ करना चाहा। इस पर मानसिंहने उत्तर दिया कि कृष्णा कुमारीकी सगाई उसके पिता भीमसिंहके साथ हुई थी, अत माताके साथ मै विवाह नही कर सकता। इसलिए राणाने जयपुरके महाराज जगतसिंहसे सवध करना चाहा। महाराज जगतसिंहने जोधपुर नरेश महाराज मानसिंहसे पूछ कर और उनके इनकार होने पर विवाह सवध स्वीकार कर लिया।

तत्कालीन समयमें पोकरणके ठाकुर सवाईसिंह वहुत ही प्रभावशाली एव विख्यात व्यक्ति थे जिनके पितामह देवसिंहको महाराजा भीमसिंहने मरवा दिया था। देवसिंहके

दो पुत्र थे। सवलसिंह और श्यामसिंह। सवलसिंहके पुत्र सवाईसिंह पोकरणके स्वामी हुए और श्यामसिंहने जयपुरमे गीजगढकी जागीर प्राप्त की। महाराज मानसिंह -जब जोवपुरकी गद्दी पर वैठे, उस समय सवाईसिंह अपनी कन्याका विवाह जयपुरके महाराज जगतसिंहसे करनेकी तैयारी जयपुरमें कर रहे थे। महाराज मानसिंहने सवाईसिंहसे कहलाया कि आजतक राठौडो ने जयपुरवालोको कभी डोला नही दिया है। आप डोला दे रहे हो इससे राठौडोका वहुत ही अपयश होगा। सवाईसिहने, जो मानसिंहसे पहिलेसे ही इस वात पर खिजा हुआ था कि उमकी विना सम्मतिके ही जोवपुरकी गद्दी पर वैठ गया था, उत्तर भिजवाया कि मेरे काका जयपुरमें ही रहते है, वहीसे यह विवाह होगा परन्तु यह कहा तक उचित है कि जोवपुरकी मागको जयपुर वाले व्याह ले जावे। मानसिंहको यह वात वहुत चुभी और उसने उदयपुरके राणाको विवाहके लिए कहलाकर वह स्वय विवाहकी तैयारी करने लगा। इवर जयपुरमे भी विवाहकी तैयारी हो रही थी। उदयपुरके राणा जयपुरसे सवघ स्थापित कर देनेके कारण कृष्णा कुमारीका विवाह जयपुर नरेशसे ही करना चाहते थे। इस कारण इस युद्धका श्रीगणेश हो गया।

इवर पोकरण ठा. सवाईसिंहने प्रचारित किया कि स्वर्गीय महाराज भीमसिंहकी राणीसे धौकलसिंह नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ है जो खेतडीमें पोषण पा रहा है। वही जोधपुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी है। साथ ही जयपुर नरेश जगतसिंहको कृष्णाकुमारीसे विवाह करनेके लिए उत्साहित किया और आश्वासन दिया कि समय पडने पर हम सब राठौड आपके साथ है। हम केवल यही चाहते है कि भीमसिंहका पुत्र धौकलसिंह ही जोवपुरका स्वामी वने।

ऊपर लिखा जा चुका है कि राजस्थानमें अमीरखा और उसका दल अपने कार्य कलापोके कारण भयकरतामें अति प्रसिद्ध हो चुका था। यह दल पैसेके लिए सव कुछ करनेके लिए हर समय तैयार रहता था। जो अविक रकम देता था उसीकी ओर हो जाता था। इस कारण जयपुर और जोवपुर नरेश दोनोने अच्छी रकम देनेकी प्रतिज्ञा कर अमीरखाके दलसे सहायता प्राप्त करनी चाही। इसमे जगतसिंहको सफलता मिल गई। और मानसिंहको किसी भी ओरसे सहायता प्राप्त न हो सकी। जगतसिंहके साथ इस युद्धमें अमीरखाके अतिरिक्त हैदरावादके मीरमकदून वाजिदखा, खदावक्स, मीर शदुद्दीन, मीर मरदान अली, नवाव खाजहाँ, वीकानेर नरेश सुरतसिंह और पोकरणके ठा सवाईसिंह सम्मिलित हुए थे। परवतसर पर जहाँ जयपुर और जोवपुरकी सीमाएँ मिलती है, ये लोग एकत्रित हुए। उवरसे महाराज मानसिंह इन्हे रोकनेके लिये साठ हजार सेना सहित आगे वढे। दोनो सेनाओमे भयंकर काटमार हुई, और अतमें सवाईसिंहके उद्योगसे, राठौड़ी सेना मानसिंहका साथ छोड कर, जगतसिंहकी ओर मिल गई। इससे मानसिंह किंकर्त्तव्य विमूढ हो गया। जैसे तैसे करके वचे हुए व्यक्तियोको साथ ले जोवपुरकी ओर रवाना हुआ। महाराज जगतसिंह अव

विवाहार्थ उदयपुर जाना चाहते थे, किन्तु सवाईसिंहके अनुरोधसे पहिले मानसिंहसे निबट लेना उचित समझ कर, जोधपुरकी ओर बढे। मेडताके पास फिर राठौडी सेनासे मुठभेड हुई। और वहा विजय प्राप्त कर कुछ जमीन बीकानेर नरेशको दी। अब मानसिंहके पास केवल जोधपुर और जालोर ही रह गये थे। महाराज जगतसिंहने पीपाड पहुँचकर मारवाडकी २२ तोपें और प्राप्त की। मडोवर और जोधपुरके निकट सूर्यास्तके समय महाराज जगतसिंह धौंकलसिंहके डेरेमें गये। वहाँ धौकलसिहने महाराजका अच्छा आदर-सत्कार किया। वहा दरवार हुआ, जिसमे बीकानेरके सुरतसिंह भी थे। धौंकलसिंहको जोधपुरका स्वामी घोषित कर आगे बढे जहाँ सिंघी रामचन्द्र बक्सी और अमीरखाकी सेनाएँ इनसे आ कर मिल गई। उसी दिन ये लोग सायकाल जोधपुर नगर अधिकृत करनेवाले थे। अत इन्होने विजय घोषित कर दी और धौंकलसिंहके नामसे १६ अप्रैल सन् १८०७ ई को दुहाई फेर दी और जोधपुर आ कर घेरा डाल दिया।

अब तो जोधपुर नरेश बडी कठिनाईमें पडे। एक बार फिर गुलामखा अफगानके द्वारा अमीरखासे सहायताकी याचना की, किन्तु अमीर सहायता देनेमे साफ इनकार कर गया। घेरा कई दिन तक चलता रहा। राठौडोने बडी वीरता पूर्वक सामना किया। अतमें तोपोंके गोलोंसे किलेका कुछ हिस्सा गिरा दिया गया। उधर किलेकी खाद्य-सामग्री दिन दिन कम होती जा रही थी। ऐसी परिस्थितिमें महाराज मानसिंहने ठा सवाईसिंहको कहलवाया कि, "राठौडोकी इज्जत अब आपके हाथ है। धौंकलसिंह अततोगत्वा राठौड ही है। अत मारवाडके दो हिस्से करके एक हिस्सा धौंकलसिंहको दिया जावे, जिसकी राजधानी नागोर रहे, दूसरा अर्द्ध भाग मेरे लिये रहे जिसकी राजधानी जोधपुर रहे।" इस पर सवाईसिहने प्रत्युत्तर दिया कि आप किला परित्याग कर दीजिए और अपने लिए एक अच्छी जागीर ले लीजिए। इस पर मानसिंहने "साका" करके वीरोकी तरह युद्धक्षेत्रमें प्राणोत्सर्ग करनेका विचार किया। इसी समय इद्रराज सिंघी और भडारी गगारामने जो किसी कारणावश किलेमें कैद थे—मानसिंहको कहा कि अब यह समय हमारी स्वामिभक्तिका है, आप हमारा विश्वास कीजिए और हमें छोड दीजिये। हम आपको दिखा देंगे कि हम क्या कर सकते है? अतमें ये दोनो कर्मचारी छोड दिये गये। इन्होने किलेसे बाहर निकल कर मरहठा सरदारो द्वारा अमीरखासे कहलवाया कि यदि आप हमारी सहायता करो तो हम आपको ४ लाख रुपया सालाना और आपकी सम्पूर्ण सेनाका खर्चा देंगे तथा आपको एक अच्छी जागीर भी देगे। इस पर अमीर सिंघी इन्द्रराजसे बातचीत करनेके लिए घेरेसे हट गया और मरहठा सरदारोंसे मिल कर, मारवाडको लूटता हुआ अरक्षित जयपुर पर आक्रमण कर दिया।

जब यह बात महाराज जगतसिंहको ज्ञात हुई तो प्रथम तो वह बहुत घबडाया, फिर तुरन्त ही बक्सी शिवलालको अमीरके विरुद्ध भेज दिया। शिवलालने आगे बढ कर अमीरकी

सेनाको फागीके पास परास्त किया। तत्पश्चात् अपनी सेनाको छोड कर किसी कार्यवश जयपुर चला आया। जव अमीरखाको अपनी हारका हाल ज्ञात हुआ तो उसने मुहम्मदखा और राजा वहादुरको जो ईशरदाको घेरे हुए थे, वुला लिया और वक्सी शिवलालकी सेनाकी ओर वढे। रास्तेमे इन दोनो सेनाओकी टक्कर हुई। कई स्थानो पर नवावकी सेना परास्त हुई, किन्तु वर्षाकी अधिकताके कारण कछवाही सेनाको सागानेर तक पीछे हटना पडा और नवावकी सेनाने उसका पीछा किया। यहासे जयपुर शहर सिर्फ ५ कोस दूरी पर था। शहर जयपुर पर चढाई करना नवावके लिए सरल नही था। अतः नवाव अमीरखा सैंधिया और राठौड़ोंके साथ मारवाड़की ओर चला।

इधर अभी तक अम्वाजी इगलिया और स जगतसिंह जोधपुर पर घेरा डाले हुए थे, जव कि अन्य सरदार अमीरखाकी तरह घेरा छोड़ कर जा चुके थे। अत जगतसिहने भी घेरा उठा लेनेका विचार कर धौकलसिंह और सवाईसिहको नागौर ठहरनेके लिए कहा। और उनकी रक्षार्थ अन्य लोगोको वहा छोड़ा। साथ ही कुछ सेना शेखावाटीमें भी सहायतार्थ छोडी और आप स्वयं जयपुरकी ओर रवाना हुआ। इस प्रकार यह घेरा उठाया गया। इससे मानसिंह वड़ा ही भाग्यशाली प्रमाणित हुआ जो विना किसी उद्योगके घेरेसे निकल गया।

अव रही कृष्णा कुमारीके विवाहकी वात, उसका हाल यह है कि अमीरखांने पहिले जगतसिंह और सवाईसिहसे सच्ची मित्रता प्रदर्शित की, तत्पश्चात् पैसेके लोभमे इनका साथ परित्याग कर दिया और मानसिंहसे जा मिला। लेकिन, उसके साथ भी अपनी कुटिलताका परिचय दिया। उसने सवाईसिंह, इद्रराज सिंघी और महाराजा मानसिंहके गुरु देवनाथकी हत्या की, जिससे मानसिंहको अत्यन्त दुःख हुआ। अतमें उसने यह सोचा कि कृष्णा कुमारी रहेगी तो फिर झगडा होना सभव है, इसे समाप्त कर दिया जाना ही उचित है। अत उसने उदयपुर जा कर राणा भीमसिंहको कृष्णा कुमारीकी हत्या कर देनेके लिये विवश कर दिया। कृष्णा कुमारीके तीन वार हलाहल पी लेने के पश्चात् सदाके लिए झगडेकी सम्भवना जाती रही। सवाईसिंहकी हत्याके पश्चात् धौंकलसिंह भाग कर वीकानेरकी ओर चला गया। इस प्रकार इस युद्धका अत हुआ।

ऊपर लिखा जा चुका है कि अमीरका दल वहुत वढ गया था। उसकी सेनामें कई रिसालदार थे, जो स्थान स्थान पर रियासतो और ठिकाणे वालोसे अपनी सेनाका व्यय वलात् लेते थे और समय असमय पर जनताको लूटते रहते थे। इस पर भी दलका व्यय नही चलता तो वे मिल कर अमीरखाको तग करते थे। एक समय जोधपुर वाले युद्धके पश्चात् खुदावक्स, मुहम्मद सईदखा, कुतुवुद्दीनखा, फैजुल्लाखा, मुनीरखा, नजीवखा, खान मुहम्मद दाराशाहखा, कमरुद्दीनखा, और अन्य रिसालदारोने मुहम्मदखाके साथ षड्यन्त्र करके अपने वेतनके लिये विद्रोह उत्पन्न किया। उस समय अमीरखा अपने परिवारके साथ डुमकोलाके

किलेमें था, जो उसने कुछ दिन पूर्व हस्तगत किया था। इन विद्रोहियोने वहाँ जा कर घरना दिया। अमीरखाने राजा बहादुरलालसिंहको, जो उदयपुरमें था, अपनी सेना सहित इन उपद्रवियोको शात करनेके लिये बुलाया, किन्तु इसने उत्तर भिजवाया कि आजकल मै महाराणाकी सेवामें हूँ, विना उनकी आज्ञाके नही आ सकता। अत अमीरखाने महाराणाको लिख कर उसे बुला लिया। वह वहासे सीधा जयपुरमें नवाब मुख्तारुद्दौलाके पास आया, उसने फिरसे उसकी (नवावकी) अध्यक्षतामें सेनाकी बागडोर सभाली।

जब अमीरखाको ज्ञात हुआ कि उसकी रक्षक सेना जमशेदखा, मुहम्मद सईदखा आदिके साथ इन उपद्रवकारियोंसे अलग है और अभी तक शात है तो उसने सोचा कि इनके सामने झुकनेके स्थान पर इस सेनाके सामने प्रकट होना अति उत्तम होगा। इस विचारके अनुसार वह किलेसे वाहर आया और सबको पृथक पृथक बुला कर कहा कि यदि आप यह समझते हो कि मैंने अपने लिए धन एकत्रित करके छिपा रखा है तो आप तलाश करके कोई भी वस्तु अपने अधिकारमें कर सकते हो। किन्तु इन अफगानोंने उसका जरा भी विश्वास नही किया और उसे अपने अधिकारमें पा कर उसके साथ अत्यन्त कुत्सित व्यवहार करने लगे। अमीरखाने यह देख कर अपने पुत्र वजीरुद्दौलाके साथ अपने परिवारको द्वाररक्षकोकी अधीनतामें टोक भेजा दिया और आप स्वय उन लोगोंके साथ किशनगढकी सीमामें आया। वहा खूब लूटमार की और ७० हजार रुपया सेना खर्चका राजासे प्राप्त किया। इसी प्रकार शाहपुरा, आदिसे सेनाव्यय प्राप्त कर तत्पश्चात् बूदीकी सीमामें प्रवेश किया, फिर समदी, डूगर और निनवनमें आया। इस स्थान पर कर्नल मोहनसिंह और मुहम्मद अय्याजखाके रिसालेसे मिला, जो तत्काल ही बूदीसे आये थे। अमीरखाने बूदीसे भी सेना-व्यय मागा और लेनेके बाद जयपुर राज्यकी सीमामें प्रवेश किया। टोरडी और चादसेनके निकट आकर उणियारा और ईशरदासे भी उसी प्रकार अपनी माग रखी तथा निवाईके पास आ कर डेरा डाला। अब उसका विचार जयपुरके साथ द्रव्यके लिए आवश्यक समझौता करनेका हुआ। इसके लिए मुख्तारुद्दौलाको सेना सहित बुलाया था जो उस समय हिण्डौनमें था। उसको पत्र लिख-कर आप मोहनसिंहकी सेना सहित चाकसूमें आया। इस स्थान पर अमीरखाने, मेघसिंह आदि जयपुरके अन्य अधिकारियोसे मिल कर तै किया कि १२ लाख रुपया उसको (अमीरको) हीराचद सेठके द्वारा मिल जाय जो मुख्तारुद्दौलाकी सेनाके साथ है। अमीरखा यह समझौता कर किशनगढकी ओर बढा। उधर यह समाचार मुख्तारुद्दौलाने सुने कि जयपुरके साथ इस प्रकार बातचीत निश्चित हो चुकी है तो वह वापिस लौट गया। जयपुरके भूतपूर्व दीवान राव चतुर्भुजके बहकानेसे शेखावाटीमें नवलगढ और खेतडीके विरुद्ध गया। इसी बीचमें महाराज जगतसिंहने किसी कारणवश मेघसिंहको दीवानपदसे हटा दिया। उसी समय अमीरखाने अपने पुत्रको सपरिवार टोक छोड कर शेरगढ चले जानेकी आज्ञा भेजी और स्वय किशनगढसे रवाना हो कर तूजरमें आ कर बाडीके निकट डेरे डाले। इधर मुख्तारुद्दौलाने नवलगढ़ और खेतडी तथा शेखावाटीके अन्य ठिकाणोंसे सेना-व्यय प्राप्त कर अमीरके

पास आ कर पडाव किया। अमीरखाँ अभी तक अफगानोंकी दुखदाई नीतिके कारण उनके घेरेमें ही था। इस प्रकार आठ मास व्यतीत हो चुके थे। अमीरखाने, दस लाखकी हुंडी जो अभी जोधपुरसे प्राप्त हुई थी, उन्हे दे कर अपना पीछा छुडाया और खुशीमें अपने डेरेमें आ कर सलामीकी तोपें दगवाई। जयपुरमें जब इन तोपोंकी आवाजकी सूचना महाराज जगतसिंहको मिली तो वे बहुत चकित हुए। प्रातःकाल जब सर्व घटना ज्ञात हुई तब महाराजने वोहरा दीनारामको अमीरखाके पास आवश्यक समझौतेके लिए भेजा। अमीरखाँ कुछ समय तक वहीं ठहरा रहा। अपने सेना व्ययको मिलता न देख कर अपनी सम्पूर्ण सेना सहित सांगानेर आया। सागानेरके पास जोधपुरकी सेना थी उस पर आक्रमण कर भगा दिया। अब वह वोहरा दीनारामके बागके (आजका गांधी नगरके) निकट, आ गया। जब यह समाचार जयपुरके अधिकारियोंने सुने तो वे बहुत घबराये और उन्होने दस लाख रुपया बोहरा दीनारामके द्वारा, जो तोजारसे अमीरखाके साथ था, देना स्वीकार किया। जिसमेंसे ६ लाख रुपया तो अमीरखाने मुख्तारुद्दौलाकी सेनाका बचा हुआ खर्चा रखा, बाकी रुपया जमशेदखा, दाराशाहखा और खैरमुहम्मदखा तथा अन्य स्वतंत्र रिसालदारोंके लिए रखा। इस प्रकार भाग करनेका कारण यह भी था कि जब अमीर घेरनेमें था उस समय यह लोग अत्यन्त ही स्वामिभक्त रहे थे। अमीरखाने इस रुपयेको प्राप्त कर लेनेका कार्य मुख्तारुद्दौला पर रखा।

इस प्रकार सब कार्यवाही कर अमीरखा लावाकी ओर अग्रसर हुआ। वहाँ उसका विचार पहुँचते ही आक्रमण कर देनेका था, किन्तु मुख्तारुद्दौलाने समझाया कि इस प्रकार आक्रमण करनेसे कुछ भी हाथ नहीं आवेगा। अतः उसने दाराशाहके साथ अपनी सेनाको, मेवाडमें सेना-व्यय एकत्रित करनेके लिए भेजी और आप स्वयं दो हजार घुडसवारो, जमशेदखा और अफरीदियो सहित वहीं ठहर कर लावावालोंसे सेना-व्ययकी माग करने लगा। लावेके किले पर दो तीन बार आक्रमण भी किये। किन्तु किलेकी सुदृढ दीवारो और खाईकी गहराईके कारण ये सफल नहीं हुए। बहुत समय ऐसे ही व्यतीत हो गया। इसी बीचमें राय दाताराम, मुख्तारुद्दौलाकी सेनाके साथ जोधपुर भेजा गया, वह महाराज मानसिंहसे १० लाख रुपया प्राप्त कर आ रहा था। उसके लौटनेके समाचार जसवतराव होल्करके डेरेमें पहुँचे, उस समय 'अमीरनामे'का लेखक मुंशी भुसावनलाल (शाहदान कवि) भी वहा उपस्थित था, जो उस समय राजा मोहनसिंहकी सेनामें कार्य कर रहा था। उसने (शाहदान-कविने) इस घटनाकी स्मृतिमें कुछ कविताएँ रचीं। इसी समय सन् १२२७ हिजरीमे (ई सन् १८११) पिंडारी करीमखा, जिसके पास पिंडारी दस्युओका बहुत बड़ा दल था, दौलतराव सेंधियासे हार कर, बचे हुए सिपाहियोंके साथ अमीरके पास आया। इस पर सेंधिया पर, राजाराणा जालिमसिंह, होल्कर 'बाई' (जसवतरावकी विधवा) और अंग्रेजोने मिलकर, अमीरको इस दस्यु सरदार करीमखाको पकड कर सौंप देनेके लिये बहुत दबाया था। अमीरने इस बातको अपने गौरवके अनुकूल न समझ कर इस पिंडारे सरदार और उसके साथियोको

अपने पास रखा और सेंधिया आदिको उत्तर भिजवाया कि वह (पिंडारा सरदार) इस समय उसके पास है, इसलिये इस तरफसे कोई चिन्ता नही करनी चाहिए। यद्यपि अमीरखाको उसके वहुतसे रिसालदारोने समझाया कि पिंडारेको पकड कर सौंप देना चाहिए, तथापि उसने उन लोगोकी एक भी न सुनी।

अव हम फिर 'लावा' की ओर आते हैं। जयपुरसे जो रुपया तय हुआ था वह ठीक समय पर मुस्तारुद्दौलाको मिल चुका था। इस पर जमशेदखा और दूसरे रिसालदारोने जिनके पास सेना थी, समय पा कर नवाव मुस्तारुद्दौलाको पकड लिया और उसके सीनेसे तलवार लगा कर सौगध खाई कि जव तक उन्हे पूरा रुपया न चुका दिया जावेगा, तव तक उसे न छोडा जावेगा। सयोगवश उसी समय, जिस समय यह उपद्रव हो रहा था, अमीरखा भी नवाबके डेरेकी ओर जा निकला। उस समय दिनके ३-४ वजेका समय था। वहाँ पहुँच कर जव उसे सव घटना ज्ञात हुई तो उसने विचार किया, कि यदि लोग उसे इस समय इस डेरेमें देख लेगे तो सेनामें संदेह करेगे, कि यह उपद्रव उसीने खडा किया है। अत वह चुपचाप अपने डेरेमें न लौट कर लोगोकी निगाहसे निकल गया। वह फैजुल्लखा वगसके डेरेमें चला गया। जव तक यह उपद्रव शात न हुआ तव तक वही रहा। जैसी कि अमीरखाने आशका की थी, मुस्तारुद्दौलाकी अध्यक्षतामे जो सिपाही थे उन्होने यह समझ कर कि अमीरने ही उनके सरदारके साथ यह गडवडी की है, उसके डेरेको घेर लिया और मोर्चा-वदी कर दी। और यह कहा कि जव तक उनके स्वामी मुस्तारुद्दौलाको न छोडा जावेगा वे अमीरको अपने अधिकारमें रखेंगे। यह समझ कर कि अमीर उनके अधिकारमे है, रात भर आक्रमण करते रहे। उवर अफगान मुस्तारूद्दौलाके सीनेमें तलवार लगाये, वंदी बनाये रहे। अतमें अमीरके मुशी राय दाताराम, मुस्तारुद्दौलाके भानजे यारखा और सेठ हीराचदके गुमाश्ते जवाहरसिहकी जमानत पर, उसको छोडनेको उन्हे राजी किया गया। अमीरने रायको वुला कर कहा कि जब तक वह मुस्तारुद्दौलाके धरना देना स्वीकार न करेगा तब तक उन दोनोको न छोडा जावेगा। उसे आशा थी कि इस प्रकार राय उसका (मुस्तारुद्दौलाका) जामिन हो जावेगा। रायने अमीरके लिए यह सव स्वीकार कर लिया। यारखां और जवाहर-सिहके साथ जमशदखा और अन्य अफगानोने रायको अपने अधिकारमें रख लिया। इस प्रकार अमीर और मुस्तारुद्दौलाने कठिनाईसे मुक्ति पाई। इसी बीचमें राजा मोहनसिहकी सेनाके सिपाही भी अपने वेतनके लिए हल्ला मचाने लगे। अमीरके ससुर मुहम्मद अय्याजखांके वहकानेसे अपने सरदार राजाको जयपुरमें टोरडोंके स्थान पर कैद कर लिया। इसलिए मुशी भुसावनलालने जो उस समय मोहनसिहकी सेनामें था, उसके छुटकारेके लिए उद्योग किया। छुटकारेके पश्चात् राजा मोहनसिंहने नौकरी करना उचित न समझ कर त्यागपत्र दे दिया और मुस्तारुद्दौलाके पास चला आया। राजाके त्यागपत्र देने पर उसके दलका नायक मुहम्मद अय्याजखा बनाया गया।

नवाव जमशेदखा, मुहम्मद सईदखा और दूसरे रिसालदार, जिन्होंने राय दाताराम और उसके दो साथियोंको पकड रख था, मेवाडमें निवाहेडाकी ओर अग्रसर हुए। अमीरने दाराशाहखा रिसालदारकी अध्यक्षतामें अपनी प्रवान सेना मेवाडमें सेनाव्यय प्राप्ति हेतु भेजी। आप स्वयं थोडेसे सिपाहियोंके साथ करीमखा पिंडारीको ले कर टोंक और इद्रगढ होता हुआ कोटा राजराणा जालिमसिंहके पास गया। वहाँ पर चार दिन ठहर कर वह भानपुरा गया, जहाँ हालहीमें जसवतराव होल्करका निवन हुआ था। वहाँ उसकी विधवा वाईसे मिल कर शोक प्रकट किया और उसके आग्रहसे जसवतरावके उत्तराधिकारी मल्हाररावकी नावालगीमें राज्यका प्रवध करना स्वीकार किया। अमीरखाने करीमखा पिंडारीको वहाँ कुछ दिन ठहरनेको सम्मति दी और उसे समझाया कि नामदारखा और उसके (करीमखाके) साथियों, तथा सवंधियोको, मेरे साथ भेज दिया जाय, जिन्हे मैं राजा दुर्जनसाल खीचीसे मिला दूंगा जो इस समय दौलतराव सेंवियाके विरुद्ध विद्रोह कर रहा हैं। ये लोग अच्छी सहायता करेंगे। सेंवियाको उसके कियेका फल चखायेंगे। करीमखाको यह योजना पसद आ गई और वह भानुपुरा ठहरनेके लिए तैयार हो गया। इस पर अमीरने करीमखाको इफ्त-खारुद्दौला और गफूरखाके सिपाहियोंकी नाम मात्रकी चौकसीमें छोड दिया और आप नामदारखा, शहामतखा और दूसरे लोगोंके साथ शेरगढ आ कर दुर्जनसालसे मिला। पिंडारी सरदारोको यह कह कर उसके पास छोड दिया कि ये लोग तुम्हारी अच्छी मदद करेंगे और इनके सहयोगसे वडे वडे कार्य हो सकेंगे। उधर पिंडारोंसे यह कहा कि मैं राजा (दुर्जन-साल)का कार्य तुम्हारे हाथमें देता हूँ तुम अपने और राजाके शत्रुके विरुद्ध मिल कर कार्य करो। इसके अतिरिक्त नामदारखाको वजीर मुहम्मदखा भूपाल वालेके नाम भी एक पत्र दिया जिसमें पिंडारियोको सहायता देनेको लिखा गया था। इसी समय अमीरखाने मुहम्मद सईदखाको 'शमशुद्दौलाजफरजग' व शरूरखाको 'सरफराजुद्दौला तेगजगकी' उपाधिया प्रदान की। शरूरखाको मुनव्वरखाके स्थान पर सिरोंजका अधिकारी वना कर भेज दिया।

मुख्तारुद्दौला जो लावाके पास सेना डाले पडा हुआ था अपने सिपाहियोकी विद्रोहात्मक प्रवृत्ति देख कर भयभीत हो चुका था। अत लावाका घेरा परित्याग कर किशनगढकी ओर चला गया। अमीरखाने मोहनसिंहके दलको दूसरे सिपाहियोंके साथ अपने ससुर मोहम्मद अय्याजखाकी अध्यक्षतामें जयपुरके राजावाटी भागमें सेनाव्यय एकत्रित करनेको भेजा। जयपुर वालोने अभी तक निश्चित रकम नही दी थी और देनेमें आनाकानी कर रहे थे। अतः मुख्तारुद्दौलाके वकीलसे लोगोंने कहा कि जब तक अमीरके ससुरकी अध्यक्षतामें शहर पर तोपखाना न लगाया जावेगा, तव तक रुपया प्राप्त होना कठिन है। इसलिए नवाव साभरकी ओर रवाना हुआ और तोपखाना लानेका प्रयत्न करने लगा। मार्गमें ठाकुर चादसिंहकी अध्यक्षतामें जयपुरकी सेनाने उन पर आक्रमण किया। जब यह समाचार राजा वहादुरलालसिंहने सुने जो इस समय लावाके घेरे पर नियुक्त था और जिसने लावा-

वालोको इतना दबा दिया था कि उनके नाश होनेमें कोई कमी नही थी, तो लावावालोसे ८० हजार रुपया लेनेकी प्रतिज्ञा पर घेरा तोड कर, अमीरके ससुरकी सहायताके लिये शीघ्र पहुँच गया और जयपुरकी सेनाको पीछे हटा दिया। इस प्रकार यह लावेका घेरा कई दिन रह कर समाप्त हुआ। लावाका यह घेरा सन् १८१२ ई मे डाला गया था।

अमीरखां करीमखांको भानपुरा छोड कर, घूमता हुआ अजमेर आया, जहाँ उसे मुहम्मदे अय्यजखां मिला। मुहम्मद अय्याजखांके सिपाहियोको अभी तक बाकी रुपया नही मिला था, अत अमीरखाने शीघ्र ही रुपया दिये जानेका उन्हे आश्वासन दिया। आश्वासन दे कर अमीरखा जोधपुर चला गया। इधर मुख्तारुद्दौलाकी जयपुरकी सेनासे फिर मुठभेड हो गई जिसमें जयपुर सेनाको पीछे हटना पडा और सधि करनी पडी। इसी समय सन् १८१३ ई में जगतसिंहकी बहिनका विवाह मानसिंह जोधपुरके साथ और मानसिंहकी पुत्रीका विवाह जगतसिंह जयपुरके साथ हुआ। सधिके पश्चात् मुख्तारुद्दौला मेडता चला आया और अमीरसे मिल कर जोधपुरसे फिर रुपयोकी माग की। यहाँ इद्रराज और महाराज मानसिंहके गुरु देवनाथकी हत्याके पश्चात् अमीरखां शेखावाटीमें आया। यहाँ श्यामसिंह और अभयसिंहके विरुद्ध मोर्चाबदी की जिन्होने जमशेदखांको हरा कर भगा दिया था। अमीरने इनसे ३ लाख रुपया ले कर जयपुर आ कर रुपयोकी फिर माग की और रुपया प्राप्त न होने पर घेरा डाल दिया। छुटपुट आक्रमणोके अनन्तर मानसिंहकी पुत्रीके आग्रहसे, जिसका विवाह कुछ दिन पूर्व जगतसिंहके साथ हुआ था—घेरा उठा कर अमीरखां जोधपुरकी ओर चला गया और इधर जोधपुर और बीकानेर रियासतोमें दस्युता करता हुआ कई महीनो तक घूमता रहा। तत्पश्चात् अमीरखांको माधोराजपुरेके किलेकी ओर आना पडा जहाँ लदानेके कवर भारतसिहने, अमीरके ससुर मुहम्मद अय्याजखाके बीबी बच्चोको टोरडीसे ला कर, अमीरखाको अपने ऊपर आक्रमण करनेके लिये विवश कर दिया था।

अमीरखांने जब लावाको घेरा था, उस समय लावाकी सहायताके लिए नरूखंडके सभी नरूके सरदार आये थे। जिनमें लदानेके ठा मदनसिंहके पुत्र कवर भारतसिह भी थे। यह वीर और उत्साही नवयुवक थे। इन्होने अपने ठिकानेकी 'रेखला' नामक तोपसे इतने गोले अमीरखाकी सेना पर बरसाये थे कि विवश हो कर अमीरकी सेनाको घेरा उठाना पडा था। ऊपरकी पक्तियोमें यह लिखा जा चुका है कि लावेका घेरा राजा बहादुर लालसिंहने लावा वालोके ८० हजार रुपया देनेकी प्रतिज्ञा पर उठा लिया था। यह लेख अमीरखाके वेतन भोगी मुशी भुसावनलालका है जिसने अमीरके जीवनकालमे ही अमीरकी जीवनी लिखी थी। किन्तु अन्य इतिहासकारोका कथन है कि भारतसिहके तोपोकी मारसे विवश हो कर यह घेरा उठाया गया था।

लावाके घेरेके पश्चात् एक समय नरूकोमे एक विवाहोत्सव था, जिसमे कवर भारतसिह भी अपने साथियो सहित सम्मिलित हुए थे। प्रसगवश वहाँ पर कई सरदारोंके मध्यमें

जिनमें राठौड भी थे, लावामें की गई अपनी वीरताका गर्वभरे शब्दोंमें वर्णन किया जिससे कि ले-देकर जो सधिकी चर्चा चल रही थी, वह स्थगित हो गई और लावाका घेरा उठा लिया गया। प्रसगवश यह वताना अनुपयुक्त न होगा कि राठौडो और कछवाहोंमें आपसमें समधियोका सवध था और वे एक दूसरेसे हँसी मजाक भी किया करते थे। किन्तु उस हास्यमे कभी मनोमालिन्य नही हो पाता था। अस्तु, भारतसिहकी उक्त गर्वभरी बातसे एक राठौड सरदारने मुँह वना कर कहा कि, "इसमें आपकी वीरता क्या थी आपने तो अपने दीन आतिथेयको और भी कठिनाईमें फँसा दिया था, वह तो भाग्यकी बात थी कि घेरा उठ गया। आपकी वीरता तो तव समझी जाती कि जव आप नवावको अपने घर पर युद्धार्थ निमत्रित करते। हमें तो पूर्ण विश्वास है कि यदि ऐसा किया जाता तो आप अपने वालवच्चो सहित ठिकानेको भी खो बैठते।" यह शब्द भारतसिहको तीरकी तरह लगे। कुछ क्षणके लिए वह स्तब्ध हो गया, किन्तु उसी क्षण एक व्यक्तिसे जल मगा कर उसे अपने दाहिने हाथमें ले कर प्रतिज्ञा की, "यदि एक वर्षके भीतर मैं नवावको युद्धार्थ निमत्रित करके परास्त नही करू तो मैं असल राजपूत नही और मुझे अपने वशका कलक समझा जावे।" इस पर उपस्थित सव ही व्यक्तियोने भारतसिहको अपनी प्रतिज्ञा वापिस लेनेके लिए वाध्य किया, किन्तु उसने उत्तर दिया कि हाथीके दात एक वार वाहर निकलनेके पश्चात् कभी अन्दर नही जा सकते है, वैसे ही राजपूतके मुँहसे भी शब्द एक वार कहे जाते हैं। इस हास्यसे आगेकी घटनाका श्रीगणेश हुआ।

जव भारतसिह अपने स्वामिभक्त, चतुर एव दूरदर्शी कामदार शभू धाभाई सहित घर लौट रहे थे, तव मार्गमें कामदारने कुँवर भारतसिहको उसके इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर वहुत वुरा भला कहा। तुम्हारा इस प्रकार अदूरदर्शितापूर्ण कार्य केवल नरूकोंके नाशके अतिरिक्त कुछ नही है। क्या आप अनेक साधन सपन्न अनेक सहायकोयुक्त एव अदमनीय, कठोर और भयकर अमीरखा पर विजयकी आशा करते हैं? क्या राजस्थानमें अमीरके विरुद्ध खडे होनेकी किसीमें शक्ति है? जयपुर, जोधपुर, उदयपुर भी वरावर भय खाते रहते है और समय समय पर उसे सेनाव्ययकी रकम देते रहते है। इस पर कुँवरको वास्तवमे होश हुआ और उसे अनुभव होने लगा कि जल्दवाजीमें वडी भयकर भूल हो गयी। फिर भी उसने उत्तर दिया कि आप सव लोग अपने अपने घरोमें वैठ कर आराम करो। मैं यह जानता हूँ कि आज नवावका राजस्थानमें विरोध करने वाला कोई नही है तो भी नवाव चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यो न हो, मैं एकाकी ही नवावकी सेनाका सामना करूगा और अतमें एक वीर योद्धाकी तरह वीरगति प्राप्त करूगा। इस पर धाभाईने उसे आश्वासन दिया कि आपको किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। यद्यपि मैं एक तुच्छ जातिका गूजर हूँ और एक छोटेसे ठिकानेका कामदार हूँ तथापि आप विश्वास रखें और देखें कि मैं किस प्रकार वर्षके अत तक आपकी प्रतिज्ञापूर्त्तिमें योग देता हूँ। मुझे पूर्ण अधिकार दिया जावे

और आगे मेरा कार्य देखा जावे। इसी तरह वर्षका अत होनेमें कुछ ही दिन शेष रह गये थे, किन्तु धाभाईने अभी तक कुछ भी नही किया था। इस पर कुवरने एक दिन धाभाईको वुला कर कहा कि तुम तो अपनेको तुच्छ गूजर कह कर अपनी वातसे हट सकते हो, किन्तु मैं राजपूत विना प्रतिज्ञा पूर्ण हुए कैसे मुँह दिखा सकूगा। इस पर धाभाईने कहा कि आप चिंतित न हो समय अव कार्य करनेका आया ही है। आप मेरी कार्यवाहियोको चुपचाप देखते रहे।

दूसरे दिन उसने लदानेके हलवाइयोको बुला कर ५००० व्यक्तियोंके लिए 'हलवा पूरी' तैयार करनेको कहा और साथ ही उसने सम्पूर्ण नरूखडके नरूका राजपूतोको स्त्री, वच्चो सहित भोजनका निमत्रण भेजा। यथा समय सब लोग भोजनके लिए आये, भोजनके पश्चात् धाभाईने सबको एकत्रित कर कहा "ठिकानेमें ऐसा कोई बडा कार्य नही था, जिसके कारण इतना वडा प्रीतिभोज दिया जाता, किन्तु कुवर वीर और पराक्रमी हैं और नरूओंके टीकाई हैं, अत आप सवको उन्हे सम्मान देना चाहिये। इसके पश्चात् कुवर घोड़े पर चढे और उपस्थित नरूकोमें से ५०० चुने हुए पराक्रमी एव साहसी योद्धागण कुवरके पीछे पीछे चले और धाभाई पैदल साथ साथ चला। यह सव लोग माधोराजपुरेके किलेकी ओर आये। जयपुरमें यह किला अन्य किलोंसे अधिक सुदृढ था। जव यह लोग वहाँ पहुँचे तव, रात्रिके १० वज चुके थे। रस्सेकी सीढियो द्वारा किलेमें प्रवेश कर किलेका दरवाजा खोल कर वाकी वचे हुए साथियोको किलेके अदर लिया गया और फिर वहाँके रक्षकोको वाहर निकाल दिया गया जो जगतसिंहकी राठौड रानी (मानसिंहकी पुत्री)के द्वारा वहा नियुक्त थे। इसके पश्चात् रातोरात सम्पूर्ण नरूकाओको स्त्रियो वच्चो सहित वहाँ वुला लिया गया। इस प्रकार अपनी रक्षाका प्रवध कर अमीरसे युद्ध करनेकी तैयारी की जाने लगी।

अमीरखाका ससुर मुहम्मद अय्याजखा उस समय टोरडी ठाकुरके यहाँ सपरिवार ठहरा हुआ था, जिससे उसका सवध पगडीवदल भाईका था और उनकी वेगम ठकुराणीकी धर्मवहिन थी। इस वातको धाभाई अच्छी तरह जानता था। अत. उसने २०० चुने हुए पराक्रमी और उत्साही सवारोको ले कर रात्रीमें टोरडीके जनाने महलो पर आक्रमण किया। उसने गावमें जा कर वहुतसे वैलोको एकत्रित कर उनके दोनो सीगो पर मशालें जला कर इधर उधर फैला दिया जिससे यह मालूम हो कि कोई वहुत वडा दस्युओका दल लूटनेको आया है। तव इस प्रकार किसी भी समय लूटमार हो जाना कोई वडी वात नही थी। अय्याजखा तथा ठाकुरने जव इन लोगोका हल्ला सुना तो देखनेके लिये अपने स्थानसे वाहर आये। अय्याजखाने यह समझा कि रात्रिके अधकारके कारण उसीके व्यक्ति लूटमार करने आये होगे। उन्हे देखनेको कुछ व्यक्तियोको गावकी ओर भेज दिया। इधर धाभाईने जनाने महलो पर आक्रमण कर, अय्याजखाके परिवारकी स्त्रियो और वच्चोको, जिनमें अमीरखाकी स्त्री भी थी, अपने अधिकारमें करके ले चला और पहरेदारोमेंसे एकको भी समाचार देनेके लिये जीवित नही छोडा। इधर वैलोंके सीगोकी मशाले वुझने

लगी तो उनके साथ जो आदमी थे, उन्हें छोड़ कर चले गये। जब नाच, गाना समाप्त हुआ और मुहम्मद अय्याजखां अपने ठहरनेके स्थान पर मध्य रात्रिको वापिस आया, तब वहीं उसे कोई भी व्यक्ति नहीं मिला और हत्याकांडको देख कर तो उसे और भी आश्चर्य हुआ कि इस इतनी बडी घटनाका उन्हे जरा भी भान न हुआ। उस ओर बाभाई उन बेगमों आदिको आरामके साथ माबोराजपुराके किलेमें ले गया, जहाँ उन्हे बडे ही आरामसे रखा। अब युद्धके लिये रसद आदिका प्रबंध किया गया। जब अमीरखाको इस दुर्घटनाका समाचार मिला तो उसने अपनी बडी सेना ले कर माबोराजपुराके किलेको घेर लिया।

घेरा डालनेके पश्चात् अमीरखांने प्रथम भारतसिंहको अपने परिवार वालोंको छोड देनेके लिए संदेश भेजा। भारतसिंहने फसल पकने तक अमीरको अपना विचार प्रकट नहीं होने दिया, उसे वस्तुस्थितिसे अंधकारमें ही रखा। जब फसल पक कर तैयार हो गई और खाने पीनेकी सामग्री प्रचुर मात्रामें एकत्रित कर ली गई, तब अपनी इच्छा स्पष्ट रूपसे अमीरको प्रकट कर दी। इस पर अमीरने राणोतकी ओरसे आगे बढ कर घेरेको और भी संकुचित कर लिया। इसके साथ ही उसने राजा बहादुरलालसिंह, मियां अकबर, मोहम्मदखा और महमूदखा आदिकी सेनाको बुलवा लिया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमशेदखा और चेला हिम्मतखाकी घुडसवार सेनाको भी बुलवा लिया। इन्हे किलेके चारो ओर लगा कर, मार्ग अवरुद्ध कर, शहरसे किलेवालोका संबंध विच्छेद करनेके पश्चात् आक्रमण कर दिया। इस प्रकार घेरा डाले हुए और आक्रमण करते हुए कई मास व्यतीत हो जाने पर भी अमीरखांको सफलता नहीं मिली, तब उसने अपनी सेनाके सम्पूर्ण अधिकारियोको एकत्रित करके परामर्श किया, और यह निश्चय किया कि किलेकी एक ओरकी दीवारको तोड कर किलेमें प्रवेश कर, आक्रमण करना चाहिए। इस योजनाके अनुसार कार्यवाही आरंभ की गई, किन्तु अमीरके काबुली सिपाही—जो हिन्दी नहीं समझ सकते थे—दीवार टूटनेसे पूर्व ही आक्रमण कर बैठे। इससे किलेवालोंने सचेत हो कर ऊपर से जलते हुए छप्परोंके साथ साथ गोलाबारी भी इन लोगो पर की जिससे अमीरकी सेनाके कितने ही व्यक्ति मारे गये और कितने ही झुलस गये और बाकी बचे हुए भाग गये। अमीरने जब यह सुना तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ, और बिना आज्ञा कार्यवाही करनेके अपराधमें बहुतोंको दंड दिया। उसकी यह योजना असफल हो गई जिसको पुनः कार्यान्वित करना भी असंभव था, क्योंकि यह योजना प्रगट हो चुकी थी।

इस आक्रमणके समयमें कुंवर भारतसिंह और बाभाईने स्थितिको इस वीरता और चतुराईसे संभाला कि अमीर जैसा कठोर एवं पराक्रमी योद्धा भी विचलित हो गया। नवाबके बीबी-बच्चोंको ऐसे प्रेम एवं आदरसे रखा कि वे उसे जीवन पर्यन्त न भूल सके जिससे

उनमें आपसमें सगे भाई बहिनोका-सा सवंध हो गया था। एक बार फिर नवावने दीवार तोडनेका यत्न किया तो उस समय नवाबके बीवी बच्चोने अमीरसे कहलाया कि यदि आपने किलेकी दीवारे तोडनेका फिर प्रयत्न किया तो हम उस स्थान पर पहुँच जावेगे– हमारे मरने पर ही बाबा भारतसिह व अन्य राजपूतो पर आच आ सकती है। इस पर अमीरने किलेकी दीवार तोडनेका विचार त्याग दिया। युद्ध चलते हुए कई मास व्यतीत हो गये थे, उसकी सम्पूर्ण सेना युद्धस्थल पर एकत्रित हो चुकी थी, जिसे वेतन नही मिला था। सेना व्यय जहाँ जहाँसे प्राप्त होनेको था वह आया नही था। इन परिस्थितियोने अमीरखाको अत्यन्त चितित कर दिया था। अत मुहम्मद ऊमरखा, राय दाताराम और मुहम्मद अय्याजखाने लाख रुपया कुवर चतुरसिहसे ला कर दिया, जिसे अमीरखाने अपनी सेनामें बाट दिया। इसके पश्चात् किले पर फिर आक्रमणकी तैयारी की जिसका सचालन स्वयने लिया। उसने सब सेनानायकोको सूचित कर दिया कि इस वार उसकी आज्ञाका पूर्णरूपसे पालन किया जावे और सकेत पाते ही तत्काल किलेपर आक्रमण कर दिया जावे। किन्तु इस वार भी हवाके विपरीत होनेके कारण अमीरने जो सकेत तोप चला कर किया था वह दूसरी ओर न पहुँच सका और उसकी सेनाके पडावमें पहुँचा। इसलिए इस ओर वाली सेनाने यह समझ कर कि उनके अन्य साथियोने (दूसरी ओरवालोने) किलेको तोड दिया है – आक्रमण कर दिया किन्तु दूसरी ओरवालोको इसका कुछ भी ज्ञान नही था, इसलिए वे जहाँके तहाँ रहे। किलेवालोके सजग हो जानेसे अमीरकी यह योजना भी सफल न हो सकी और उसे अत्यन्त हानि उठानी पडी। अतमें उसने घेरेको और भी सकुचित करके किलेवालोको भूख प्याससे विवश करना चाहा। समय अत्यधिक हो चला था। १२ मास होने पर आये थे। क्योकि यह घेरा २१ नवम्बर सन् १८१६ ई में आरभ हुआ था और सन् १८१७ ई का नवम्बर मास आरभ हो चुका था। अब घेराके सकुचित हो जानेके कारण किलेवाले भी विशेष चिन्तित हुए। किन्तु किलेवालोंके सौभाग्यसे उन्ही दिनो अग्रेजी सरकारने अपनी सेनायें चारो ओरसे एकत्रित कर उन स्थानोकी ओर रवाना की जो अमीरखा द्वारा लूटे जा रहे थे। दूसरी ओर अग्रेज सरकारने अमीरखाके देहलीवाले प्रतिनिधि मुशी निरजनलालसे समझौतेकी बातचीत की जो इस समय चार्लस् टी मेटकाफ रेजीडेण्टके पास था। उससे (निरजनलालसे) यह कहा गया कि यदि अमीर हमारी शर्त्तोको स्वीकार कर लेगा तो उसे दक्षिणकी कुछ जमीन और दे दी जावेगी। इस प्रकार सधिकी बातचीत करके एक डोल (ड्राफ्ट) अमीरकी स्वीकृति हेतु भेजा गया। इस डोलमें अग्रेजोके लाभकी बाते अधिक थी और अमीरकी आशाओके अनुसार बहुत कम थी। इसी समय आगरेसे जनरल डकिन और देहलीसे जनरल आक्टलोनी अपनी अपनी सेनाओंके साथ जयपुरकी ओर बढा। साथ ही अमीरखाको जो कुछ सहायता मरहट्टे सरदारोंसे मिल सकती थी, उस पर पहिलेसे ही रोक लगा दी। इससे अमीर किंकर्त्तव्यविमूढ हो गया और अतमें विवश हो कर और सधि करनेमें ही अपना हित समझ कर उस डोल पर उसने हस्ताक्षर कर दिये। और

भारतसिहको रुपया आदि दे कर अपने ससुरके परिवारको छुटा कर घेरा उठा लिया * । इस प्रकार भारतसिहका प्रण पूर्ण हुआ। मावोराज पुरे की लडाई के पश्चात् इस विजय की खुशीमें महाराज जगतसिह ने माह सुद ७ वि म १८६९ के दिन प्रीतम निवासमे दरबार किया और लदानाके मदनसिह, पीपलाके चतुर्भुजोत महतापसिह, कायमसिह नरूका, कुवर भारतसिह नरूका, रामबक्स गुमास्ता और वोहरा दीनारामको सिरोपाव दिये और इनकी प्रशसा की। सधिके पश्चात् अमीर अपनी सेनाका अधिकाश भाग तोड कर अपनी अधिकृत भूमिके प्रमुख शहर टोकको आ गया और उसने इसे ही अपनी राजधानी बना कर जनहितके कई कार्य किये। ६७ वर्षकी अवस्थामें जमादीउस्सानीकी ता २५ सन् १२५० हिजरीको तदनुसार सन् १८३४ ई में उसका स्वर्गवास हो गया। वह मोतीबागके किनारे तालाब और मसजिदके निकट दफना दिया गया।

अमीरखाकी मृत्युके बाद उसका बडा पुत्र वजीरुद्दौला २८ वर्षकी अवस्थामे हिजरी सन् १२५० के जम्मदीउस्सानीकी २७वीं तारीखको सिंहासनासीन हुआ। इसको अंग्रेजी सरकारकी ओरसे खिल्लत दी गई। हिजरी सन् १२६१ तदनुसार १८४५ ई० में अलीगढ के गाडोली गावकी सीमाको ले कर उणियारे वालोंसे युद्ध हुआ। अतमे करनल जान सदरलेण्ड रैजिडेण्ट, राजस्थानने उणियारे और अलीगढकी सीमाका फैसला किया। इसके अनन्तर सन् १२६७ हि० में फिर उणियारे वालोने टोकके एक ग्राम पर अधिकार कर लिया। नवावने ४ तोपो के साथ सरदार अब्दुररहमानको भेजा। युद्धके पश्चात् करनल जालबिन साहब रेजिडेंटने सीमाका फैसला कर दिया। दूसरे वर्ष सन् १२६८ हिजरीमें (१८५२ ई०में) नवाव वजीरुद्दौलाने लावा पर आक्रमण किया। इस आक्रमणमे नवावके साथ प्रमुख व्यक्ति ये थे—अहमदअलीखा, मुहम्मदबक्स, बलन्दखा, मुनीरखा, अकरमखा (भाई), फैजमुहम्मदखा, मुहम्मदअलीखा, अब्दुल्लाखा (बेटे), अहमदयारखां, किफायतउल्लाखा, अहमदअलीखा कप्तान, शाहआजमखा नूरउल्लाहीखा, मुहम्मद फैजउल्लाखा, मसूदउद्दीन, हिम्मतखा, कलंदरबक्स, सैयद-अब्दुलअजीज, शेख फरहतउल्ला, मुहम्मद हुसेन, सैयद अलीहुसेन, अब्दुलरहमान रिसालदार, मुहिबुल्ला रिसालदार, सैयद जफर अली रिसालदार और मिश्रीखा। लावा की ओरसे प्रमुख व्यक्ति हनुमतसिह, सरजनसिंह, (कर्णसिहके भाई) रामसिंह, श्यामसिह (हनुमतसिहके भाई), रैवतसिह, हरनाथसिह, ठाकुर लदाना, प्रतापसिहके छोटे भाई गोरधनसिह, स्योराके हनुमतसिह, बख्तावरसिह, रणजीतसिह और सुजानसिंह, इस युद्धमे सम्मिलित हुए। नवावकी ओरसे पहिले पहिल सितमखा मारा गया तथा अन्य प्रमुख व्यक्ति जो वीरगतिको प्राप्त हुए उनके नाम ये हैं—मिश्रीखा रिसालदार, रुस्तमखा जमादार, गोहरखा, जहागीरखा जमादार और सैयद रोशनअली मेजर। और लावाकी ओरसे महरूके रेवतसिह नरूका और भवाना धाभाई, आवाके किलेदारका पुत्र गिदिया, सोडेका हनुवतसिह, उणियाराके सग्रामसिह, ठाकुर गोविन्द-

* इस स्थान पर 'अमीर नामा'के लेखकने लिखा है कि जैसे-तैसे अमीरने भारतसिंहसे बातचीत तय, कर अपने ससुरके परिवारको छुडा कर और घेरा उठा कर, नीमेडाकी ओर प्रयाण किया।

सिहका सेवक लछमनसिंह दरोगा, रतना धाभाई, सुख्खा दरोगा लालसिंह किलेदार आदि कितने ही प्रमुख वीर वीरगतिको प्राप्त हुए।× इस युद्धके पश्चात् वजीरुद्दौला ५९ वर्षकी अवस्थामे सन् १२८१ हिजरी तदनुसार १८६५ ई में स्वर्गस्थ हुआ।

यह पहिले लिखा जा चुका है कि ये युद्ध अमीरखा और कछावाहोकी नरूका शाखाके राजपूतोंके मध्य हुए थे। अमीरखा और उसके कार्य-कलापोका वर्णन ऊपर लिखा जा चुका है। अब नरूकाओकी उत्पत्ति, प्रसार तथा उनके ठिकानो आदिके विषयमें ज्ञातव्य बातें दी जाती है।

सवत १४२३ वि में आमेरके सिंहासन पर उदयकर्णका उदय हुआ। इसके जेष्ठ पुत्र वरसिंह थे, जिनके विवाहके लिए खडेलाके निर्वाण (चौहान) वशी राजा राव बीसलदेवने (अपनी पुत्रीके विवाहार्थ) टीका भेजा। इस अवसर पर वृद्ध राजा उदयकर्णने हास्यमें कहा कि यदि हमारी अवस्था भी कुत्रर साहबकी-सी होती तो आज हमारे लिये भी व्याहका टीका आता। यह सुन तत्काल कुवर वरसिंह उठ गये और उस कन्याको हृदयमें माता अनुमान कर पितासे विवाह करनेका आग्रह करने लगे और खडेलाके अतिथियोंसे कहा कि माग हमारी हो चुकी है अतएव अन्य स्थान पर व्याह करोगे तो भयकर युद्धका सामना करना पडेगा। जब बीसलदेवको यह ज्ञात हुआ तो उसने वरसिंहसे प्रतिज्ञापत्र लिखवा लिया "मै राज्याधिकार प्राप्त नही करूगा, नई माताके पुत्रको ही स्वामी मानूगा।" अततोगत्वा राजा उदयकर्णको वृद्धावस्थामें तीसरा विवाह करना पडा। इस कन्यासे उसके दो पुत्र हुए। जेष्ठका नाम नृसिंह और कनिष्ठका बालोजी था।

स १४४५ वि में राजा उदयकर्णका स्वर्गवास हो जाने पर वरसिंहने अपनी प्रतिज्ञा-नुसार अपने भाई नृसिंहको सिंहासनारूढ कराया। आमेरमे बालक राजा जान कर कलाधर झाला राजपूतने आमेर हडपनेके लिए एक बडी सेना ले कर ईशरदाके निकट सरसके नाकेके पास पडाव डाला। जब यह सूचना वरसिंहको मिली तो वह भी शत्रुको बीच हीमें रोकनेके लिए बडी सजधजके साथ निवाईमें आकर ठहरा। वरसिंहका ऐसा उत्साह देख, झाला कलाधरने कुटिल नीतिका अनुसरण करते हुए उसे (वरसिंहको) कहलाया कि, "व्यर्थहीमें क्षत्रिय परस्पर लड कर मारे जावेगें, अतएव आप निसकोच अकेले पधारे, मै भी इसी प्रकार उपस्थित होऊगा। सधि करली जावेगी।" सीधे सीधे वरसिंह झालाकी कुटिलताको न समझ कर, उसकी सूचनानुसार केंवल एक सईसको साथ ले कर, सरसके नाके पर पहुँचे

× अमीरखाकी मृत्युके पश्चात् वृत्त विस्तार-पूर्वक नहीं मिलता है। जो कुछ प्राप्त होता है वह "तवारिखे महमूदाबाद में" है। नवाब वजीरुद्दौलाका वृत्त इसी पुस्तकके आधारपर लिखा गया है। उसमें न तो "लावाके" युद्धका कारण लिखा है न परिणाम ही। सवधित ठिकानोंसे जो वृत्त प्राप्त हुआ है, उससे कविके वृत्तकी पुष्टि होती है। वह यथास्थान आगे दिया जावेगा।

जहाँ झाला कलावर एकाकी, जाजम पर बैठा हुआ, उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वाते करते करते विश्वास उत्पन्न कर और वर्रसिहको असावधान देख, झपट कर उसकी छाती पर चढ़ बैठा और दोनों हाथ पकड कर वर्रसिहको विवश कर दिया। अव तो वर्रसिह वहुत ही घवराया और झालाकी चालाकी भी उसकी ममझमें आ गई। किन्तु विवशतासे कुछ कर नही सका, फिर भी साहस कर छुटकारेका प्रयत्न करने लगा। अतमें नीचे चित्त पडे हुए वर्रसिहकी दृष्टि उस नग्न कटार पर पडी, जिसको झालाने अपनी पटलीमें छिपा रखा था। वर्रसिहने नीचे पडे पडे ही, एक पैरके अँगूठेसे उसको ऐसी शीघ्रतासे खीचकर, दूसरे पावसे पूरी शक्तिके साथ ठोकर मारी कि जिससे वह कटार कलाधरका पेट फाड कर पीठके वाहर निकल आई और तत्काल ही कलाधरका प्राणान्त हो गया। इसी अवसरका किसी कविका यह दोहा प्रसिद्ध है।

पगसे लीधी पारधी, पगसे कीधी पार।
झाला कलाधर मारियो, कूरम वाहि कटार॥

झालाके मारे जाने पर उसकी सेना स्वत ही भाग खडी हुई। झालाकी सेनाके भाग जाने पर वर्रसिह आमेर आए। सव लोगोंकी सम्मतिसे आमेर राज्यके तीन भाग किये गये। उस समय आमेरकी आय केवल २७ लाख वार्षिक की ही थी। इस कारण नौ लाखमें भैराणाकी ८४ गावोकी जागीर वर्रसिहको और नौ लाखमें अमरसरकी जागीर वालोजीको दी गई। शेष आमेरके स्वामी नृसिह रहे।

भैराणाके स्वामी वर्रसिहके पुत्र मेहराज हुए। इन्हीके पुत्र नर्रुसिह वहुत प्रसिद्ध हुए, जिनकी सतान नरूका कहलाई। नरूसिहके दो पुत्र थे। राव दासा और राव लाला। राव दासाके सात पुत्र थे। चन्दनदास, जयमल, रतनसिंह, पूर्णमल, रायसल, कपूरचद और करमचद। राव दासाके इन सातो पुत्रोका परिवार वहुत वढा। ये लोग जहाँ जहाँ वसे वहे सव 'नरूखड'के नामसे प्रसिद्ध हो गया। उस समय इनका मुख्य स्थान मोजमावाद था। जयपुर राज्यमे इनके ३६ ठिकाने प्रसिद्ध है, जिनमें ४ ताजीमी है। चदनदासकी सतानोने 'लदाना' और 'लावा' प्राप्त किया और करमचदकी सतानोको उणियारा स्थापनका अवसर प्राप्त हुआ। राव लालाकी सतानोने अलवर राज्यकी नींव डाली। नरूसिहका पौत्र और दासाका पुत्र करमचद बड़ा वलिष्ठ, दीर्घकाय एवं प्रभावशाली था। इसके पास जमइय्यत भी वहुत थी। उसके पास अच्छे अच्छे चुने हुए अनेक सुभट थे, जिनको वह ६२ प्रकारसे प्रसन्न रखता था। उसके विरुद्ध आवाज उठानेका आमेर राज्यमें किसीमें भी साहस नही था। आमेरके राजा इन्द्रसेनने, जिसका समय स १५२४ मे १५५९ तक था, माडूके वादशाह नासिरुद्दिनको, जो आमेर पर चढाई कर आया था, भाडारेजके समीप, करमचदकी सहायतासे युद्धमें परास्त किया। करमचदने आमेरके राजा रतनसिहके समयमें (स १५९ से १६०४) आमेर राज्यके ४० गाव

दबा लिये थे। यह रतनसिंह अत्यन्त शराबी और व्यभिचारी प्रसिद्ध था। इसके राज्यका प्रबध नीच प्रवृत्तिके लोगोंके हाथमे था। इस कारण शेखावतो और नरूकोको अपनी अपनी सीमा बढानेका अवसर प्राप्त हो गया था। राज्यके कुप्रबंधके कारण अन्य भाई बेटे सब ही अप्रसन्न थे। राजा रतनसिंहने अपने चचेरे भाई तेजसिंह रायमलोतको अपना दीवान नियुक्त किया था। इससे अप्रसन्न हो कर उसका चाचा सांगा, आमेरके राजा पृथ्वीराजका, पुत्र, अपनी ननिहाल बीकानेर चला गया था। उसके चले जानेके पश्चात् छोटे दर्जेके नौकरोंको जो राजाके बडे कृपापात्र और मुँहलगे थे, अपनी मनमानी करनेका अच्छा अवसर प्राप्त हो गया था, जिसका परिणाम आमेरकी राज्य-क्षीणताका द्योतक हुआ। सांगा पृथ्वीराजोतको अपनी ननिहालमें, आमेर राज्यके कुप्रबंध और क्षीणताके समाचार बराबर मिलते रहते थे। अतमें उसने इन समाचारोंसे क्षुब्ध हो कर बीकानेरके राजा राव जेतसी लूणकरणोतसे, जो उसके मामा थे, सहायताकी प्रार्थना की। राव जेतसीने १५ हजार सेना सागाको दी, जिसमें चेचावादका वजीर बाघावत, महाजनका लूणकरणोत रतनसिंह, राजासरका काँधलोत कृष्णसिंह, द्रोणपुरका ससारचद्रोत खेतसिंह, सारुडाका मण्डलावत महेशदास, भैंलूका सहावत भोजराज, घडसीसरका बीकावत देवीदास, पुगलका भाटी राव बेरीसिंह, चिरणोतका धनराज शेखावत, खाखाका बाघावत भाटी कृष्णसिंह, मिलकका जोइया होसा, सिंहागाका महता अमरा, बछावत मुहता सागा, पुरोहित लक्ष्मीदास, और नापा साखलाका भाई लाल साखला प्रधान थे। इस सेनाको ले कर सागा अमरसर पहुँचा। यहाँ रायमल शेखावतने उसकी अगवानी कर घोडे भेंट किये, सागाने ये घोडे वापिस कर दिये। सागाका इस प्रकारका व्यवहार देख कर रायमलने राजा रतनसिंहके दीवान तेजसी रायमलोतको सूचित किया कि ढग देखनेसे ज्ञात होता है कि सागा आमेरका राजा हो जावेगा। अत इसके साथ अभीसे संधि कर लेनी उचित होगी। इस पर तेजसी आमेरकी सेना ले कर रास्तेमे ही सांगासे मिला। मिलते समय ही सागाने उपालभ देते हुए तेजसीसे कहा, "शाबास तेजसी, तुमने निकटके हो कर आमेर को खूब आबाद किया।" तेजसीने उत्तर दिया कि "राजा तो शराब और व्यभिचारका दास बना हुआ है, ऐसी स्थितिमें वह तो प्रबधकी ओर तनिक भी ध्यान देता नही है। यदि आप राजा हो जावे तो सब कार्य सरल हो जावे। नरूको द्वारा दबायी हुई भूमि सहज ही वापिस हस्तगत की जा सकती है।" इस पर सागाने उत्तर दिया कि नरूका करमचदके रहते हुए हमारा अधिकार नही हो सकता है। अतमें तेजसीने सागाको मुअज्जमाबादकी ओर प्रयाण करनेके लिए कहा। ये सब लोग वहाँ आये। तेजसीने करमचद नरूकाके कनिष्ठ भाई जयमलको, जो उसके पास रहता था, बुला कर कहा कि, "तूं जा कर करमचदको बुला ला। वह भी यहीं आ कर सागासे अपनी सफाई कर ले। क्यो कि आगे-पीछे राज्यका मालिक सागा ही होता दिखाई देता है।" जयमलने इसका उत्तर यह दिया कि "आज दस वर्षसे करमचद राज्यके इलाके दबा कर भोग रहा है, तब तो किसीने कुछ नही कहा है। अब यदि उससे कुछ कहा जायगा तो वह जवाब तो कुछ देगा नहीं और व्यर्थमें रक्तपात

हो जावेगा।" इस पर तेजसीने उसे समझाया कि "मुझे भी लोग इसी तरह कहा करते थे, किन्तु जब मैं सागासे मिला तो मेरे सब अपराध क्षमा कर दिये।" करमचदको बुलाने जयमलके चले जानेके बाद तेजसीने सागासे कहा कि "आपकी इस सेनामें मुझे तो, भीम समान बलिष्ठ एव दीर्घकाय करमचदके ऊपर कोई खड्ग प्रहार करने वाला दिखाई नही पडता है। सागाने इस कार्यके लिए लालू साखलेको चुना। तेजसीने इसे ठिंगना बता कर विरोध प्रकट किया। फिर भी सागाने उसे वीर समझ कर इस कार्यके लिये नियत कर दिया। तब तेजसीने साखलेको कहा कि "जब मैं 'गाँवोंका' नाम लू तब तू खडग प्रहार करना। यदि तेरा प्रहार चूक गया तो समझ लेना यहा जितने व्यक्ति बैठे हुए हे उनमेंसे एक भी जीवित नही बच सकेगा।" इतने हीमें करमचदको साथ ले कर जयमल आ पहुँचा। करमचदने सागाके चरण स्पर्श कर प्रणाम किया। करमचदके बैठ जाने पर तेजसीने उससे कहा कि "आपने राज्यको बहुत हानि पहुँचाई है। यह राज्यके स्वामी आपसे दबाये हुए गावो का हिसाब पूछते हैं।" लालू साखलाने, जो पासमें ही खड़ा हुआ था, "गावो" शब्दको सुनते ही करमचद पर इस वेग और शक्तिसे खड्ग प्रहार किया कि वह वही ढेर हो गया। यह देख करमचदके लघु भ्राता जयमलने, जो पास ही खडा था, कटार निकाल कर तेजसीका अत कर दिया और फिर सीवा सांगाकी ओर झपटा। यह देख राजा पृथ्वीराजका पुत्र भारमल जो, सागाका छोटा भाई था, बीचमें आगया। इस पर जयमलने यह कह कर कटार छतरीके एक खभेमे दे मारी–जिसका चिन्ह आज तक भी विद्यमान हैं,–कि तुम छोकरेको क्या मारु? उसे धक्का दे, जयमलने लालू साखला पर और लालू सांखलाने जयमल पर, एक साथ ही तलवारके प्रहार किये जिससे दोनो ही समाप्त हो गये। सागाने इतने थोडेसे रक्तपातसे ही दोनों शत्रुओंका नाश देख, और अपना टीकाई रतनसिंहको समझ, आमेर पर अधिकार न कर, मोजमाबादमे आमेर तकके सब प्रदेश पर अपना अधिकार कर अपने नामसे * सागानेर बसा कर वहीं शासन करने लगा। सागाके इस कार्यका सभी भाई–बेटो और जागीरदारोंने स्वागत किया। इस प्रकार सागाने अधिकार कर, रतनसिंह लूणकरणोतको अपने पास रख कर, अपने मामा राव जैतसीकी सम्पूर्ण सेना बीकानेर वापिस भेज दी। इधर करमचदकी जमइय्यत-मेंसे किसीका भी साहस उसका वैर लेनेका नही हुआ, किन्तु एक चारण कान्हा आढाने, जो करमचदका विशेष स्नेही एव स्वामिभक्त था, सांगाको मारकर उसका प्रतिशोध लिया। किन्तु वह भी उसी दिन लोगोंके हाथों पत्थरसे मारा गया। *

---

* सागानेर जयपुरसे दक्षिणकी ओर ८ मील और आमेरसे १३ मील दूरी पर एक ऐतिहासिक प्राचीन बस्ती है। यहांके छपे हुए साफे, दुपट्टे, छींट और हाथका बना कागज बहुत प्रसिद्ध है। यहांका एक जैन मदिर प्राचीन कलाकी कलाका उत्तम उदाहरण हैं। 'सागाबाबा'का एक प्रसिद्ध मदिर भी यहां है।

* स्वामीभक्त वीर कान्हा आढाके इस कृत्यसे नरूके उसके वशजोंको बड़े भाईके समान मान देते हैं। आज भी कान्हा आढाका अमल [अफीम] लेते समय स्मरण कर यह कह कर रग दिया जाता है—

मारयो सागो महिपति वैर करमचंद बोद। अमलारा रंग आपने, कान्हा आढा कोढ ॥ १ ॥
वैर कमचंद वालियो, सांगो भजद सहार, अमल पियता आपने, रंग कान्हा रिझवार ॥ ॥

करमचदके पश्चात् उसके पौत्र जैतसीका पुत्र चद्रभाण वडा पराक्रमी एव प्रभावशाली हुआ। उसने मुगल-सम्राट शाहजहाँकी ओरसे स १६५२ में बलख, वदखशा और कधारमे अपनी वीरता और पराक्रमका अच्छा परिचय दिया। इससे प्रसन्न हो कर सम्राटने चार हजारीका मसव, खिताव और शाहीमुरातव★ दे कर चद्रभाणको सम्मानित किया। चद्रभाणके पुत्र फतेहसिहने शाहजहाँका पक्ष ले कर शुजाके साथ युद्धमें बहुत वीरता दिखाई। महाराज सवाई जयसिहकी सहातार्थ इस वशके सग्रामसिहने साभरके युद्धमें हुसेनअली और अब्दुला सैयद वधुओंके विरुद्ध युद्ध कर पराजयको विजयश्रीमें परिणित किया था। स १७८५ वि में महराज सवाई जयसिहके साथ माडूके युद्धमें अजीतसिहने अपना अद्भुत युद्ध कौशल प्रदर्शित किया, जिसके उपलक्षमें महाराजने वशपरपराके लिए "राव"की उपाधि दे सम्मानित किया था। इसी वशमें महाराज सवाई प्रतापसिहके समयमे विशनसिंह हुआ जिसने महाराजकी ओरसे सिंधियाके विरुद्ध तुगाके युद्धमें अपूर्व पराक्रम दिखाया, जिसके उपलक्षमें महाराजने सं. १८४३ इ वि में उणियाराका स्वतत्र शासन तत्र चलानेके अधिकारके साथ साथ "राजा"की वशगत उपाधि और ५ तोपोकी सलामीका सम्मान दिया। तबसे इस वशके प्रधान "रावराजा" कहालाने लगे और राजस्थानके एकीकरण तक दीवानी और फौजदारी अधिकारयुक्त शासक रहे। आजकल इस वशमे रावराजा सरदारसिह है, जो अपनी उदारता एव लोकप्रियताके लिए प्रसिद्ध है।

राव दासाके एक पुत्र चदनदास थे, जिसकी सतानको "लदाना" पाप्त हुआ। इस वशमें भी उत्तमोत्तम वीर हुए जिन्होने यथासमय आमेर और जयपुर राज्यकी अच्छी सेवा की थी। विशेपकर मदनसिहका पुत्र भरतसिह वहुत विख्यात हुआ है, जिसने अमीरखा जैसे दुर्दमनीय शत्रुको अपने साहस, पराक्रम एव कौशलसे युद्ध मोल ले कर नीचा दिखाया। इसी वशके ठाकुर नाहरसिहने 'लावा' प्राप्त किया। उस समय 'लावा' एक छोटासा ग्राम मात्र था और जयपुर राज्यके अधीन टोक तहसीलके अतर्गत था। जब टोक अमीरखाको दे दिया गया तब लावा टोकके नीचे आ गया। तबसे ही लावा इन पठानकी आँखका शूल हो गया। इन्होने लावाको छीन लेनेके प्रयत्न किये किन्तु नरूके राजपूतोके सगठन एव वीरतासे असफल रहे। ठाकुर नाहरसिहकी तीसरी पीढीमें ठा देवीसिह और

★ ईरानके वादशाह नौशीरवाका पौत्र खुसरो राज्यच्युत हो कर निकल गया था। वह रूमकी शीरीको व्याहा था। फिर सैनिक शक्ति बढ जाने पर उसे फिर राज्यलाभ हो गया। जिस दिन राज्यलाभ हुआ उस दिन ज्योतिषके हिसाबमे चद्रमा मीन राशीमें था। मीनका स्वरूप मछली जैसा माना गया है। ऐसी स्थितिको अच्छा शकुन समझ कर खुसरोने मच्छी और चादसे मिले हुए चिन्हको "शाहीमुरातब" नामसे प्रसिद्ध किया। खुसरोने ऐसे चिन्हके चादी सोनेके झण्डे बनवा कर उन सरदारोंको दिये जिनका आदर सत्कार सर्वोच्च श्रेणीका था। खुसरोके पीछे देहलीके मुगल बादशाहोंने भी उसका अनुकरण किया।

यह वृत्त श्री शिवनारायणजी सक्सेना बी ए भूतपूर्व सब जज जयपुर राज्य द्वारा प्राप्त हुआ है। सक्सेनाजी कुछ दिन लावामें भी कार्य कर चुके हैं।

विजयसिंह हुए। ठिकानेका स्वामी देवीसिंह हुआ। एक समय शिवजीके मंदिरमें ठा. विजयसिंह ध्यान कर रहा था। टोकसे दो सरकारी मुसलमान कर्मचारी आ कर जूते पहने मंदिर के चबूतरे पर चढ गये, मना करने पर भी नही माने और खानेको वहीं बैठ गये। तब ठा विजयसिंहने अपनी तलवारसे एक मियाँका काम समाप्त कर दिया और दूसरा भाग कर टोंक पहुँचा जिसने इस काडकी सूचना नवावको दी। नवावने अपने चुने हुए सिपाहियोंकी एक टुकडी सेना लावा पर आक्रमण करनेको भेजी, किन्तु वह सेना लावाका मार्ग भूल कर लावासे ४ मील उत्तरकी ओर टोंक हीके एक बगडी नामक गावमें पहुँच गई, जहाँ छोटाना लावा जैमाही एक किला था, उसको तोपोंसे ढाह दिया। दूसरे दिन ज्ञात होने पर वहुत पश्चा-त्ताप किया गया। कुछ समय पश्चात् लडाई रुक गई। विक्रम स १९२३ तक ३ लडाइयाँ टोंक वालोंके साथ हुई, परन्तु टोंक वालोको हर समय मुँहकी खानी पडी। जब टोंकका नवाब लावाको विजय नही कर सका तो संधिके लिए नवावने ठा. देवीसिंहको एक पत्र लिख कर भेजा। लावाने कुछ व्यक्ति टोंक गये और 'लावा हाऊस' टोंकमें ठहरे। यह २३ व्यक्तियोका एक समुदाय था जिसमें ठा देवीसिंह और विजयसिंहजी थे। नवावसे मिलने ठा विजयसिंह गया, जिसके साथ ११ व्यक्ति थे। ठा देवीसिंहको भी बातचीतके लिए बुलाया गया था, किन्तु वह गया नहीं। भेंट करनेके लिए जो महल चुना गया था उसके चारो ओर बारूद बिछा दी गई थी। जो दो व्यक्ति भेंटके लिए बुलाने गये थे उनमेंसे एक व्यक्ति नवावको सूचना देनेके लिए इन लोगोंको उस महलमे छोड कर चला आया। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी नवाब भेंटके लिए नहीं आया तव वह दूसरा व्यक्ति भी कुछ बहाना कर जाने लगा तो ठा विजयसिंहने उसे जाने नही दिया क्यो कि उसे इस षड्यन्त्रका कुछ कुछ आभास हो गया था। अत ठा. विजयसिंहने उस व्यक्तिको तलवारसे वहीं समाप्त कर दिया। इतनेमें बारूदमें आग लगा दी गई। वह महल उड गया और १० व्यक्ति ठाकुरके समुदायके मारे गये, एक मीना बचा, जिसने दौड कर लावा हाउसमें समाचार दिये। वहाँसे ठाकुर देवीसिंह रातोरात पैदल भाग कर लावा आये। आते ही देवलीके पोलीटिकल ऐजेण्टको सब समाचार लिखे। पोलीटिकल ऐजेण्ट, देवलीने जांच की और लावा वालोका उसे कोई दोष दिखाई नही पड़ा। उसने नवावको इस अपराधमें सजा दी और अमीरखाके पौत्रको नवाब बनाया। साथ ही स १९२३ वि में 'लावा'को टोंकसे अलग कर 'चीफशिप' नियत की। तबसे लावा भारतके स्वतत्र होनेसे पूर्व तक सीधा ब्रिटिश गवर्नमेण्टसे सबंधित रहा। देवीसिंहके पश्चात् लावाके स्वामी ठा धीरतसिंह, इनके बाद रावबहादुर राजा मगलसिंह, इसके पश्चात् राजा रघुवीरसिंह और आजकल वंशप्रदीपसिंह है।

ऊपर लिखा जा चुका है कि नरूसिंहके दूसरे पुत्र राव लाला थे। राव लालाके ऊदा (उदयसिंह), ऊदाके लाडसिंह, लाडसिहके फतहसिंह, फतहसिंहके कल्याणसिंह और कल्याण-सिंहके तीन पुत्र हुए, रणसिंह, आनदसिंह और अजबसिंह। कल्याणसिंह मिर्जा राजा जयसिंह

(आमेर)के पुत्र कीर्तिसिंहके पास रहते थे। सम्राट औरगजेवके समयमें कुवर कीर्तिसिंहके साथ कई युद्धोमें कल्याणसिंहने अपने पराक्रमका अच्छा परिचय दिया, जिससे प्रसन्न हो कर सम्राट औरगजेवने इनको 'राजा'का पद और कुछ गाँव जागीरमें दिये। कुवर कीर्तिसिंहके परलोकगमनके पश्चात् नि सहाय और दुर्दशाग्रस्त हो कर आमेर आये। यहाँ इनको रावकी उपाधिके साथ माचेडी नामक ग्राम जागीरमें मिला, इसके साथ ही डेढ ग्राम और मिला। इस प्रकार कुल ढाई ग्रामकी जागीर मिली। कल्याणसिंहके पश्चात् इसका उत्तराधिकारी आनदसिंह हुआ। आनदसिंहका तेजसिंह, तेजसिंहका मुहब्बतसिंह, और मुहब्बतसिंहका उत्तराधिकारी प्रलयसिंह हुआ। यह प्रलयसिंह वडा पराक्रमी, कुशल, साहसी एव महत्वाकाक्षी था। इसने ही अलवर राज्य स्थापित किया। इसका वृत्त इस प्रकार है कि जयपुरके तत्कालीन महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथमसे इनकी किसी वातमे अनवन हो गई। यह अपनी ढाई ग्रामकी जागीर माचेडी छोड कर भरतपुरमें जवाहरसिंह जाटके पास चले गये। वहाँ कुछ समय रह पाये थे कि जयपुरकी सीमामें विना पहिले सूचना दिये चले आनेके कारण जवाहरसिंह जाट और सवाई माधवसिंह प्रथममें मांवडेके मैदानमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें प्रतापसिंहने अपनी सेना सहित जयपुरका साथ दे कर वडा पराक्रम प्रदर्शित किया, जिससे महाराजने प्रसन्न हो कर माचेडीकी जागीर वापिस दे दी। महाराज सवाई प्रतापसिंहसे फिर इसका मनमुटाव होगया। इस कारण महाराजने फिर माचेडीसे निकाल दिया। अव यह सीधा देहलीके वादशाह शाहआलम द्वितीयकी शरणमें गया। शाहआलमने इसका अच्छा आदर-सत्कार किया। उसने स १८२७ वि में महाराव राजाकी पदवी, पच हजारी मनसव और शाहीमरातवके साथ माचेडीकी सनद कर दी। जिससे जयपुरसे स्वतत्र होनेका अवसर प्राप्त हो गया। फिर इसने समय पा कर जयपुर और भरतपुरके परगने दवा लिये, और स १८३२ वि में भरतपुरसे युद्ध कर अलवरका प्रसिद्ध और परगना भी छीन लिया, इसके पश्चात् अपनी राजधानी माचेडीसे अलवरमें बनाली। यह स १८४७ वि में नि सतान मरे, अत थाना ठाकुरके पुत्र वख्तावरसिंह गोद आकर उत्तराधिकारी हुए। राज्यासीन होनेके पश्चात् वख्तावरसिंह तत्कालीन जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंहके पास जयपुर आए और जयपुर राजके दवाए हुए ग्रामोको महाराजको भेंट कर दिया जिससे महाराज बहुत प्रसन्न हुए। स १८६०में अग्रेजोको युद्धमें सहायता देनेके उपलक्षमें अग्रेजोंसे कई परगने राजा वख्तावरसिंहको प्राप्त हुए और इनके समयमें अग्रेजोंसे सन् १८०३ ई में सधि हुई थी जिसमें वार्षिक करका वन्धन नही रखा गया। इनके पश्चात् स १८६१ वि मे इनके पुत्र विनयसिंह सिंहासनासीन हुए, जिन्होने द्वितीय लावा युद्धमें सहायता भेजी और सन् ५७ के गदरमे अग्रेजोकी अच्छी सहायता की। इनके स्वर्गवासी होने पर इनके पुत्र शिवदानसिंह स १९१४ वि में सिंहासनारूढ हुए। इनके पश्चात् स १९३१ वि में मगलसिंह राजा हुए। मगलसिंहके पश्चात् स १९५९ में प्रसिद्ध जयसिंह गद्दी पर वैठे। ये वडे विद्वान्, प्रभावशाली एव राजनीतिज्ञ थे। सन् १९३१ ई की गोलमेज परिषदमें इन्होने निर्भीकता-पूर्वक अपने विचार रक्खे, जिसके कारण अग्रेज सरकार इनसे नाराज हो गई और यह अलवर

छोड कर यूरोप चले गये, जहाँ पेरिसमे इनका देहान्त हो गया। इनकी मृत्यु पर अग्रेज सरकारने महाराज तेजसिहको इनका उत्तराधिकारी नियत किया, जो वर्तमान है।

इस पुस्तक 'लावारासा'से सवधित नरूकावशीयोका परिचय उक्त पंक्तियोमें दिया गया है। जयपुर और अलवर प्रान्तमें कई नरूके कई ठिकानेदार और भोमियों है। ये स्वभावसे ही राजपूत गौरवानुकूल, शूरवीर, दृढप्रतिज्ञ, पराक्रमी एव उदार हुए हैं। इनकी कीर्तिपताका आज भी इनके कार्यकलापोंके कारण फहरा रही है। यहाँ तक कि नरूकोका वच्चा वच्चा भी "पद्धरका वादशाह" और "तीसरे तख्तका स्वामी" कहलाता है। यह प्रसिद्धि क्यो हुई इसकी अभी शोध ठीक ठीक नही हो पाई है। कोई इन्हें 'पारखके' कोई 'पाधरके' और कोई 'पद्धरके वादशाह' कहते हैं। मुझे चारणो आदि कई व्यक्तियोंसे जानकारी हुई है वह इस प्रकार है। कितने ही कहते हैं कि वर्रासिहने कलाधर झालाको उसकी ही कटारीसे मारा था, अत ये "पारखके वादशाह" कहे जाते है। 'पारख' का अर्थ डिंगलमें तरवार है, पारखी छुरी, कटारीको कहते है। निहत्थे और विवश वर्रासिहने अपनी प्रत्युत्पन्न वुद्धि और कटारी चलानेकी कुशलतासे यह प्रसिद्धि प्राप्त की हो तो नि सदेह 'पारखके वादशाह' कहलाने योग्य उनका यह कार्य था। कुछ यह कहते है कि वर्रासिहने निर्वाण चौहान वीसलदेवकी पुत्रीसे–जिसका संवध वर्रासिहके साथ करनेके लिए टीका आया था और पिता राजा उदयकर्णसिहके यह कहने पर कि यदि हम भी जवान होते तो टीका हमारे लिए भी आता, उस कन्याको मन ही मन माता मान कर पितासे विवाह करा कर उस कन्याकी सतानोंके लिए राजसिहासनका परित्याग कर अपनी पत-मर्यादाका पालन किया। इसलिए वह पद्धरका वादशाह कहलाने लगा। 'तीसरे तख्तके स्वामी'के लिए यह कहा जाता है कि निर्वाण चौहान वीसल देवकी पुत्रीसे राजा उदयकर्णसिहके दो पुत्र थे। वडे नृसिह और छोटे वालोजी। नृसिह आमेरके स्वामी हुए। वे वच्चे ही थे। कलाधर झालाके मारे जानेके पश्चात् आमेरराज्यके भाई वेटोने (वर्रासिहके अतिरिक्त) आमेर राज्यके तीन वरावर विभाग कर तीनो भाइयोमें वटवा दिये। आमेरके स्वामी नृसिह रहे, वालोजी अमरसरके और तीसरे विभागके स्वामी वर्रासिह हुए। तवसे तीसरे तख्तके स्वामीका सवंध इनके और इनकी सतानोंके साथ किया जाता है। कुछ लोग यह कहते है कि किसी मुगल सम्राटने किसी नरूका सरदारसे प्रसन्न होकर "पद्धरके वादशाह और तीसरे तख्त" की उपाधि दी थी। एक सज्जनसे यह भी सुना कि सम्राट अकवर एक वार महाराणा प्रतापसे जगलमे एक एकान्तमें पत्थर पर वैठे हुए वातचीत कर रहे थ, उस समय कोई नरूका सरदार उधरसे आ निकले। वह वड़े निर्भीक, वीर और तरवार चलानेमें वहुत कुशल थे। सम्राट अकवरने उनका यह कहकर स्वागत किया "आवो 'पारख के पादशाह,' विराजो", नरूका सरदारने कहा कि आप दोनों सम्राट तो अपने अपने तख्त पर विराजमान है मेरे लिए स्थान कहाँ है। इस पर सम्राट अकवरने उसे एक पत्थरकी ओर इशारा करते हुए कहा कि आपके लिए भी यह तख्त है। इन वातोंको देखते हुए कुछ कहा नही जा सकता कि सत्य क्या है? यह विषय

शोधकी अपेक्षा रखता है। अस्तु, कुछ भी हो यह प्रसिद्धि तो इन नरूकोके साथ है ही।

नरूका वशीय राजपूत, राजपूतोमें प्रसिद्ध वीर, पराक्रमी एव साहसी हैं। इनके सत्साहसे व वीरतापूर्ण कार्योंके कारण कई कहावते इनकी प्रशसामे प्रचलित हो गई है। उनमेंसे ये दो अत्यन्त उच्च कोटिकी हैं—

(१) "नरूकैको नरूका मारै, और कै मारै करतार।"

(२) "नरूको कटारी न्याय वाधे, तखतका धणीसू तोड सांधै।"

वास्तवमें इन नरूकोके यशका वर्णन कई कवियोने कई प्रकारसे कर मां भारतीकी सेवा की है। प्रस्तुत ग्रथ "लावारासा" में वर्णित प्रसगोके समय पिंडारी व पठान दस्युओंके आतकमे राजस्थान वडी ही डावाडोल स्थितिमें हो गया था। स्थान स्थान पर राजस्थानीय जनताके जानमालकी वहुत ही हानि हुई थी। इन दस्युओका दमन करनेकी शक्ति उस समय किसी भी राजस्थानीय रियासतमें नही थी। ऐसे विकट अवसर पर इन नरूकाओने स्थान स्थान पर, केवल अपने वाहुवलसे, इन क्रूर दस्युओंसे मुकावला कर जो वीरत्व प्रदर्शित किया है, वह प्रशसनीय एव गौरवयुक्त कैसे नहीं कहा जा सकता? उस वीरत्वने कवियोकी वाणीको जनताकी ओरसे कृतज्ञता ज्ञापन करनेके लिए वाध्य कर दिया। परिणामस्वरूप नरूकोकी प्रशसामें स्फुट छदो और प्रबध ग्रथोका निर्माण हुआ। 'लदाना' (माधोराजपुराका घेरा) और द्वितीय लावा युद्ध विषयक वर्णन अन्य कवियोके भी प्राप्त हुए हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय दे देना अप्रासगिक न होगा।

सवत १८७४ वि०में (लदाना युद्धकी समाप्तिका वर्ष) महाकवि श्रीकृष्ण भट्टके प्रपौत्र महाकवि मडनन २१५ छदोमें (दोहा, सवैया, कवित्त, चौपैया, झूलना, अड्डिल्ल, पादाकुलक और सारग) "भारतचरित्र"का निर्माण किया था। इसमें सर्वप्रथम चौपैया छदम जगदम्बाकी स्तुति की गई है। फिर रवि कुलके वंशक्रममें प्रसिद्ध प्रसिद्ध रघुवशियोंके नाम देते हुए, इस कुलमें नरूसिंहका जन्मवर्णन दे कर भारतसिंहके पूर्वजोके नाम प्रशसा सहित दिये गये है। कविके अनुसार उनका क्रम इस प्रकार ह— नरूसिंह, दासा, करमचंद, सैसमल, कान्हासिंह, केशवदास, उग्रसिंह, रघुनाथ, अजवसिंह, मुकुदसिंह, केसरीसिंह, सावतसिंह, मदनसिंह, और भारतसिंह। भारतसिंहकी प्रशंसाके पश्चात्, लावा युद्धमें जो भारतसिंहने पराक्रम दिखाया था उसका वर्णन दिया गया है। इसके पश्चात् क्रमसे भारतसिंहका माधोराजपुराके किलेको, महाराज स जगतसिंहकी महारानीसे, जो महाराज मानसिंहकी पुत्री थी, छीन कर अपने अधिकारमें करना, महाराज मानसिंहका अमीरखाको किला वापिस दिलानेके लिए लिखना, अमीरखाका भारतसिंहको किला वापिस दे देनके लिए लिखना, भारतसिंहका अवसर पा कर अमीरखाके वीवी वच्चोको पकड कर माधोराजपुरेके किलेमें ला कर

रखना, अमीरखाकी चढाई और किलेको घेरना, नरूके राजपूतोका स्थान स्थान से आ कर इस युद्धमें सम्मिलित होने आदिका वर्णन दे कर कविने युद्धवर्णन, अरि पलायन वर्णन, प्रतापवर्णन, सुयशवर्णन, हयवर्णन, गयवर्णन, तरवार वर्णन, दानवर्णन, दिनचर्या वर्णन, आशिर्वाद और ग्रथ निर्माण वर्णन दे कर, ग्रथ समाप्त किया है। पाठकोके रसास्वादके लिए इस ग्रथके कुछ उद्धरण देना अनुप्रयुक्त न होगा।

॥ श्रीगणेशायनम. ॥

अथ भारत चरित लिख्यते। तहाँ प्रथम मगलाचरण।

छद चौपैया

जगदम्ब भवानी, सब जग जानी, रगभरी सरसानी ;
नित सुखसो सानी, रहत अमानी, ब्रह्मवखानी, रानी।
सबकी है कारन, दीखत पार न, वैरिन फारन गानी ,
सुख सपति सरसै, सब गुन बरसै, देवनने मन आनी॥
मुंडलकी माला, सोहत आला, सिंघ विसाला चढ्ढी ,
देवनके तारन, रक्कस मारन, तरल तेग जिहि कढ्ढी।
हाथिनकी छाला, वसन रसाला, नैन महा मद मढ्ढी ;
सेवकको सुदर, करन पुरदर, दैन अभय वर पढ्ढी॥
नैननमें ज्वाला, रहत उजाला, तीन भवन प्रतिपाला ;
आनदकी साला, प्रगट विलाला, जगमगात ससि भाला।
सुदर मुख सोहे, मनकू मोहे, हार मुकत भरि थाला ,
सापन के गहने, अगन रहने, भगत इच्छको ढाला॥
जा विन कोई, पहिले होई, महाकालकी प्यारी ,
अगनकी सोभा, मनकी लोभा, कोटिन ससि उनिहारी।
मौसनके परवत, खात सु सरवत, पिवत रुधिर रस भारी ,
वेदनमें राजे, सब गुन छाजै, कोटिन रवि छवि धारी॥
ऐसी यह वानी, चरित अगानी, कवि 'मडन' मुख आई ,
पारथ सम भारत, को भरि आरथ, चरित सुभग वनवाई।
रसमय धरि बाते, जीति सुनाते, छदवद छवि छाई ,
भल आफताव, महताव प्रतापहि, सुजस जगत सरसाई॥१॥
सग रजा महमद अकव्वर औ महताव फजल्लहि गायो,
सेर महा जमसेर, आखूनहि आदि जमैयतसो सरसायो।
सोवनकी दिय मार, धमाधम केते दिनान लो वव वजायो,

भारथ तेग नचाइके 'लावा' सो वीर-खांमीरखां मारि चलायो ॥५४॥
जासो सदा अगरेज डर्‌यो करे, मीरखांसो निज सेन सजाई,
घेरा दियो चढि आइके लावाके गोलनकी बरछार देखाई।
'मडन' हल्ले किये कितने जहाँ भारथने तहाँ तेग नचाई;
काटि पठाननके गन सभुको मुडकी माल गरे पहराई ॥५५॥
कोइ न जिनके लखे न नख नैननसो, तिनको मिले न अब पैन्हनको तनिया।
सोती सुख सेजनपै सदा अब भूखी भई, फिरत है देखती दुकाननमें बनिया।
'मडन' महीन्द्र राव मदनके भारतने, कीनी है कितेकनको हूर हूर कनिया।
दुखनसो छाय घर जाय जाय दुनियेंाके, पनिया भरन लागी सबै तुरकनिया ॥१५२॥
यह भारतको चरित मे, कीनो मति अनुसार। भूलचूक जो होय सो, लीजौ सुकवि सुधार ॥२०७॥
राजकाज सगरो लिख्यो, सबै जुद्धकी रीति। जग जीति 'मडन' कही, भरथसो कर प्रीति ॥२०८॥
कह्यो अरिनको नास यहाँ, कह्यो तेगको ताव। जस प्रतापके सग सब, कह्यो रैनको भाव ॥२०९॥
कही फौज सब गढ कहे, मृगिया कही उदार। हाथी हय हाजर कहे, कह्यो नाच रगधार ॥२१०॥
दसरथ नृप सुत रामसिय, दोउनको रँगरूप। 'मडन' कविने सब कह्यो, लिखिकै छद अनूप ॥२११॥
नोऊँ रस यामें धरे, लखि है रसिक सुजान। नखसिखसो ईहि ग्रथमें, लिखि भारथके गान ॥२१२॥
सब विधिसो सगरे चरित कहे ग्रथ बधि जाय। ताते यह सछेपसो लीनो ग्रथ बनाय ॥२१३॥

आशिर्वादवर्णन कवित्त

आगे को हमेस बेस जगनके जीतिबेके, हाथिनके सीसपे निसान चढिबो करो।
कचनसो मोती मनि मानिककी सपत्तिसौ, मुलक औ मवास मढिबो करो।
"मडन" असीस दैकै मानी मानि मोज लैकै, गढि गढि छदनके बब पढिबो करो।
गगा सम सुजस समेत राव भरथको, रैन दिन प्रबल प्रताप बढिबो करो ॥२१४॥
सवत दस सत आठ सत, चोहोतर सावन मास। सुदि तृतियाके दिन कियो पूरन चरित प्रकास॥२१५॥
इति श्रीमद्विद्वत्कुल चूडामणि कविकलानिध्यपरनाम श्रीकृष्णमहात्मज कवि सरस्वत्यन्याभिधेय द्वारिकानाथ सूनू कवि व्रजपाल तनय देवर्षि वर मडन कवि विरचित भारत चरित्र सम्पूर्णम्।

दूसरे ग्रथमें लावाके द्वितीय युद्धका वर्णन लावानरेश मगलसिहके समयमें अलवर रियासतके गूजूकीके निवासी बालावक्स कविने 'नरूकुल सुयश' नामसे १३४ झमाल छदमें किया है। इस छोटेसे ग्रथमें कवि, मगलसिहका यशवर्णन करनेके हेतु जगदम्बाकी प्रार्थना करता है। तत्पस्चात् लावाके बाहर तलावके किनारे शिव मदिरका वर्णन, करणसिहकी पूजा, एक मुसलमानका मदिरमें जूते पहिने आने, करणसिहका उस पर कटारीसे आक्रमण करने, मुसलमानका करणसिहकी तलवारसे मारेजाने, इस घटनाके समाचारका लावा पहुँचने, और वहासे कुछ सुभटोंके आने और मुसलमानोको मार डालने, एक बालकका बच-कर टोक जा कर वजीरुद्दौलाको पुकारने, और उसके लावा पर चढाई करनेका कविने वर्णन किया है। इसके बाद कविने टोकके हाथी, घोडे और सेनाका, लावाके वीरोका,

इस युद्धमें सहायताके लिए जो आये उनके नाम, उणियारे और अलवरकी सहायताका और उनका युद्धवर्णन दे कर अतमें मंगलसिंहकी प्रशंसामें ग्रंथ समाप्त किया है।

अब अंतमें यह सूचित कर देना उत्तम होगा कि इस ग्रंथके पृ० ६ के छन्द संख्या ३४ में, पृ० १३ के छंद संख्या ४३ में, और पृ० २३ के छद संख्या ३५ में जो स्थान रिक्त दिखाये जा कर पदोंकी अप्राप्ति दिखाई गई है वह ठीक नहीं है। वास्तवमें मेरे पास जो हस्तलिखित प्रति थी उसमें दोहा, सोरठा, और छप्पय छंदके अतिरिक्त पद्धरि, मोतीदाम, भुजंगप्रयात आदि छदोंके दो दो पदों पर ही छद संख्या दी गई है। यह मुझे ठीक मालूम न होनेके कारण छदशास्त्रानुसार छंदके चार चार चरण ले कर मैंने पदो पद छंदकी संख्या दी। इस प्रकार करनेसे इन छदोमें कहीं बाद एक चरण कम हो गया, मैंने यह समझा कि प्रतिलिपिकारकी भूलसे यह चरण लिखनेसे रह गये है, अत भविष्यमें दूसरी प्रति मिलने पर ठीक कर सकने के लिए रिक्त स्थान दिखला कर पद कमीकी सूचना दी। किन्तु पुस्तक प्रेस में चले जाने और मुद्रित हो जाने पर श्रद्धेय मुनि श्री जिनविजयजी महाराजको, लावारासाकी एक अन्य प्रति श्रीयुत ठा० सौभाग्यसिंह जी, भगतपुराके सौजन्यसे प्राप्त हुई, उसे देखने पर सब समझमें आ गया। कविने मोतीदाम, पद्धरि, भुजंगी, निसाणी आदि छदोंके १०–१२–१४ जितने भी पद बनाये उनकी एक ही छद संख्या दी है। अत- अन्य प्रतिके अभावमें यह जो भूल हो गई उसके लिए पाठक क्षमा करेंगे।

इस ग्रंथ 'लावारासा'में शब्दार्थ व टिप्पणियोंके देनेमें मुझे स्वर्गीय श्रद्धेय हिंगलाजदानजी सेवापुरा वालो तथा श्रद्धेय बारैठ मुरारीदानजीसे पूर्ण सहायता प्राप्त हुई है। दूसरे शब्दोंमें यह कहा जाय कि यह कार्य इन्ही दोनो महानुभावोका है तो भी कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। मैं तो आप दोनों महानुभावोंकी कृपाके लिए सदा ही कृतज्ञ रहूँगा। इसके अतिरिक्त ग्रंथ की भूमिका लिखनेमें श्री हेनरी टी प्रिंसेप साहबके अमीरनामेके अंग्रेजी अनुवाद, ठा नरेन्द्रसिंहजीके Thirty decisive Battles, मुन्शी देवीप्रसादजीके "आमेरके राजा" श्रीहनुमान शर्मा चौमूके "नाथावतोंका इतिहास" श्री रामनाथ रत्नूके "इतिहास राजस्थान," और श्री असगरअली आवल्के "तवारिखे महमूदाबाद"से सहायता ली गई है। अत- इन महानुभावोंका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। भूमिकाके संशोधनमें श्रद्धेय श्री मुनि जिनविजयजी महाराजका पूर्ण हाथ रहा है तथा पुस्तकके प्रुफ संशोधन और संपादन कार्यमें उचित परामर्शके लिये श्री पुरुषोत्तम लालजी मेनारीया, साहित्यरत्न और श्री गोपालनारायणजी पारीक एम ए का पूर्ण आभारी हूं।

वास्तव में, प्रस्तुत ग्रन्थको, इस रूपमें प्रकाशित करने-कराने का सब श्रेय श्रद्धेय मुनिजी महाराज श्री जिनविजयजी को है जिनने **राजस्थान पुरातत्त्व ग्रन्थावलि** द्वारा इसका प्रकाशन करना स्वीकार कर, और समय समय पर कई प्रकारकी प्रेरणाए दे-कर, मुझे प्रोत्साहित किया। मैं इसके लिये, अन्तमें पुन· मुनिजी महाराजके प्रति अपना अनन्य कृतज्ञभाव प्रकट करता हू।

–महताब चंद्र खारैड़

कविया गोपालदान विरचित

कूर्म वंश यश प्रकाश

अपर नाम

लावा रासा

—०—

दोहा

अलिक इदु कुजर तुचा, मुडमाल वपु छारि ।
अहि भूषन बिजया भखी, जय जय जय त्रिपुरारि ।।१।।
किये नरूकन किलम भिरि, किते जुद्ध उन्मत्त ।
प्रथम 'मान' 'जगतेश'की, कहू केलि कलहंत ।।२।।
जग प्रसिद्ध 'जयसाह' नृप, तिनके 'मधव' नरेश ।
'माधव'के 'परताप' नृप, पातिलके जगतेश ।।३।।
उठी 'मान' पति जोधपुर, जैपुर-पति 'जगतेश' ।
पर्‌यो बेध नृप दुहुन उर, हिय कपिय दुहु देश ।।४।।

---

१. अलिक = अलीक, निश्कलंक । कुंजर = हाथी । तुचा = त्वचा, चमड़ा । छारि = राख । बिजया = भंग । भखी = खाने वाले ।

२. नरुकन = नरुके राजपूत । किलम = कलमा पढ़ने वाले मुसलमान । भिरि = भिड कर । मान = जोधपुर नरेश मानसिंह राठौड़ जिन्होंने सं० १८६० से १९०० तक राज्य किया । जगतेश = जयपुरेश जगतसिंह कछावाह जिन्होंने सं० १८५८ से १८७४ तक राज्य किया । कलहंत = युद्ध ।

३. जयसाह = सवाई जयसिंह जिन्होंने जयपुर बसाया और अनेक स्थानों पर ज्योतिष यन्त्रालय बनाए । मधव = महाराजा माधवसिंह प्रथम जिन्होंने सन् १८०७ से १८२४ तक राज्य किया । पातिल = महाराजा प्रतापसिंह व्रिजनिधि कवि ।

४. उठी = उस तरफ । बेध = शत्रुता ।

चाँपावत पोकरण-पति, प्रबल 'सवाई' खिज्ज ।
बदल चढ्यो नृप मानसो, बह्यो कलहको विज्ज ।।५।।
कलह बिज्ज ता दिन बह्यो, लारां 'धूकल' लाय ।
आनि मिल्यो 'जगतेश'सूँ, यम जुध करिय उपाय ।।६।।
साम दाम छल-छिद्र करि, नृप हिय रुचि उपजाय ।
मनहु मेघ बसि बात मडि, चढ्यो कच्छ-कुलराय ।।७।।
चढ्यो सुनत 'जगतेश'को कही 'मान' यह वत्त ।
हय फेरहि कछवाह धर, जीति करहि अपदत्त ।।८।।

छंद नाराच

चढ़यो नरिन्द मानय, उदै दिशा प्रयानय ।
मनो समुद्र ऊझले, रठौर आनि के मिले ।।९।।
वजे निशान नद्दवं, मनो कि घोर भद्दव ।
उछाह जुद्धको बढ्यो, कनोज-ईश लो चढ्यो ।।१०।।
सुभट्ट सख्ख सक्खर, लसग लक्ख पक्खर ।
धरा अडोल डुल्लयं, गजू निशान खुल्लयं ।।११।।

---

५. पोकरणपति = पोकरण (मारवाड़) के स्वामी सवाईसिंह । खिज्ज = क्रोधित होकर । बदल = खिलाफ होकर । बह्यो = वोया गया । विज्ज = वीज ।

६. लारां = पीछे । धूंकल = धोंकलसिंह जिनको जोधपुरकी गद्दीका हकदार बनाकर युद्ध हुआ । यम = इस प्रकार ।

७. वात = हवा ।

८. वत्त = वात । हय = घोड़ा । अपदत्त = अपदस्थ, अपमानित ।

९. उदै दिशा = पूर्व दिशा । ऊझले = उझलना, उफणना, मर्यादा छोड़ना ।

१० नद्दवं = नाद, शब्द । भद्दवं = भादपदके मेघ । लों = इस प्रकार । कनौज ईश = राठौर पति मानसिंह ।

११ सख्ख, सक्खर = श्रेष्ठ शाखाके । लक्ख = देख कर । पक्खरं = पाखर । गजू = हाथियोंके ।

रजीनि भान रुक्कयो, मनुऽधकार मुक्कयो।
विछोह चक्क चक्कयं, अनेक बीर बक्कय ॥१२॥
बिमान व्योमतै भुरै, अनेक रंभ उत्तरै।
महेस मुंडमालको, चल्यो करीनि खालको ॥१३॥
असोम जंत्र लै मुनी, अलापि बीरकी धुनी।
मनूक बालकों गुडी, अनेक ग्रद्धनी उडी ॥१४॥
सरव्बत चमू जुरे, परव्बत सर परे।
उडीक मान कै पती, चढ्यो न क्यो जगत्पती ॥१५॥

दोहा

यम आगम सुनि 'मान'को, 'परबतसर' जुध थप्प।
त्रेपन तुड कछवाह-कुल, मिले आनि अप अप्प ॥१६॥
'अभयसिंह' नृप खेतडी, चढे जु दलको सज्जि।
'लिछमण' चढियो 'महणसर', पूर नगारे बज्जि ॥१७॥

छप्पय

'रायचंद' दीवान, 'रावचंदह' गोगावत।
'लछो' फतैपुर नाथ, रावराजा शेखावत॥
राजापति 'खडपुर,' 'नवल' 'दांता,' पति निड्डुर।

---

१२ रजीनि = रजसे। भान = भानु, सूर्य। मुनंऽधकार = मानो अंधकार। मुक्कयो = छूट गया हो, फैल गया हो। बिछोह = वियोग। चक्क = चकवा। चक्कयं = चकवी। वक्कयं = बोलने लगे।

१३ रंभ = अप्सराएँ। करीनि = हथनियोंकी। खालको = चमड़ेके लिए।

१४ असोम = अशांत, नारदकी वीणाका नाम। बाल = बालक। गुडी = पतंग।

१५ सरव्बतं = सब। चमूं = फौज। परव्बतं = पर्वतसर गांव। उडीक = उडीकना, इन्तजार करना। यती = इतनी।

१६ यम = इस प्रकार। थप्प = स्थापित करके। त्रेपन तुड = तरेपन शाखाओंके। अप अप्प = अपने आप।

१७ खेतडी = राजपूतानेमें शेखावाटी प्रांतका एक प्रसिद्ध नगर जिसके शासक राजा कहलाते हैं। महणसर = शेखावाटीमें ठिकानेका एक गांव।

पद्धरको पति साह 'भीम' 'उनियारे' अड्डुर ।।
'धूलो' 'झिलाय' राजावता, 'नाथावत' खागा मिले ।
जोधपुर कवन दिल्ली तखत, एक पहर बिच उत्थलै ।।१८।।

त्रेपन तुड कछवाह, साख साखारां सुभट्टा ।
हैदल पैदल मिले, यवन हिन्दु गज थट्टा ।।
'बीका' पति 'सुरतेश' आनि मिलियो मधि जैपुर ।
रहे आनि हकदार, किते गजबंध नरेसुर ।।
हैदराबाद सिंधी हुलखि, सबल जानि सरनो गह्यो ।
हुय दीन तदिन जगतेशके, मीरखान चाकर रह्यो ।।१९।।

दोहा

मीरखान चाकर रह्यो, जदन भूपके सत्थ ।
तदन बध्यो बट बीज लों, कहूस आगम कत्थ ।।२०।।

छन्द त्रोटक

जगतेश फवज्ज प्रबधु करे, भुव कपित भार दिगीश डरे ।
मन आन महीपनके प्रजरे, किनपै बसधा-पति कोप करे ।।२१।।

---

१८ लछो = लछमणसिंह सीकरके राव राजा । खंडपुर = खण्डेलेके स्वामी । नवल = नवलगढ़के स्वामी । दांतां पति = दांतां नामक ठिकाणेके स्वामी, यह जयपुरसे पश्चिम में है । निड्डुर = निडर । पद्धरपतिसाह = नरुके राजपूतोंको पाधरके बादशाह कहते हैं । उनियारे = जयपुरसे दक्षिणपूर्वमें है । धूलो = यह जयपुरसे पूर्वमें है । झिलाय = यह जयपुरसे दक्षिणमें है । ये सब जयपुरके ठिकाणोंके नाम हैं । उत्थलै = उथलना, विजय करना ।

१९ हैदल = घुड़सवार फौज । थट्टां = समूह । बीकांपति सुरतेश = बीकानेरके स्वामी सुरतसिंहजी जिन्होंने सं० १८४६ से १८८५ तक राज्य किया । मीरखान = अमीर-खां पठान, जिसको अंग्रेजोंने इस युद्धके पश्चात् टोंक आदि इलाका दिलवाकर नवाब बनाया । चाकर = नौकर । हैदराबादी सिंधी = हैदराबादी रिसाला नामक सेना दल जो रुपयेके प्रलोभनसे लड़ा करता था और लूटमार करता था ।

२० जदन = जिस दिन । सत्थ = साथ । तदन = उस दिनसे । बध्यो = बढ़ा । बट बीजलों = बड वृक्षके बीजकी तरह ।

२१. फवज्ज = फौज, सेना । आन = अन्य । प्रजरे = प्रज्वलित हुए ।

सब शत्रुनके उर शोक बढ्यो, करि कोप कठी कछवाह चढ्यो ।
अप अप्प उकीलन खत्त लिखे, जयनग्र मडोवर ईश धखे ॥२२॥
धखि लोयन कोयन खून भरे, दहुघा उन्मत्त मतग अरे ।
करि कोप चढ्यो नृप मान उठी, उमड्यो घनलो कछवाह अठी ॥२३॥
सुनि ठोर परी सदनद्दनके, परि ढिल्लिय सोर खद्दनके ।
सब सूर सनाहनि टोप सजे, लखि आतुर कातर प्रान तजै ॥२४॥
सत पच करीगन कोर बने, मनु कज्जल कूट धरागमने ।
लख तीन हय सपतासनती, रथ पक्तिनकी न भई गिनती ॥२५॥
अयुत शर ऊटन सोर भरे, शत षोडश तोप तयार करे ।
जकरे शत जोम जवान भुजा, करि मजन धूपि नवीन धुजा ॥२६॥
द्विज आनि लिखे जय जत्र जिते, पढि के शत चडिय जाप किते ।
मुख मडि सिदूरनि रत्त किये, अज एड महिष्षन भक्ख दिये ॥२७॥
जरदोजनि हेम ध्वजा सरफै, तडिता घन बीच मनो तरफै ।
ललकार मुखाँ सत जुट्टि लगी, इभ भष्षनि बाघनि सी उमगी ॥२८॥

---

२२ कठी = कहां, किस पर । उकीलन = वकीलोंको । खत्त = खत, पत्र । धखे = क्रोधित हुए ।

२३ धखि = क्रोध करके । मतंग = हाथी । उठी = उस तरफ । अठी = इस तरफ । दुहुघां = दोनों तरफ ।

२४ सदनद्दनके = युद्धके नगारे । ढिल्लय = दिल्ली । खद्दनके = मुसलमानोंके । सूर = शूरवीर । सनाह = बख्तर । कातर = कायर । ठोर = चोट ।

२५ सतपंच = पाच सौ । करीगन = हथियोंकी । कोर = किनार, पक्ति । लखतीन = तीन लाख । सपतासनती = सप्ताश्वोंके संबधी ।

२६ अयुतं शर = पंद्रह हजार । जकरे = पकडे हुए । जोम = जोश । धूपि = धूप खेकर सोर = बारूद ।

२७ अज = बकरे । ऐड = मेंडा । महिषन = भैंसे । भक्ख दिये = बलि दी ।

२८ सरफै = सर सरावै उड़ै, हिलैं । तडिता = बिजली । इभ = हाथी ।

भरि पेटिय सोर महोरह की, मछ शूकर वाघ मुखी मलकी ।
मग दीरघ तोप किती मचलै , उन्मत्त करीगन लागि टलै ।।२९।।
भिरि पाहन नालन आगि झरै, हय-पौरन भूमि दरार परै ।
सर वापिय कुप्पन सुक्क परै, थलवित्थुल नीर थलो निकरे ।।३०।।
मुनि सिंधुनि तोय ततो उछरे, डुलि दीरघ अद्रिन अंग भिरे ।
सिर सेस हजार मनी सरकी, भर पीठ कमठ्ठहुकी थरकी ।।३१।।
गजराजनि पिठ्ठि निसान खुलें, वर्षा ऋतु मानहुं सांझ फुले ।
अनु पाय पताक किते उरझे, उडि वात समूह मतै सुरझे ।।३२।।
भुव जन्तु मृगादि थके पकरै, नभ जन्तु परू थकि भूमि परै ।
उडि रज्ज धरा असमान गई, मनु भूमि पुकारन भार मई ।।३३।।
... ...
पचरग रठौरनि दिठ्ठिरिय किय आनि मुकामहि मिठ्ठरियं ।।३४।।

दोहा

किय़ो मुकामहि मिठ्ठरिय, लूटन लग्गे देश ।
'मानसिंह' 'जगतेश' दुहूँ, जुध कज चढे नरेश ।।३५।।

छंद त्रोटक

कछवाह रठोरनि कोप वढे, दुहू ओर तुरगन पिठ्ठि चढे ।
दुहुं ओर गाजो सिर ढाल खरी, चहुं ओर नगारन ठोर परी ।।३६।।

---

२९ सोर = बारूद । महोरह की = आगे की । मछ शूकर वाघ मुखी = मच्छी, सुअर और वाघके मुंहवाली तोपें । मग .... टलै = मार्गमें बड़ी २ कितनी ही तोप चल रही हैं जो मस्त हाथियोंके धक्कोंसे आगे बढ़ाई जाती है ।

३० पाहन = पत्थर । नालन = घोड़ोंकी टापमें लगा लोहा । पौरन = घोड़ेका खुर । वापिय = बावड़िये । कुप्पन = कुंए । सुक्क परे = सूख गये । थल वित्थुल नीर थलो निकरे = थलके स्थानपर पानी, और पानीके स्थान पर स्थल निकल आया ।

३१ मुनि = मान । उछरे = उछलने लगा । अद्रिन = पहाड़ । ततो = तनि, समूह ।

३२ निसान = पताका, ध्वजा । अनुपाय = बिना उपायके । मतै = अपने आप ।

३४ पचरंग = परोंसे, पंचोंमें । मिठ्ठरियं = मीठड़ी नामक गांव ।

३६ नगारन ठोर परी = नक्कारों पर चोट पड़ने लगी ।

दुहु श्रोर बनी चतुरग अनी, दुहु श्रोर करीनकि कोर बनी ।
दुहु श्रोर पताकनि पक्ति खुली, दुहु श्रोर हलाहल कोर हली ॥३७॥
दुहु, श्रोर उदग्गनि खग्ग किये, दुहु श्रोर तुरगन वग्ग लिये ।
ठननं किय कुजर घट सुनि, घनन किय पक्खर श्रंट घनि ॥ ३८ ॥
हनन किय श्रातुर होय हय, भनन किय भेरि भयान भय ।
खनन किय खापन खग्ग तजी, सनन किय गिद्दनि पख सजी ॥३९॥
भननं किय भाभर रभ भुरे, रनन किय तत्थ रठोर मुरे ।
तिह ठोर रठोर अनी बदले, जगतेश नरेशहु श्रांनि मिले ॥४०॥

दोहा

मानहु कुलटा श्रानरत, निज पति निबल निहारि ।
सकल मिले जगतेशसू, एक कुचामनि टारि ॥४१॥

छंद पद्धरी

जुट्टे न मान राजान जग, नच्चे न भूत बैताल सग ।
बज्जी न तेग तुट्टे न बाढ, गज्जे न तोप मानहु श्रषाढ ॥४२॥
बक्के न बीर श्रारान श्राय, छक्के न श्रोन जोगनि श्रघाय ।
खापन उखारि बाही न खग्ग, भोकी न तेग ताजी न बग्ग ॥४३॥
बज्जे न जत्र मुनि मेक तार, अच्छर अनेक गई निराधार ।
घायल असाद्धि डोले न घुम्मि, सानीन श्रोनते रग भूम्मि, ॥४४॥

---

३७ अनी = फौज । कोर = पंक्ति ।
३८, उदग्गनि = ऊँचे । खग्ग = खड्ग । बग्ग = बाग, लगाम । अंट = आंटिये, कड़ियें ।
३९, खापन = तलवारका म्यान ।
४० तत्थ = वहाँ । मुरे = मुड गये, बदल गये ।
४१ कुचामनि = कुचामन वाले, कुचामन जोधपुरमें एक ठिकाना है ।
४२ बाढ़ = तलवारकी धार ।
४३ आरान = युद्धमे । छक्के = तृप्त होना । बाही = चलाई । ताजीन = घोड़े ।
४४. मेक = एक । असाद्धि = असाध्य । सानी = सानना, भीगोना, गीला करना ।

दोहा

तत्ती तोप न 'मान' किय, लिय न खग्ग जमदढ्ढ ।
पूगो मुसकल जोधपुर, गढ़ चढ़ पकर्यो गढ्ढ ॥४५॥
लगो लैर कूरम कटक, मानुह सिंधु हिलोर ।
किय 'धूंकल' नागोरपति, दियो जोधपुर जोर ॥४६॥

छप्पय

मास त्रिगुन मोरचे, जगै मडोरहि मंडिय ।
करि मुरधरा विरान,'मान' भुव हुकम उचंडिय ।
दे 'धूंकलं' नागोर, थान थाना अप थप्पिय ।
मानव पगा मिलाय, पहुमि राठोरन अप्पिय ।
नृप मान रह्यो तप बल तदन, धर्म रठोरन हारियो ।
जोधपुर हूंत जगतो नृपति, फिरि जयनग्र पवारियो ॥४७॥
तोरन कलश पताक, तानि वित्तान घरोघर ।
राजा द्वार उद्दार, इद्र आगार सरोभर ॥
हाटकमय आवास, जटित मानिक मोताहल ।
दर परदे जरदोज, सयन अतलस्सां मुखमल ॥
खुलि यंत्र यंत्र धारा चलित, मिलि कपूर केशर मलय ।
शीतल सुगध आनदमय, मद मद मारुत चलय ॥४८॥
भूपति चित भामनी देह दामनि धरि दंभनि ।
मानहु कामनि काम, रंभ लाखि होत अचभनि ॥
मिलि समूह गायनी, गमन उनमत्त करीसम ।
खरी भूप वसिकरन, आनि सब इद्र परी सम ।

४५. तत्ती = गर्म । जमदढ्ढ = कटारी ।
४७ उचंडिय = हटाकर । अप = अपने ।
४८ यंत्र यंत्र = फंवारे, फंवारे ।

बीणादि मधुर इत्यादि बर, सुखद लाय ध्वनि सुर्च्छना ।
पंचम निषाद सगीत मिलि, ग्राम ताल सुर मुर्च्छना ॥४९॥
लक लचकि कुच उचकि, नृत्य गति वक्र सरल चलि ।
डुलि कुडल चख चलित, उरझि कुँत्तल हारावलि ॥
अग उलटि पट पलटि, कवु ग्रीवा करि बकित ।
थृंग थृंग ततथेय, बजत मजीरनि सकित ॥
मुर पच अष्ट वय भेद तिय, पच भावदश हाव युत ।
दपति प्रवीन रति कोक विधि, दिन छिनदा सभोग रत ॥५०॥
नहि मडै दरबार, रहत भूपति अतहपुर ।
कूरम दल वित्थुरिथ, गमन अप अप्प घरोघर ॥
मद आसव उनमत्त, कमठ-कुलपति कामासय ।
'रसकपूर' वस भयो, एक रस उर अभ्यासय ॥
यम सुनिय वत्त पति जोधपुर, जैपुर पति नन सज्जियो ।
नृप मान तदन अवनिय अदन, मीरखान मत्री कियो ॥५१॥
कपट द्रोह करि किलम, प्रथम मारुस्थल लुट्टिय ।
वहुरि आन नागौर दगै 'स्वाई' सिर कट्टिय ।
तज 'धूकल' नागोर, मान-भय मानत भग्गो ।
भयो तदन दमजोर म्लेच्छ असमानह लग्गो ॥
नृप 'मान' बधु हुई मानकथ, किलम कुप्पि कीनो कह्र ।
करि बद्ध प्रवल चतुरगनै, फिर लूट्टिय ढूढार धर ॥५२॥

इतिश्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपाल दान विरचिता मान जगतेश विरुद्ध प्रथम प्रसग समाप्त ।

---

५० मुर पंच अष्ट वय = तीन पांच आठकी ऊमर वाली, षोडषवर्षीय बाला ।

५१ रसकपूर = जगतसिंहकी वेश्याका नाम । अवनिय = पृथ्वी, राजधानी । अदन = अदिन, बुरे दिन ।

५२. कथ = बात । कह्र = गजब ।

लावा युद्ध

दोहा

एम मान जगतेशको, वरन्यो सुगम विरुद्ध ।
लर्‌यो प्रथम लावै किलम, जिहि विधि वरनूं जुद्ध ॥१॥

छन्द पद्धरी

जगतेश भूप रनवास रत्त, दल जोरि किलम आयोऽनुमत्त ।
प्रज्जानि दयो दुख एक साथ, सब लूटि लिये रिपु करि अनाथ ॥२॥

उतपात असुर किन्ने अपार, सम करी भूमि प्रज्जारि छार ।
लघुपुर निवास रहबे न पाय, सब दीन वसे गिरि दरिन जाय ॥३॥

द्विज संत वनिक वृत कियो छीन, सुरभी समहू रिपु घेरि लीन ।
हिरनाक्ष जेम कीनी हैरान, वह्बे न दई भू भइ बिरान ॥ ४ ॥

प्राकार ईश तज कै गुमान, भर दंड मिले सब आनि आन ।
कामांध भूप किय वधिर कान, सब देश भयो चल दल समान ॥ ५ ॥

निज थान थान थाना जमाय, अपनाय भूमि दृढ करत पाय ।
यम करत उपद्रव खलकुलीक, आयो निशक 'लावा' नजीक ॥६॥

दोहा

सग प्रबल चतुरगनी, तुपक तोप तम्माम ।
येम असुर 'लावा' निकट, किनू आनि मुकाम ॥७॥

---

४. बह्वे=कृषि करना, खेत जोतना ।

५. चल दल=पीपलके पत्ते ।

६. खल कुलीक=दुष्ट वंशवाला । नजीक=नजदीक, पास ।

दवावैत

जिस बखत मीरखान, अहलकार दिल मालीक बुलवाये, बड़े बड़े मीरजादे, अपने डेरूसे चलि आये ।, कमर्दीखान; जाफरीखान, मीरजहान मीर, असमानखान, यकतारखान, तत्तार कर्नल जमसेर, बाई दस्त बांई फिर दाहनी दस्त समसेर । उसके बीच मीर मन्नु अरज गुजराई, इस किल्लेमें बहुत सी मालियत बतलाई । अपनी फौजका भय मान, इन रजपूतोंको जबरदस्त जान इन गाऊके बकाल, जिसके ये हाल हवाल । तमाम इस किल्लेमे आया, जिससे अपना है दाया । हुक्म हौ इससे मामला ठहिरावैं, हुकम होय फजर किल्ले गरदावैं । जिसवक्त बोले मीर मुल्ला नवाबके चच्चा, बहुत सच्चा, मामले ठहिरायबेकी बात सच्ची, किल्ले गदरायबेकी बात कच्ची, ये हिन्दु कछवाहे कौम नरुके, देग तेगके मुद्देमे साबत कहू न चूके, कल्लके रोज नारनोलके चाले द्वादस हजार सैयद* साभरके खेत आये जिसपैं आमेर वा जोधपुरके महाराज दोऊ सल्लाह करि जग करिबेको चलाये । हिन्दु मुसलमानके तीन पहर तलवार चल्ली, आफताबका तेज मंद हुआ बारूदकी धूमसे रात

दवाबैत=यह एक गद्यका प्रकार है, इसमे अन्त्यानुप्रास मध्यानुप्रासका प्रयोग किया जाता है। यह दो प्रकारकी होती हैं । प्रथममें तो मात्राका कुछ नियम नहीं होता है और दूसरीमें २४ मात्राओंका एक पद बनाया जाता है। विशेष जाननेके लिए "रघुनाथरूपक" पुस्तक देखनी चाहिए। यह पुस्तक "काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी" द्वारा प्रकाशित हुई है।

बकाल=बनिये। दाया=बैर। गरदावैं=घेरा देना। देग तेग=दान देनेमें और तलवार चलानेमें । सावत=सम्पूर्ण ।

*मुगल सम्राट औरंगजेबकी मृत्युके परश्चात् शाहजादा आज़म और शाहजादा आलममें शाही तख्तके लिये युद्ध हुआ। इस युद्धमें शाहजादा आज़म उसका पुत्र बेदारबख्त मारे गये। अतः शाहजादा आलम "बहादुर शाह"के नामसे शाही तख्तका अधिकारी होकर बादशाह हुआ। इस युद्धमें महाराजा आमेर, जोधपुर, कोटा और नरवर, शाहजादा आज़मकी ओर थे। इस कारण बादशाहने नाराज होकर आमेर और जोधपुरको खालसे कर लिया था। और वहांके प्रवन्धार्थ महाराबखां फौजदार और सैयद हुसेनखां फौजदार को नियुक्त किया। दोनों नरेशों (जोधपुर और

मिल्ली। सैयदकी फौज सिरजोर जानी, राठौर कछवाहोंकी फौजने हार मानी। हिन्दूकी फौज सिकिस्त खाई, यह वात नरुकोंने सुन पाई। उनियाराके सग्रामसिह चोरुके हरनाथ, लदानाके केसरीसिंह तीनो एक साथ। द्वादस हजार सैयदकी फौजपै सात हज्जार तौखार पटका, सद रहमत उस सैयदको एक पहर फेर भी अटका। फिर सैयद तो भागे, सैयदू के पीछे ये नरुके लागे। वादशाहोके माही मुरातव, फील सुद्दे निशान सिलैखानां सव। उस सैयदका असवाव छीना, आमेरके महाराज जयसाहको लाय दीना। सव हिन्दुस्तानमे सराह पाया, जयसाहने कायदा वधाया। करावीन, खजर कटार फरी पिस्तोल तलवार, तमाम आयुधो सुद्दे सलाम की परवानगी पाई। जलेव चौक सिरे ड्योडी तलग इसके नगारो पर परै घाई। ऐसे 'उनियारा'के राजा जिसके तोर, तैसे ही 'लदाना',के पाटवी सवके सिरमौर। 'लदाना'के 'मदनसिह' जिसका जाया, कवर 'भारथसिह' वहुत तेज वतलाया। 'लदाना','लावा','चोरू','पचाला','महरचो','झाक, सेरोका आला। लावासे जग जुरोगे, ये वेड़ा वरबाद करोगे।

आमेर)ने महाराणा उदयपुरसे सहायता प्राप्त कर पहिले जोधपुरको अपने हस्तगत किया। इसके पश्चात् आमेरको हस्तगत करनेके लिये चढ़ाई की। इस युद्धमे हुसेनखां का पुत्र मारा गया और वह स्वयं भाग गया। इसके पश्चात् दोनों नरेश अजमेरकी ओर वढ़े और साभरके निकट मुगल फौजदारोंसे इनकी मुठभेड हुई। इस स्थान पर मेवातका फौजदार वडा हुसेनखां अपने दोनों पुत्रों सहित मेडताके फौजदार अहमद सैयदखां और नारनोलके फौजदार गारतखां सहित मुकावलेके लिए आ डटे। इस युद्धमें राठौर और कछवाहोंकी सेना परास्त हो गई। और सैयदोंकी सेना खुशियाँ मनाने लगी। इधर उणियाराके राव संग्रामसिह अपने नरूका वंधुओं सहित एक टीलेके पीछे दूसरे दिन युद्धमें सम्मिलित होनेके लिये डेरा डाले हुए थे। रावजी शिकारके वहुत शौकीन थे। अतः इनके साथ ५०० शिकारी योद्धा और ५०० सधे हुए शिकारी कुत्ते हर समय साथ रहा करते थे। इस समय भी वे साथ थे। इसके अतिरिक्त १५०० छटे हुए वीर योद्धा और थे। दूसरे दिन प्रात काल युद्धमें सम्मिलित होनेके लिए टीले पर चढ़कर नीचे उतरने लगे, वैसे ही सैयदोंकी सेना दिखाई पड़ी। रावजीने ५०० शिकारी कुत्तों और अपने वीर वन्धुओं सहित सैयदों पर आक्रमण कर दिया और एक भी शत्रुको जीवित नहीं छोडा। इस प्रकार राठोड और कछवाहोंकी प्रथम दिनकी पराजयको विजयमें परिणित कर दिया। आमेर नरेश सवाई जयसिंहने जव इस विजयके समाचार सुने तव एकाएक उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। जव रावजीकी वातें उन्हे ज्ञात हुई तव वे अत्यन्त ही प्रसन्न हुए। और रावजीके निर्णयानुसार आधी सांभर पर जोधपुरका अधिकार स्वीकार कर लिया। यह युद्ध सन् १७०८ ई० ता० ३ अक्टूबरको हुआ था।

दोहा

वरज्यो मीर मुलाह तब, असुर न मानी एक ।
जग जुरिबा 'लावै' जदन, ऊठे असुर अनेक ॥८॥

छंद पद्धरी

यम सुनत वत्त प्रजरचो नवाब, परि तप्त तेल जनु बूंद आब ।
किय रक्त नैन भ्रकुटी करूर, कहि जुरहु जग 'लावा' जरूर ॥९॥
यम सुनत मात्र बोले जवान, सब करहि कोटि भूमी समान ।
कहि 'गोशखान' लरि करहि बाट, उन्मत्त फील तोरहि कपाट ॥१०॥
'करनैलखान' यम कहिय आय, दे सुरंग कोट देहै उडाय ।
'जमशेर' कही चहुँ कोर रुद्दि, फिर लाय नसैनी परहि कुद्दि ॥११॥
'ममरेजखान' बोल्यो रिसाय, गढ करहु सफा तोपन लगाय ।
'असमानखान' कहै सुनहु इक्क, सब चलहु फोज किल्ले नजिक्क ॥१२॥
'मुलतानखान' यम कही बात, हो जाय सेन सब तूल पात ।
'आखून' कही रजपूत ठाढ, वीराधि वीर गढ बहुत गाढ ॥१३॥
वहु तोप कगूरन करत केल, सब रध्र रध्र जम्बूर मेल ।
बारूद बहुत सीसा समेत. करिहै निसक रनबीर खेत ॥१४॥
फिरि कर्‌यो गाढ सगर लगाय, जो मर्‌यो चहत सो निकट जाय ।
उन्नत सफील परिखा अथाह, मरि, भूमि देत रजपूत-राह ॥१५॥

---

(६) तोखार=घोड़े। सुद्दे=सहित, साथ । सराह पाया=प्रशंसित हुए। करावीन=कड़ावीन, एक प्रकारकी बदूक । फरी=डांड पटा। ड्योढी तलग=ड्योढी तक। घाइ=चोट। महरचों, भाक=गावोंके नाम। सेरोंका आला=शेर(सिंहों)के स्थान। वरज्यो=मना किया।

(१३) तूल=रुई। पात=पत्ते।

(१४) जम्बूर=एक प्रकारकी छोटी ताप।

(१५) संगर=संगठन करके। सफील=कोट। परिखा=खाई।

'आखून' कही मानी न एक, कोप्यो नवाव नही तजी टेक।
ललकारि तोप जूटी लगाय, गढ घेरि लयो चहूँ फेर आय ॥१६॥

छप्पय

यम 'खुमान' उच्चर्‌यो, येम 'सलसाह' उचारे।
यम अक्खी 'बलवत', येम 'सादूल' वकारे॥
यम बुल्ल्यो 'हनुमत', ईस महुकम यम वुल्ले।
मार-मार उच्चार सार, सिप्फर कर झल्ले॥
सरमीरखान आगन्तु हम, अरिगन वारन खुट्टि है।
तुट्टे न कोट मृगराज थहि, सार-धार सिर तुट्टि है ॥१७॥
कवन भूमि उत्थलहि, कवन सर नीर मथावै।
कवन कालनि गहौ, कवन गिरि मेरु उचावै॥
कवन उरग मनि लेत, कवन असमान उचडै।
कवन बात कर गहै, कवन "लावै" जुद्ध मडै॥
परलोक जाय आवै कवन, कवन मीच-आलै गवन।
कठीर कठ हिम कंठ लौ, कर पसारि घल्लै कवन ॥१८॥

दोहा

सुनि 'सलसाह' 'खुमानसी', करो विलब न काय।
कहि ठाकुर धर अप्पनी, ऊभा पगा न जाय ॥१९॥
सिर साटै धर लेत है, ठाकुर रहो न चीत।
फिर धर साटै सिर दिये, रजपूतो यह रीत ॥२०॥

---

(१६) टेक=जिद्द।
(१७) सार=तलवार। सिप्फर=सिफर, बड़ी तलवार। सलसाह=नाम विशेष।
(१८) उचावै=मस्तक पर रखना। आलै=आलय,स्थान। कंठीर=सिंह। हिमकंठ=सोनेका कठला।
(१९) उभां पगां=यह एक मुहावरा है, पैरों पर खड़े हुए।
(२०) साटै=एवजमें। नचीत=निश्चित।

छंद त्रोटक

इतने लुकमान डकार लय, उडि धूम धरा असमान गयं ।
चहुँ ओर नरुकनके दलय, उलटे मनु सिन्धु हिलोर लयं ।।२१।।
चतुरगनि ठेलि रवद्दनकी, जुद सगरची अपसद्दनकी ।
जुध भार भुजानि 'खुमान' लयं, विजयी मनु भारतके समय ।।२२।।
बलवंत भयो बलि भद्र बली, हथनापुर लो सब सेन हली ।
'हनुमंत' बली हनुमंत भये, कर तोल उदग्गिनि खग्ग लये ।।२३।।
अरिको दल देखि 'सदूल' उठयो, मनु केहरि सीस करीनि रुठयो ।
न सहै अरि तोप अवाज 'सलो', जनु बधि लयो अपु कध किलो ।।२४।।
बहु बंधु बरातिय सग लये, सिर सेहर केहर साज किये ।
निकसे गढ बाहरको लरिबा, अरि-सेन-कँवारियको बरिबा ।।२५।।
रसबीर हुलस्य हिये उलहो, दुलही चतुरगनिको दुलहो ।
कसि हल्लय फौज किलमनकी, बनि सिल्लिय टोय झिल्लमनकी ।।२६।।
किलमी चतुरगनि येम चली, कि हलाहलकी सरिता उझली ।
त्रहिके नद पानिप तुबुरय, चहिके चहुँ ओरनि जबुरय ।।२७।।

---

(२१) लुकमान=ऐसा कहते हैं कि 'तोप'की ईजाद हकीम लुकमानने सर्व प्रथम की थी इसलिए यहां इसका अर्थ तोप है ।

(२२) अपसद्दनकी=नीचोंकी, अधमोंकी ।

(२४) सलो=सलहसिंह । सदूल=शार्दूलसिंह । (२५) लरिबा=लड़नेको । अरि-सेन-कँवारिय=शत्रुसेना रूपी कुँवारी कन्याको । वारिबा=विवाह करनेके लिए ।

(२६) उलहो=उमंग ।

(२७) त्रहिके=बजे । पानिप=प्रसंगानुसार इस शब्दका अर्थ ढोल, अथवा नगाडा होना चाहिए । मेरी सम्मतिमें यहा 'पानिघ' शब्द होना उपयुक्त है जिसका अर्थ "हाथसे मारे जाने वाला" होता है । "त्रहिके" शब्द नगाड़े व ढोलके बजनेके अर्थमें प्रयुक्त होता है अत यहा "पानिघ" का अर्थ भी हाथसे मारे जाने वाला, बजाया जाने वाला वाद्यन्त्र-ढोल व नगाड़ा होना उपयुक्त है । यदि 'पानिप'का अर्थ "हाथसे पिटने वाला" लें तो भी यही अर्थ निकलता है । इसी ग्रंथके पांचवें प्रसंगके छन्द सं १६७ में भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ है । "पानिप तासे भेरि नद वीरा रस बग्गो ।" वहां भी इसका यही अर्थ होगा ।

वहिके सव कातर फट्टि हियं, ढहके उर मेच्छनि घट्टि जियं।
सहिके भुव भार फनी फनय, गहके नभ गिद्धनके गनय ।।२८।।
अवली गुन चट्टिय तीरनकी, कर कट्टिय खग्ग उमीरनकी।
खग धारनतें सिर तुट्टि परैं, विनु मत्थनि हत्थनि वत्थ भरैं ।।२६।।
न हलैं न चलैं कहु भूमि खरे, वलके सम ज्यो दोऊ मल्ल अरे।
मिलि हिन्दुव म्लेच्छिहि येम चले, चहुवान वनाफर ज्यों न चले ।।३०।।
कर खजर पजर पार करैं, उरझै पग अंतनि भूमि गिरैं।
कितने लरि घायली भूमि गिरैं, मदिरा उन्मत्त मनो विहरैं ।।३१।।
लखि वावन वीर वकैं विकसैं, मुनि जंत्र असोम वजाय हँसैं।
भख आमिख गिद्धनि उद्र भरैं, मिलि हूर अपच्छर सूर वरैं ।।३२।।
सव जोगनि श्रोणित खप्र भरैं, ततथेयव भैरव नृत्य करैं।
छननं किय पक्खर अट झरैं, खननं किय खग्गन वाढ खिरैं ।।३३।।
झनन किय पायल रभनकी, उपमा यक ओर अचभंनकी।
वरसै गलवाह कियां विहरैं, अरधांग मनू हरि नृत्य करैं ।।३४।।
यम झूझि 'सलो' रन भूमि पर्यो, वरमाल अपच्छर डारि वर्यो।
सिर झेलि महेश सुमेर कियो, रथ वैठि अपच्छर लोक गयो ।।३५।।

दोहा

येम किलो धारे सदृढ, मारे किते उमीर।
झूझि 'सलो' रन भुव परचो, हल्लो कर्यो तगीर ।।३६।।

---

(२८) ढहके=धंसक गये, ढह गये । घट्टि जियं=घड़ेकी तरह । सहिके=सहम गये । गहके=प्रसन्न हुए।
(२६) अवली ' तीरनकी=तीरोंके लगातार चलनेसे प्रत्यंचा चटक (वज) उठी।
(३०) चहुवान=चौहान राजपूत । वनाफर=क्षत्रियोंकी एक जाति विशेष।
(३१) पंजर=शरीर । अतनि=आतें । (३२) मुनि=नारद । जंत्र असोम=असोम नामक नारदकी वीणा । उद्र=उदर, पेट ।
(३६) तगीर=विदा करना, रवाना करना ।

'महुकम'की दिन प्रतिसधी, बधी किलम उर घेख ।
येम लरे खट मास लग, बाढव ग्रथ विशेख ॥३७॥

छंद मोतियदाम

'सलो' रन भूम्भि परयो जुध जुट्टि, लयो जस बास प्रत्थमिय लुट्टि ।
परे सत पद्धरके पतसाह, करे जिनु अच्छरि लोक उछाह ॥३८॥
परे धर एक हजार किल्लम, परे बिथुरे जिमि टोप झिल्लम ।
परे कमनेत बसू बल अध, परे सर मीर नगारन बध ॥३९॥
परे दल घायल एक हजार, कराहत अगनि घाव सुमार ।
परे गज मेक रवद्दनि घूमि, परे सत दोय तुरगह भूमि ॥४०॥
करै मुनि नारद येम सराह, कहै जुद्ध जीति गये कछवाह ।
गये कयलास मृडानि महीस, कहे जुध जीतिय पद्धरईस ॥४१॥
भई सब जोगनि श्रोन-त्रपत्ति, गई यम अक्खि नरुकन जित्ति ।
गये बकि बावन बीर विसुद्ध, भई जय हिन्दुनकी यहि जुद्ध ॥४२॥
... ...
उडी पल धप्पय गिद्धनि संग, कहे जुध जीतिय मोकमसिंग ॥४३॥

दोहा

यम जुट्टे खट मास जुध, हुए किलम हैरान ।
मनहु काम-चतुरगनी, करी ईश बेरान ॥४४॥

छप्पय

किते भूम्भि धर परे, किते घायल धर घुम्मिय ।
कबर घोर चहुँ कोर, करी कितनी खनि भूम्मिय ॥

---

३७. घेख=द्वेष ।
३९. बसू=पृथ्वी । नगारन बंध=जिनके आगे नगारे बजते हैं ।
४१. मृडानि महीस=पार्वती शिव ।
४४. बेरान=वीरान ।

केते सग तावूत, किते घायलो मिलायति ।
किते करि कफनी, गये अप्पनी विलायति ।।
यम कियो जुद्धम हुकम प्रबल ।
धीठ किलम उर वक्खियो ।।
सिर शेप रह्यो"लावो"सुद्रढ,तब नवाव यम अक्खियो ।।४५।।
करहु तुच्छ मामले, कच्छु हम टेक रहावै ।
यश लावै गढ लरन, जियत हम फेर न आवै ।।
करि वेड़े बरबाद, बाद वारूद उडायें ।
हम तुम जुट्टे तदन, अदन अहिमति उर छाये ।।
यम कहि बुलाय बतराय कछु, कपट द्रोह उर धारियो ।
करि दगो पकरि 'हनुमत'को, आसुर कटक उपारियो ।।४६।।

इति श्री कूर्मयग म्लेच्छविध्वश कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदान विरचित प्रथम लावा युद्ध द्वितीय प्रसंग समाप्त ।

---

४५. घोर=गोर, कवर । तावूत=मुर्दा रखनेका बक्स, अर्थी ।
४६. अदन=खोटे दिन । अहिमति=घमंड, जोश । बाद=व्यर्थ । अदन=अदना, तुच्छ ।

लदाना युद्ध

छंद बेताल

करि दंभ गहि हनुमतको भय मानि लावाते भग्यो।
करि दुष्टता चहु ओरते फिर देशको लुट्टन लग्यो ॥१॥
बर बीर धीर खुमानके, बहु रोस अंग उमगयो।
हनुमतको छुटवाय हू, यह थप्प 'लद्दाने' गयो ॥२॥
तिह पाट थान खुमानसो, मिलि कवर भारथ बुल्लयो।
हनुमतको छुटवायके, मदिरा पीवे पन झल्लियो ॥३॥
हम जियत ही हनुमतसी पर, हत्थ म्लेच्छनको पर्‍यो।
यह बत्त हुव अनरत्थ सीं, सादूल सिंकुलते जर्‍यो ॥४॥
करि सीस उन्नत अप्पनो, धर जोर लावाते लर्‍यो।
हिन्दुवान ओ तुरकानके, तिह ठोर पावक वित्थर्‍यो ॥५॥
सल्लाह थट्टिय शहिरको, यह लरन लायक गढ्ढय।
लय संग हैदल पैदल, तिन काल भारथ चढ्ढय ॥६॥
निशि अर्द्ध माधव नग्रते, राजाधि अमल उत्थपियो।
अनमेल कढ्ढिय कोटते, निजराज पद्धर थप्पियो ॥७॥
प्राकार उन्नत आभलों, सामान पूरन सज्जय।
धमजग्र तोप उछाहकी, तम्बूर त्रम्बक बज्जय ॥८॥
यम शद्द नद्दिनके सुने, जरिगे रवद्दनके हिये।
चहु ओर चल्लिय बत्त यो लरि कोट भारथसी लिये ॥९॥
निशि बीति भानू प्रकासियो, जिह भोर धीरज नठ्ठयो।
लिखि मीरखान नवाबको, यह तोर कग्गल पठ्ठयो ॥१०॥

---

४. सिंकुल = सांकल, जंजीर।
७. अनमेल = शत्रु ।
८. धमजग्र = झगड़ा, युद्ध । तम्बूर = एक वाद्ययन्त्र । त्रम्बक = नगारे, तासे ।
९. शद्द = शब्द । नद्दिन = शब्द करने वाले ।
१०. नठ्ठयो = नाश हुआ ।

दोहा

यम खत भारथ लिक्खियो, मीरखान यह मान ।
कै छोड़ो हनुमतको, कै झल्लो केवान ॥११॥

छंद पद्धरी

लावै निकाम तुम कियऊ जुद्ध, तिह ठौर बध्यौं हम तुम विरुद्ध ।
जुट्टे निसंक बे खून रार, तुट्टे न कोट तुम गये हार ॥१२॥
फिर एक बत्त विनु उचित कीन, हनुमंत दगो करि पकरि लीन ।
तुम करिय बत्त यह ठोर ठोर, करि दगो हन्यो स्वाई रठौर ॥१३॥
आमेरनाथको लून खाय, लीनो हरामखोरो उठाय ।
जो करहि चेत जगतेश राय, तब काढि खाल भूसी भराय ॥१४॥
ते लूटि लये रिपु च्यार देश, मै करू तोहि दरवेश भेश ।
अब मान मूढ़ हनुमत छंडि, हनुमत न छंडहि रारि मँडि ॥१५॥

दोहा

लिखि कग्गल कछवाह दिय, लय धावन निज हत्थ ।
आतुर धावन आनि के, दिय नवावके हत्थ ॥१६॥
ले कग्गल बोले किलम, किसके भारथ नाम ।
हैं उसके असमानते, केतो उन्नत धाम ॥१७॥
पति 'ल्दाना'के कंवर, भारथ नाम कहाय ।
नवा शहरको गढ लियो, अर्द्ध घरीमे आय ॥१८॥
भारथ हमसे जुध करैं, येता क्या मकदूर ।
पाव घरीमे हम करै, उसके गढ़ चकचूर ॥१९॥

---

११. केवान = कृपाण ।
१४. लून = नमक ।
१६. कग्गल = कागज, पत्र । धावन = दूत ।
१९. येता क्या मकदूर = इतनी क्या मजाल है ।

हमसे जुध करि जीति है, क्या उसमे है जोर।
यम अक्खहु कासीद मुख, है भारत किह तोर ॥२०॥
धर पद्धरको पातस्या, ढूँढाहरकी ढाल।
आन महीपतके मुकट, शत्रुनको नटसाल ॥२१॥
अय बल, तप बल, बाहुबल, बलधनको बलराज।
भारथसे भारथ करै, से नहि दीसत आज ॥२२॥
को हिन्दु तुरकानको, को फिरँगान समाज।
भारथसे भारथ करै, से नहि दीसै आज ॥२३॥

छंद पद्धरि

कासीद आनि इम कहिय बत्त, सुनि मीरखान परगह समस्त।
को करहि कालसे चाल कोपि, को जात सिधु पर तीर लोपि ॥२४॥
को लेत पानि उर्बी उचाय, को चलत पथ कर पद कटाय।
को लेत नागकी मनि हकारि, को जुरत सिंह सूतो बकारि ॥२५॥
को बैठि सोर पर आगि देत, जमदूत हूंतको करहि जैत।
को करत सर्व, अध्येय ग्रथ, को लेत पार उतराद पथ ॥२६॥
गहि लेत कोन कर चलत पोन, पच्चास कोटि भुव भ्रमत कोन।
जिय चहत, हलाहल कवन खाय, को लेत मेरु परबत उठाय ॥२७॥
को 'लरत' मीचसे बीर बक, असमान कोन झेलै असक।
को लेत सीस पर काल दड, को इद्र वज्र झेलत अखड ॥२८॥
बहनी बिछाय सुख कवन सोय, फल कवन खाय विष बीज बोय।
को मस्त नागसे करहि केलि, को लेत भूमि पब्बय धकेलि ॥२९॥

२१. नटसाल=तीरका शरीरमें फँसकर खटकना।
२२. अय बल=शस्त्र बल। दीसत=दिखाई देता है।
२४. परगह=परिकर, अनुयायी दल।
२५. उर्बी=पृथ्वी। बकारि=पुकार कर, दकाल कर।
२६. सोर=बारूद। जैत=विजय। बहनी=वह्नी, अग्नि।

को बीरभद्रको करहि खूंन, भारथसे भारथ लरहि कून ॥३०॥

दोहा

सुनिय बत्त कासीद, मुख वाच्यो खत्त जवाब ।
मनहु अग्निमे घ्रत परे, प्रजरयो येम नवाब ॥३१॥

छंद निसानी

सुनि खत भारथसिंहको पीछा लिखवाया,
हम 'लावै' दो लक्ख रुपये बरबाद गुमाया ।
उस रुपयोमे ओल यक ये हमको पाया,
इस 'लावा'दी ओलसे जीऊदा दाया ॥३२॥
उस लावाके ठाकरु तुमको बहकाया,
के तुम किसके बादिस्याह फुरमान चलाया ।
के तुम किसके मामले चाहत सुरझाया,
के तुम किसके पील हो अरजी गुजराया ॥ ३३ ॥
के तुम ऊँचे होयके हमसे बतराया,
के तुम दायेदार हो कर तेग समाया ।
के तुम उसके मामलें बिच फैल मचाया,
तुजे पराई क्या परी अपनी निमराया ॥ ३४ ॥
इस हम चारो देशको लूटे करि दाया,
सद रहमत तुजको सलाम मुझको बुलवाया ।

---

(२६) वह्नी = वह्नी, अग्नि ।
(३०) कून = कौन । भारथ = भारथसिंह, 'लदाने'के स्वामी मदनसिंहके पुत्र, युद्ध ।
(३२) ओल = गिरवीकी वस्तु । लावादी = लावैका ।
(३३) पीलहो = जिसकी हिमायत (पक्ष) की जावै, हिमायतदार ।
(३४) फैल मचाया = उधम किया, दंगा किया, तोफान किया । निमराया = नमेड़ना, निबटाना, तै करना । दायेदार = बराबर ।

मै भी सच्चा खान तो तुज ऊपर आया,
... ... ॥३५॥

दोहा

बड़े बिरादर खानके, सुने निरादर खत्त।
किलम एक असमानखां, उन अक्खी यह बत्त ॥३६॥

छंद निसानी

ये खत भारथसिह बाचिके रोस भरेगा,
मुझको आया ख्वाब कल वो ही निमरेगा।
मेरो सच्चो ख्वाब है टारै न टरैगा,
जिसका आह्वय भारथा वो खून करेगा ॥३७॥
इस्दी औरत वालदा खाला पकरेगा,
ताई चच्ची आदि ले सब बद करेगा।
गढ़के अदर कैद करि पग लोह भरेगा,
ये गल्लो सुन मीरखान अदर प्रजरेगा ॥३८॥
किसका कह्या न मानि हैदल जोरि लरेगा,
त्रणसे भारत होयगा गज बधु गुरेगा।
उस 'लावा'से चौगना रनखेत परेगा,
ओ पद्धरका पातसाह जुध खूब करेगा ॥३९॥
वो जाया मदनेसका मार्या न मरेगा,
ये बेडा नव्बावदा बरबाद करेगा।
अल्ला जानै फोजमे बिरला उबरेगा,
यूँ अक्खै असमानखा असमान गिरेगा ॥४०॥

---

३७. आह्वय = नाम। जिसका आह्वय भारथा = जो भारतके नामसे पुकारा (बुलाया) जाता है।

३९. त्रणसे = तिनसे, उनसे। गज बंधु गुरेगा = हाथियोंके दलके दल गिर जायेंगे।

छंद पद्धरी

असमानखान अक्खी अनेक, तउ मीरखान मानी न एक ।
वोल्यो रिसाय निज वल वखानि, कर तोलि तेग कर मूँछ तानि ॥४१॥
गढ बैठि गर्व कीनूं गवार, सम करो ढाहि प्रज्जारि छार ।
पाहन उखारि सर्वङ्ग मूल, देऊ भ्रमाय ज्यों पत्र तूल ॥४२॥
मम कोम सत्य पितु मात सैद, हनुमंत संग गहि करों कैद ।
मम रोस ज्वाल पावक प्रचंड, छंडहु नवाय भरवाय दड ॥४३॥
यम कहहु वत्त कासीद जाय, तुम भरहु दड मम परहु पाय ।
यम सुनत वत्त कासीद आनि, दय सीघ्र खत्त भारत्थ पानि ॥४४॥

दोहा

कहे दूत समझाय के, समाचार यह विद्धि ।
तदन कवीले असुरके, रहत 'टोरडी' मद्धि ॥४५॥
चढे सहिरते रोस धरि, लीनी पकरि खुमान ।
मानहुं रावनकी त्रिया, गही आनि हनुमान ॥४६॥
तदन गही रावन तिया, परयो झूझि करि जंग ।
वीवी जियत नवावकी, पकरी भारतसिंह ॥४७॥
हाव भाव रस गुन भरी, सोहत परी समान ।
किधूं कामकी कामिनी, को कवि करत वखान ॥४८॥

छंद त्रोटक

यवनी तिय हूर किधो उतरी, पनगी नग काम किधूं पुतरी ।
कच स्याम सचिक्कन सीस लसै, ससि पूरणको मन राहु ग्रसै ॥४९॥
मृगयामदकौ सरि विन्दु दियो, शशिके मनु मध्य शनी उदयो ।
उपमा यक ओर चुभी चितमे, ससि रोहनि अंक धरी हितमे ॥५०॥

४५. टोरडी = एक ग्रामका नाम है जो मालपुराके पास जयपुरसे दक्षिणकी ओर है, यहां पर एक वड़ा जलवंध है ।

भुव बक मनो युग अग अरे, कुसुमायुध ज्यो धनु तानि धरे ।
श्रुति कुडल हाटिक हीर जरे, मुख मीन मनो मुकतानि भरे ।।५१।।
मुकता गनि बेसर नाक बनी, मनुकीर चुगंत अनार कली ।
श्रम स्वेद कपोलनमे झलकै, अलकै दुहु नागिन सी तलकै ।।५२।।

अधरायुग बिम्ब पके फलसे,
मनु लाल प्रवालन पक्ति लसे ।
अधरानि बिचै दुति दत बनी,
बिचि मानिक मानहु हीर कनी ।।५३।।
मृदुहास हुलास हिये न रुक्यो,
भरिके मनु कज सुधा ढरक्यो ।
दुति कठ कपोलनकी झलकी,
उन कठनते धुनि कोकिलकी ।।५४।।
मधुरी सुनिके धुनि काम बढै,
मुखते मनु मत्र मनोज पढै ।
कर चपक डार सुगध भरे,
मनु कजसे नाल दुहूँ पसरे ।।५५।।
चुरिया मुकरावलि पानि हरी,
गुरु गेह मनु बुध सज परी ।
गजरे मुकतानिके पानि लसे,
मनु दामिनिमे ऋषि पक्ति वसै ।।५६।।
अँगुरी तिन हेम सलाकिनि सी,
मुंदरी जरि मानिक मद्धि वसी ।
तिनकी उपमा कबि हेरि दयं,
गुरु भोन अगार मनो उदय ।।५७।।

---

५२. तलकै=तलकना, हिलना, रपटके चलना ।
५६. गजरे=एक जेवर विशेष, जो हाथमें पहिना जाता है । सज परी=सज्जित हो गया ।

मँहदी कर कोमल बूंद धरी,
मनु कजमे इन्द्रवधू विथुरी।
उर वीचि उरोज स्वयभु लसे,
तटनी तट मानहु कोक वसै ॥५८॥
उमगी सुरखी कुच कोर कढी,
मनु वूडनि कज कलीनि चढ़ी।
त्रवली तन रोम तरंगनि सी,
मधु सिंधुमे नाभिय कंज लसी ॥५९॥
भर श्रोणित पीठि विभाग नयो,
कटिको वित लूटि नितंब लयो।
रुचि रूप जराव जरी रसना,
मुकता हिम नीलम हीर पनां ॥६०॥
बुध शुक्र वृहस्पति भौम शनी,
मनु तोरन कामके भौम तनी।
उपमा यक ओर अचभनकी,
युघ जग बनी हिम रभनकी ॥६१॥
अरुनाई महाउरकी दरसे,
तरवे मनु पावक से परसे।
चटककी पट मेचक मोजनकी,
पनही मुकता जरदोजनकी ॥६२॥
सुरखी वनि सूथनि भारनकी,
लरकी लर श्याम यजारनकी।

५८. स्वयंभु=शिव, महादेव। तटनी=नदी।
५९. वूडनि=वीर वधूटी, वीर वहूटी।
६०. श्रोणित=लाल। रसना=किंकिनी, करधनी, कणकती।
६२. तरवे=पैरके तलवे। पट मेचक=काला रेशम। यजारन=इजारबंद, नाड़ा।

कुरती कंचिया मखतूलनकी,
उर माल चमेलिय फूलनकी ॥६३॥
सिर सारिय स्याम बिदेशनिकी,
तिनपै हिम कोर सुवेशनकी ।
जिनकी उपमा यक ओर थटी,
बिजरी ससि कोर मनूं लपटी ॥६४॥
झर लागि सुगंध मनों झपटी,
अलियावलि अंगनकी लपटी ।
तनकी सुकमार बय तरनी,
लखि धीरजको न धरै धरनी ॥६५॥
मुनि देवनको मनहू बिचल्यो,
चित भारथको तिनपै न चल्यो ॥६६॥

दोहा

नागरि गुन आगरि नई, सुंदरि तन सुकुमारि ।
गहि भारथ निज बस करी, लखी न द्रष्टि पसारि ॥६७॥
दान वीर तन प्रबलता, जुद्ध बुद्ध तप देश ।
क्यो बिगरै तिहं नृपतिको, लखै न पर तिय लेश ॥६८॥
कूक फजर कटकों परी, धरी न किलमूं धीर ।
सब दिन रोजे सम गयो, बढी विषम कल पीर ॥६९॥
समाचार अनुक्रम सहित, सुने गही तिय तेम ।
पनग पिटारेके परे, अरि सिर धूनत येम ॥७०॥

छंद भुजंगी

परयो भीमको पूत ज्यों सक्ति मारयो,
मनु मच्छिको तोयते हीन डारयो ।

६७. कूक=हल्ला ।

मनु काच सीसी सुरा हीन नंखी,
परयो पंख हीनू धरा जानि पंखी ॥७१॥
परयो नाग भूमी मनू भीम कुटयो,
परयो भूमि तारो मनूं गैन तुट्यो ।
मनू आव हीन गुर्यो कुभ रीतो,
भई झफ खाली पर्यो जानि चीतो ॥७२॥
पर्यो व्याल ज्यो कीलनी वज्र किल्लो,
मनू भक्खि तारक्ष पीछे उगल्ल्यो ।
बटू वायके वेंग मांनू उखार्यो,
पर्यो छाग भूमी मनू तेग मार्यो ॥७३॥
पर्यो म्लेच्छ भूमी वसु याम लोट्यो,
जर्यो अंग जाको मनू आगि ओट्यो ।
अला, पीर पैकंवरोको पुकारें,
जरी देहको रोपतें फेर जारें ॥७४॥
वके दीनताके किते बैन टेरे,
कवीले परे काफरों हत्थ मेरे ।
परे वित्थुरे भूमि जाके खिलूना,
कहा कैद जाने हमारे ललूना ॥७५॥
करी कोटमें कैद वीवी हमारी,
रमी आजलों रंगकी चत्रसारी ।
पर्यो त्रासतें जीव संताप ताके,
जर्यो लोह जंजीरकी ठोर जाके ॥७६॥
विछूना विना सोवना क्यो सहेगी,
हवा वंदके फदमें क्यो रहेगी ।

(७२) झंफ=छलांग । चीतो=चीता, सिंहकी जातिका एक शिकारी पशु विशेष ।
(७३) तारक्ष=गरुड । छाग=वकरा ।
(७५) ललूना=ललनाएँ, स्त्रियां ।

सुरा मास हीनी रही ना कदे ही,
बिना खान पान भई क्षीन देही ॥७७॥
सुनै हिन्दुके बैन सीना धरक्कै,
चिरी पिजरैकी परी त्यो फरक्कै ।
बडे हिन्दुके बधसे वो डरेगी,
निराधार किल्लो सफीलो गिरेगी ॥७८॥
उसीको लखै धीरता ना धरेगे,
कही जाय ना हिन्दु कैसी करेगे ॥७९॥

दोहा

करि साहस ऊठे किलम, झिलम टोय तनु झल्लि ।
पूरनागरन ठोर परि, चले प्रबल दल मिल्लि ॥८०॥

छप्पय

चढ़ि चल्लिय मेछान, भान गरदावलि भिल्लिय ।
हल चल्लिय हिन्दवान, खखड जुग्गनि खिल खिल्लिय ॥
धर डुल्लिय परिभार, पहुमि बसवान उंचल्लिय ।
हल मिल्लिय परि जोर, शेष अहि फन पर सल्लिय ॥
लखि जोर सोर दिल्लिय सदन, तदन तोर दरसावियो ।
कर अली अली माधव नगर, येम सजी कर आवियो ॥८१॥
रचे प्रबल मोरचे, करि मेछन वन कट्टिय ।
दीनी भूमि दरार, ओट सगर थिर थट्टिय ॥
कराबीन जम्बूर, तुपक पिसतोल तयारिय ।
ठोर ठोर नद घोर, यते लुकमान डकारिय ॥
झर तुट्टि-तुट्टि धरनी परत, लाय अवनी मनु लग्गई ।
घन घोर तोप आषाढ़ लो, दुहू ओर यम दग्गई ॥८२॥
धरा धूम बित्थुरे, तोय ऊछरे सरोवर ।
गिरे शृंग नग तुट्टि, ताम प्रज्जरे तरोवर ॥

---

८१. बसवान=बसने वाले ।

नदी कूप नद सूकि, कूक कातर उर फट्टिय।
आवट्टिय जल जोर, सोर दुहु ओर उपट्टिय॥
सर धून धून दिगपाल डरि, कसकि कमठ्ठनि पिट्ठि भर।
घर घुज्जि तलातल तल वितल, शेप सलस्सल छट्टि धर॥८३॥

मेक मास वारूद हिन्दु तुरकान हुचक्किय।
हल्लो करि फिरि हल्लि, देख भुवलोक भचक्किय॥
मीरखान भाराथ करत, भारथ दहु निभ्रत।
दैत्य देव मिलि दुहूं करत मनु काल प्रलय कृत॥
भरि बत्थ बत्थ गलवांह करि, येम असुर हिन्दुव भिलत।
मानहु अनेक दिन बिच्छुरे, उर मिलाय बधव मिलत॥८४॥

धर अम्बर घनधूम, सोर-झर विज्जुर धक्खिय।
तोप-सब्द घन-घोर तुपक-भख असनि वरक्खिय॥
नाचत सूर मयूर सस्त्र-खद्योत भलक्किय।
जरि कातर जैवास, भूमि रुहिराल खलक्किय॥
किल्ले नजीक भिल्लै किलम, जिते सोर झर पर जरत।
आषाढ़ मनहु वरषा समय, समुख आनि सलभा गिरत॥८५॥

छंद दीरघ नाराच

घटा घुमंडी घोरिके आषाढ़ अभ्र लों घिर्‌यो,
प्रकाश भानु को रुक्यो अकाश धूंम धूंधर्‌यो।

---

८३. तरोवर=तरुवर, पेड़। आवट्टिय=ओटना, उबलना। उपट्टिय=उत्पन्न हुआ। धर=स्थान।

८४. हुचक्किय=हो चुकी, समाप्त हो गई। भचक्किय=अचंभित हो गये। भाराथ= युद्ध।

८५. सोर झर=बारूदकी झल। असनि=ओले। सलभा=टिड्डी।

कबान जाल तोपके नवाल कोटपै भवै,
जम्बूर रध्र रध्रके गिरेन्द्रसे रसै लवै ॥८६॥

अनेक मेक तोरकी दुरूह तोप धाहुरै,
उडै दुरंगकी सफील फील फोजके गुरै।
हकारि आत सामुहै मुसल्ल हल्ल बुल्लिकै,
यते बकारि हिन्दु सीस आसमान तुल्लिकै ॥८७॥

कितेक लत्थ बत्थ ह्वै अचेत भूमिपै गिरै,
किते कुठार खग्ग धार सेल खजरू लरै।
कितेक हाथ पावके बिहीन भूमिपै लुटै,
कितेक सीसके कटे कबध ऊठिके जुटै ॥८८॥

कितेक गिद्धनीनको धपाय गूद अप्पने,
कितेक सुद्धिके विहीन मार मार जप्पने।
कितेक ईस पोय लीन सीस मुंजकी गुनि,
कितेक खप्र खोपरी बनाय जुग्गनी चुनी ॥८९॥

कितेक बीर जुद्धमे अधीर होय बक्कही,
कितेक भूत खेचरी अधाय श्रोन छक्कही।
कितेक हूर अच्छरी बिमान बैठि ऊतरी,
कितेक जात व्योमको मनो अरठ्ठकी घरी ॥९०॥

---

८६. तोपके नवाल=तोपके निवाले, गोले। रसे=रसने लगे, चूने लगे, टपकने लगे। लवै=लो, लपट।

८७. अनेक मेक तोरकी=अनेक प्रकारकी। धाहुरे=धहाड़ रही है। दुरंग=किला। सफील=दीवार। फील=हाथी। गुरै=चलै। सामुहै=सन्मुख।

८८. लुटैं=लोट रहे हैं। जुटैं=युद्ध कर रहे है, जुड रहे हैं।

८९. धपाय=तृप्त करके। गूद=मांसल स्थान।

९०. अरट्ठ=रहॅट, कुएसे पानी निकालनेका मालाकार यंत्र।

छप्पय

येम नरूके असुर मास मुर त्रगुन घुमडिय।
मीरखान अप्पनी जीयन आशा उर छडिय॥
लोह बोह बारूद जुद्ध हल्ले करि हारे।
पैदल हैदल परे मीर कितनें रन मारे॥
कबीले छुट्टिनिके अरथ कपट कत्थ केते करे।
ननु परे हत्थ किल्ले तदपि अरध मत्थ अवनि परै॥६१॥
येम असुर धर उद्ध पर्यो अनुचित अप्पन घन।
मनहु चाप गुन तुट्टि किधू किरवान मुट्ठि बिन॥
स्वास ताप उर कप मुख बेबरन फैंन जुत।
रौब प्रलापहु दुख मगन संताप नारि सुत॥
करनैलखान असमानखा दुहू आनि धीरज दयो।
कबीले फजर छुटवाय है, तब नवाब अंजल लयो॥६२॥
चर चलाय बुल्लयो मीर असमान बुद्धिवर।
कुटिल नरूके कोम बहुत हुशियार जुद्ध पर॥
अति उन्नत प्राकार भरत सामान आन भ्रत।
सीसे सोर अपार पच हज्जार जुद्ध क्रत॥
जुट्टे अनेक दिन आज लौ, अब अनेक दिन जुट्टि है।
हनुमत छड्डि पायन परो, तदन कबीले छुट्टि है॥६३॥
आनी चित मीरखा मीर असमान कही बत।
सर्वोपम अव सिद्धि सरब श्रीजुत लिक्खे खत॥
मिट्यो बैर अप्पनो रारि हमसे मत मडहु।
हम छड्डै हनुमंत नारि हमरी तुम छड्डहु॥

---

६१. मास मुर त्रगुन=नौ महीने तक। बोह=प्रहार।
६२. धर उद्ध=पृथ्वी पर। अंजल=अन्नजल।
६३. चर=दूत।

तुम कहो कवर सोही करै, ज्यान माल कछु चित चही।
यह बत्त निरतर जानियो हम तुम अंतर है नही ॥६४॥
बचि खत्त भारत्थ, कत्थ पिच्छी यम लिक्खिय।
तुम बेगम हम पकरि कैदखाना बिचि नक्खिय॥
तुम छंडो हनुमंत कैदखाने मत रक्खहु।
एक लक्ख भरि दंड नारि छुट्टनकी अक्खहु॥
नन होय बत्त मंजूर यह जुध हम तुम फिर जुट्टि है।
भरि दंड आनि पायन परो, तदन कबीले छुट्टि हैं॥६५॥
कै दारुन अहि किल्लि कालबेलिन बसि किन्हो।
मनहु मुसाफिर बित्त ठगन मादिक ठग दिन्हो॥
किधू प्रेत बक्करयो ताप मत्रादिक तच्यो।
परयो प्रपचय हत्थ मनहु साखामृग नच्यो॥
उच्चर्‌यो खान सोही कर्‌यो, यो मति कीमत मानखा।
मीरखां दारु-योषित भयो, तार गह्यो असमानखां॥६६॥
करी एक उन्मत्त अस्व ईरान बिलायत।
पाटम्बर जर तार भार मेवा सोखयत॥
पेटी भरि मोकले एक लक्ख रुप्ये हाली।
परसी खड्ग कटार जूट्टि पिसतोल दुनाली॥
चुकुमार धनुष तुन्नीर शर, सार टोप पक्खर झिलम।
करि मित्र भाव हनुमतको बैर छड्डि भेजे किलम॥६७॥

सोरठा डिंगल

यम अक्खी असमाँण, पारख झूठी नहि पडी।
ते राखी तुडताण, रजपूती हिंदवाणरी॥६८॥

---

९५. पिच्छी=पाछी, वापिस।
९६. कालबेलिन=सांपको पालने वाली जाति विशेष। दारु योषित=कठपुतली।
९७. सोखायत=सौगात, उपहार, तोहफा। मोकले=भेजे, बहुत। हाली=उसी सन् सम्वतके।

हिंदुवाणी तुरकाण, राह दुहूं जस उच्चरै ।
पारथ ज्यूं भुज पाण, भारथ मंड्यो भारथा ॥९९॥

हटियो बल हिंदवाण, ऊपटियो बल आसुरां ।
मिटियो देख प्रमाण, थटियो भारथ भारथै ॥१००॥

सबला पण साबूत, रहियो भारथ भारथो ।
तुरकारां तावूत, लागां मग्ग विलायता ॥१०१॥

कपै घाव कराहि, निशि दिन चख झपै नही ।
मेछारा घट माँहि, भाय लगाई भारथै ॥१०२॥

ठहरै जीव न ठाहि, आहि पुकारै ओदकै ।
मेछारा घट माँहि, भाय लग्गई भारथै ॥१०३॥

करडी निजर कृसाण; थारी कूरम भारथा ।
मेछारै अप्रमाण, लग्गी लाय विलायता ॥१०४॥

खाय तडच्छा खान, थारा भयसों भारथा ।
असुराणी आधान, अवधि विहूणा ऊगलै ॥१०५॥

किलमां वालै काय, के चालै लागो कवर ।
आलै-नाहर आय, भालै फेर न भारथा ॥१०६॥

---

९९. पारख=परीक्षा । तुडताण=यहां पर 'तुरतांण' पाठ होना चाहिए, जिसका अर्थ होगा तुरत (शीघ्र, वर्त्तमान समय) के अन्त तक अर्थात् अब तक ।
१००. ऊपटियो=उन्नत हुआ । थटियो=किया ।
१०१. साबूत=सम्पूर्ण ।
१०३. ओदकै=चमक कर, चौंक कर । आहि=हाय हाय । भाय=भय ।
१०४. करडी=कठोर । कृसाण=अग्नि । लग्गी लाय=अग्नि लग गई ।
१०५. आधान=गर्भ । ऊगलै=उगलना, निकालना, अंर्थात् विना समय ही गर्भ गिर जाते हैं ।
१०६. के चाले=क्या धंधे लगा । आलै नाहर=सिंहका स्थान, माँद । भालैं=देखै ।

सारो खोय सबाब, पडि फीटो पावा पड्यो ।
निहुरा खाय नवाब, नारि छुडाई निट्ठसै ॥१०७॥
तुरकांरै मुख तोय, रती न राख्यो भारथा ।
हुवो न कोई होय, आलम आखै आपनै ॥१०८॥
जुटै दुहू दल जग, आहूटै हिन्दु असुर ।
रंग हो भारथ रग, उण वेला दै आपनै ॥१०९॥
सूर अपच्छर सग, हूर खद्दाहू मिलै ।
रग हो भारथ रग, उण वेला दै आपनै ॥११०॥
ईश उमा अरधग, भर प्यालो ले भंगरो ।
रग हो भारथ रंग, उण वेला दै आपनै ॥१११॥
अमलारा उछरग, गलिया थलिया चोगणा ।
रंग हो भारथ रग, उण वेला दै आपनै ॥११२॥
गोष्ठि बिरादर सग, प्याला मद पावै पिवै ।
रग हो भारथ रंग, उण वेला दै आपनै ॥११३॥

छप्पय

चिमन सेख धर परचो, परचो धर सेख यनायत ।
परचो विलायत खान, ल्हास पूगी बिल्लायत ॥
परचो खान मुलतान, खान असमान सरोभर ।
जूटि जग जमसेर, बाहि समसेर परचो धर ॥
इकावन मीर ठाये परे, पच हजार लरायते ।
कमनेत नेत बधी अयुत, असि समेत आपायते ॥११४॥

---

१०७. पडि फीटो=लज्जित होकर । निहुरा खाय=खुशामद करके, अनुरोध करके । निट्ठसै=मुशकिल से ।
१०९. आहूटै=जोशमें भरना । रंग हो भारथ रंग=हे भारतसिंह तुमको धन्य है । उण वेला=उस समय ।
११०. खद्दाहू=म्लेच्छ ।
११४. ल्हास=लाश । ठाये=मुख्य । लरायते=लड़ने वाले, सिपाही । आपायते=आपा रखने वाले, अपनापन रखनेवाले, निकट संबंधी ।

येम नारि छुटवाय, मेछ अपने मग लग्गिय।
मनु डाहल सिसपाल, खोय धनको खल भग्गिय।।
सकल होय बलहीन, सबल भारथ लगि टक्कर।
जात मनहू अजमेर, पीर जारतिकों फक्कर।।
मद मुक्कि सुक्कि बैबरन तन, जीव सरक सीना धरक।
परि काल फंद मानहु कढे, हुय तग्गा तग्गा तुरत।।११५।।

दोहा

नर हैमर दमने सकल, येम असुर मग जाय।
मनहु बनिक घर अप्पनै, गमने मूल गमाय।।११६।।

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदान विरचित लदाना युद्ध तृतीय प्रसग समाप्त।



११५. डाहल=डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, डाइल जाति विशेष। जारति=जियारत, धार्मिक-यात्रा। वैवरन=वैवर्ण्य; रंग फीका पड़ना। हुय तग्गा तग्गा=तागे तागे हो गया, छिन्न-भिन्न हो गया।

उणियारा युद्ध

दोहा

येम 'लदानै' सुकवि जुध, बरन्यो विविध प्रकार ।
अब 'उनियारय'को कहू, जिहि विधि बग्गो सार ॥१॥
होय निबल बलहीन खल, द्रुम पल्लव अनुहारि ।
कुच्च कुच्च दर कुच्च फिरि, संभर लई संभार ॥२॥

छप्पय

करि मुकाम पुर घेरि, सोर चहु ओर प्रजारिय ।
गहि दुरूह सिकदार, हाटि पट्टन संभारिय ॥
हेरिय सभरि माल, लुट्टि सभर पुर लिन्हिय ॥
निमक दरिबनि रुद्धि, दाव दव्वन उर दिन्हिय ।
गोलक निशान फुरमान अप, विकल सोच च्यारों बरन ।
तुरकान तोर बग्गो बहुरि, खल अनीति लग्गो करन ॥३॥

दोहा

तुरक तोर बग्गो तदिन, फिर संभरपुर आय ।
अब आगम अगरेजको, बरनै सुकवि बनाय ॥४॥

छंद पद्धरी

यम सुनिय बत्त अंगरेज कान, मानो कि तीर मुक्यो कमान ।
मातंग हेरि मानहु मृगीश, मानहु पनग्ग लखि खगाधीश ॥५॥
असमान भ्रमत मानहु अचान, लखि भुव बटेर तुट्यो सिचान ।
मृग हेरि मनहु चीता मलग, झप्योक बाज चंप्यो कुलग ॥६॥

---

१. बग्गो सार=लोहा बजा, तलवार चली ।
२. संभर=सांभर झील ।
३. दुरूह=दोनों तरफके । सिकदार=चौकीदारोंको । दरीब=क्षैत्र, मोहल्ले ।
४. मातंग=हाथी । खगाधीश=गरुड़ ।
५. अचान=अचानक । सिचान=शिकरा, एक प्रकारकी शिकारी चिड़िया । मलंग=पुष्ट, मोटा, झंप्योक=झपट कर । चंप्यो=पकड़ लिया । कुलंग=पक्षी विशेष, एक

अगरेज येम जरणैल साव, आयौ अचक रुद्ध्यो नवाब ।
लखि भयो ताहि संगराम लोप, खल करी नैंक ताती न तोप ॥७॥
दिय लोह कील अगरेज आय, सब दियऊ तोप ठाठनि गिराय ।
गिरवाय शस्त्र सब किये दीन, सुरभी समान रिपु घेरि लीन ॥८॥
करि आब हीन बोले निसक, उद्दित नवाबके भाल अक ।
नव लाख रेख दिय 'टूंक' थान, मालव समेत दुगनी बखान ॥९॥
द्रढ भयो म्लेच्छ फिर टूक आय, धरि शीश छत्र चामर चलाय ।
यम रच्यो थान तुरकान आन, घरियार द्वार नोबत निसान ॥१०॥
उन्नत अवास प्राकार धारि, बाजार हाट पट्टन संवारि ।
चहुँ ओर कूप आराम कीन्न, महज़ीत गुमज कव्बर नवीन ॥११॥
करि येम राज फिर मरचो मीर, तिहि ठोर बैठि दवलाउजीर ।
उन्नत गरूर पोरष अपार, सब लयो देश हय गय संभार ॥१२॥

दोहा

मीरखान जा दिन मरे, धरे न किलमूं धीर ।
ता दिन कछु समता परी, वैठे दरलउजीर ॥१३॥
यम कहिं रोवत कित गये, सब हिन्दुनके साल ।
असुर धरनि सब नारि नर, परे धरनि वेहाल ॥१४॥
यम वोले आसुर तनय, रक्खहु मनमे धीर ।
मुझको जानू मीरखां, अक्खे दवलउजीर ॥१५॥

प्रकारकी वतख जो काले रंगकी व सफेद रंग व जोगिया रंगकी होतीहै जिसको कुरजां भी कहते हैं। यह पक्षी आकाशमें एक कतारमें होकर झुण्डके झुण्ड उड़ते हैं। डिंगल कोषमें कुलंगका अर्थ 'चटक' लिखा है। मेरे विचारसे यहां कविका आशय चटक ही होना चाहिए। बाज=एक शिकारी पक्षी ।

७. अचंक=अचानक। ताती=तप्त।
८. दिय लोह कील=कील ठोक दी, वशमें कर लिया।
९. उदित नवावके भाल अंक=नवावका भाग्योदय समझ कर।
११. महज़ीत=मसजिद। कव्वर=कब्र।

दिन छिनदा उत्पात चित, रोष तरुनता रत्त।
त्रगुन तोर भ्रूकुटी त्रसर, भयो असुर उन्मत्त ।।१६।।

उनियारय भीमो नृपति, वीर पराक्रम बंक।
ता भयते आसुर तनय; रहत मानि उर संक ।।१७।।

छप्पय

देश कोश प्राकार कूप, आराम नदी नद।
धवल धाम हिमकलश, छार बारन मत्ते मद ।।
हय मज्जहि धरखूर, सेन चतुरंगनि सज्जहि।
बज्जहि नद्द निहाव, मनहु भद्दव घन गज्जहि ।।
तज्जहि अवास गिरि दरिन गहि, अरिगन भज्जहि मानि भय।
यह तोर भीम रज्जहि अवनि, लखि सुरेश लज्जहि बिभय ।।१८।।

मेघाडबर मंडि, सूर सज्जे सन्नाहनि।
फीलों फरकि निसान, गरक ताजी गज गाहनि ।।
धुनि तोपन संभरिय, अरी उर होय थरत्थर।
नयन रोस बित्थुरे, असुर प्रज्जरे धराधर ।।
नर सूर बीर घन दल प्रबल, प्रबल पराक्रम खल दमन।
करि येम राज भीमो नृपति, स्वर्ग मग्ग कीनो गमन ।।१९।।

दोहा

भीमो सुरपुर भिल्लयो, 'उनियारै' नरनाह।
फतयसिंह बैठे तखत, धर पद्धर पतस्याह ।।२०।।

---

१६. त्रगुन=तिगनी। तोर=तेउर, त्योरी, टेढ़ी नजर। त्रसर=त्रसल तीन सलवट।

१८. बारन=हाथी। निहाव=प्रतिध्वनि, नोवत, निहाई। रज्जहि=राज करता है। विभय=वैभव।

छंद पादाकुल पराकृत भाषा

सो रीति क्वं भीम गेहा, तत्थे पुत दिग्घ सनेहा ।
अप्पे गढ्ढां गढ्ढा घोरा, थप्पे पुत्रं धूम भभोरा ॥२१॥

दोहा

हल्ले तोपन लग्गहि, सोर सुरगन जाय ।
किल्ले धूम भंभोरके, लगै न आन उपाय ॥२१॥

ते किल्लो भीमो नृपति, कियक पूतके हत्थ ।
तिहिं सुरेतके पूत फिरि, मिलि कीनू पर हत्थ ॥२३॥

फतयसिहको मानि भय, मिले असुरसो जाय ।
किल्ले मध्य मलेच्छको दीन्हो अमल कराय ॥२४॥

इत उनियांरो टूक उत, मेर मिलत दहु राज ।
तदपि असुरको चित बध्यो, फिर धर दब्बन काज ॥२५॥

आये चढि नृपके नगर, आसुर करन अकाज ।
फतयसिह पठये सुभट, तिहि पुर रक्खन काज ॥२६॥

सुभट नृपतिके दोय शत, आसुरके शत चार ।
कढी कुबत मुखते किलम; कर कढ्ढी तरवार ॥२७॥

कुवत तेग कढ्ढी किलम, जिनो प्रथम लिय मार ।
वहुरि नरूकनि आसुरनि, पुरते दिये निकार ॥२८॥

तदपि नरूकन आसुरन, चार घरी जुध मंडि ।
बीस असुर धरनी परे, अवर गये रन छडि ॥२९॥

---

२१. गेहा=घर । तत्थे=वहां । पुत=पुत्र । दिग्घ=दीर्घ । अप्पे=दिये । थप्पे=स्थापित किये ।

२३. सुरेत=सुरतसिंह ।

२४. दीन्हो अमल कराय=हुकूमत करा दी ।

२५. मेर=सरहद, सीमा ।

फतयसिंहकी करि फतह, वहुरे सुभट समाज ।
मनु गयदनि युत्थ हनि, आये थहि मृगराज ।।३०।।
मीरखान सुत संभरे, जरे करेजनि लुक्क ।
आसुरके अंतहपुरनि, परी अचानक कुक्क ।।३१।।
कूक फजर सुनि मीरखा, आसुर दवल उजीर ।
करी वध चतुरगनी, धरी न उरमे धीर ।।३२।।

छंद पद्धरी

खिजि चढ़यो खान दवला उजीर, गज बाजि तोप रथ पक्ति भीर ।
यतमाम फील नोवत निशान, जगी सबाब सब सावधान ।।३३।।
कमनेत नेत बधी सिपाह, सब सिलह पूर बिट्टे सनाह ।
चवगान जान रनबीर खेत, ताजी तमाम पक्खर समेत ।।३४।।
करि गमन अस्त रवि संधि काल, कुल काक स्वान कूके कराल ।
समसान समुख कीनो पयान, वेताल भूत भूखे भयान ।।३५।।
दक्षन दिशमे बोल्यो उलूक, विपरीत समुख फ्योकर कूक ।
विकराल सद्ध श्रगाल आन, कूके कराल दक्खिन भुजान ।।३६।।
वामाग डक्कनिय पत्ति अस्व दक्खिन भुजान हूक्यो अनस्व ।
जगल विडाल किय रुदन पृष्टि, पशुकाल जन्तु मग परयो द्रष्टि ।।३७।।
कुलहीन अग चर्मा वितुड, बबोल उर्द्ध सिर महिष मुड ।
रडाल बाल बिथुरे असुभ्र, लज्या विहीन सिर रिक्त कुभ ।।३८।।

---

३०. वहुरे=वापिस लौटे । थहि= मांद ।
३३. यतमाम=यह सब । सबाब=असबाब, सामान ।
३४. बिट्टे=वेष्ठित, पहिने हुए ।
३५; भयान=भयोत्पादक ।
३६. फ्योकार=शृगालिनी ।
३६. डक्कनिय पत्ति अस्व=डाकनीके स्वामीका घोड़ा, अर्थात् कुत्ता । अनस्व=गधा । पशुकाल जन्तु=सर्प ।
३८. अंग चर्मा वितुंड=हाथीके समान चमड़ा है अंग पर जिसके । बंबील=सर्प । रंडाल=विधवा ।

सबंगि सीस मुडित विहाल, मग लोपि जात वामांग व्याल ।
ध्रत पात्र रोम चर्मा निहार, क्रम हीन रजक द्विज हेमकार ।।३९।।
मग जटिल सीस लिय संग स्वान, कर श्याम पात्र वर्जित उपान ।
अपशकुन भयेउ आघात एक, अपजोग पराजयके अनेक ।।४०।।
उद्दय प्रभात गत भई राति, जारत नरेशकी पुर जराति ।
बहु किये अनीति खल करन जग, यह सुनिय वत्त नृप फतयसिंह ।।४१।।

दोहा

सुनत कोपि किरवान लिय, फतयसिंह महाराज ।
मनहु इद्र कर कुलिस लिय, गिरि-पर कट्टन काज ।।४२।।

छंद त्रोटक

सुनके नृप के उर कोप वढ्यो, मघवा मनु दानव सीस चढ्यो ।
ठठुरीनि जुटी जुरि तोप हकी, भरि पेटिय समिल सोरनकी ।।४३।।
गमने मनु सिंधुर स्याम गिर, हय पक्खर विंटि सनाह नरं ।
गजराजनि घटनि घट वजै, सुनि आतुर कातर प्रान तजै ।।४४।।
सव सूर सनाहनि अट जँरी, हय हीस नगारनि ठोर परी ।
झरि विज्जुर सी कर तेग लसैं, तिनको लखि ईश मुनीश हँसै ।।४५।।
लखि सेन लिये कर खप्र खिली, मिलि जुग्गनि एक ही संग चली ।
भुव जतुनखी मख लेन चले, पत्रधार पल्लचर सग हले ।।४६।।

३९. सर्वंगि=सव, एक जाति विशेष । रोमचर्मा=सीधडा, ऊँटके चमड़ेका वरतन । हेमकार=स्वर्णकार, सुनार ।

४०. मग ..उपान=रास्तेमें जटाधारी मनुष्य कुत्तेके साथ, काली हांडी लिए हुए जूते रहित मिला ।

४१. जराति=खेती ।

४२. ठठुरीनि=तोपका ठाठा । जुटी=बैलोंकी जोड़ी । जुरि=जुत कर, लग कर । समिल=साथ । सोरनि=बारूद ।

४६. पत्रधार=पक्षी । पलच्चर=माँसाहारी ।

सब सूरनके तनु रोष तचे, तिनको लखि बाबन वीर नचे ।
उडि खेह खुरों रवि मंद भये, नभ हूर विमाननि छाय लये ।।४७।।
रज डंबर अम्बर मग्ग चढे, भ्रम कोक विभावरि शोक बढे ।
नभ देव विमाननकी अवली, उडि गिद्धनिके गन सग चली ।।४८।।
दल येम नरुकन के उमडे, धुरवा मनु भद्दवके घुमडे ।।४९।।

दोहा

अचल नरूकनि आसुरनि, जुटे सुभट दुहुँ ओर ।
मार मार मुख उच्चरे, परी नगारनि ठोर ।।५०।।

छंद मोतीदाम

मिले दुहुँ ओरनि हिंदु मलिच्छ, मनो शिव सेन प्रजापति दच्छ ।
पनकिय मेछ भजो नन मूर, ठनंकिय तेज हुतासन सूर ।।५१।।
हनकिय बाजि मिले दुहुँ ओर, धुनकिय तोप धुनी उडि सोर ।
गनकिय तोप तुपक्कनि-भक्ख, मनकिय आमिख-हारन लक्ख ।।५२।।
भनकिय तीर कबाननि ओक, सनकिय पखनि गिद्धनि सोक ।
ठनकिय मत्त मतगनि घट, घनकिय घूघर पक्खर अट ।।५३।।
मनकिय जत्र असोम अलाप, बनकिय कातर सद्ध कलाप ।
थनकिय नाटिक भैरव थाप, दनंकिय गिद्धनि आमिख खाय ।।५४।।

---

४७. विभावरी=रात्रि ।

४८. धुरवा=मेघ । भद्दव=भाद्रपद ।

५१. पनकिय=प्रण किया । नन=नहीं । मूर=मूल निश्चय । ठनकिय=झलका, उभरा ऊपर आया, पक्का हुआ, दृढ़ हुआ, टनटन आवाज हुई ।

५२. हनंकिय हिनहिना कर । धुनंकिय=ध्वनिकी, आवाजकी चली । गनंकिय=गरणाई, तेजीसे आवाज फैली । तुपक्कनि भख्ख=तोपोंकी खुराक, बारूद । मनंकिय=मन किया, इच्छा की, आमिषहारन=मांसाहारी ।

५३. भनकिय=भन भन शब्द किया । ओक=स्थान । सनंकिय=सन सन शब्द किया । सोक=वेगकी उड़ान । घनकिय=बजी ।

५४. बनंकिय=किया । थनंकिय=थिरकना, नाचना । दनंकिय=धोंकी, गर्जना की ।

खनकिय सायक धार करूर, झनंकिय झाझर रंभनि झूर।
छनकिय तीर बरच्छनि छोह, ननकिय बोह बिलवनि लोह, ॥५५॥
फनंकिय शेष पर्‌यो सिर भार, चुनंकिय शकर मुड निहार।
किनकिय जात सराह सनेम, रनकिय बीर नरूकनि येम ॥५६॥

दोहा

खिज्यो खान आयुध अली, कर कढ्ढी तरवार।
पद्धर पतिकी सेन पर, आयो किलम हकारि ॥५७॥
पक्खर टोप सनाह युत, पानि उदग्गन खग्ग।
सग बीर ले पच सत, लई तुरग्गनि बग्ग ॥५८॥

छन्द पद्धरी

हय खूर धूर लग्गी अकास, उडि गये पलच्चर मानि त्रास।
दुहुँ ओर तोप दग्गी कराल, जंगी असाध्य मनु जेठ ज्वाल ॥५९॥
मिलि सोर-धूम तम अधकार, मारुत प्रचड पंखनि प्रचार।
पर अप्प नैंकनन परत जान, जुध करत बोल बधव पिछान ॥६०॥
यह तोर हिन्दु तुरकान जुट्टि, किरवान पान इभ कुभ तुट्टि।
उपमान आन कवि मति अमत, घन मद्धि मनहु बिज्जुरि खिमत ॥६१॥
कछवाह मेच्छ गलबांह कीन, करि दाव घाव पोरस प्रवीन।
हय पीठि हुते धर परत आय, जुध करत देव दानव सुभाय ॥६२॥
खजर कटार चुकुमार मार, नटसाल घाव पजर दुसार।
गिरि परत भूमि पग उरझि अत, मादिक असाध्य मानहु परत ॥६३॥
कर धार सार वाहत अखड, मुख मार मार परि करत मुंड।
चचल तुरीनि कढि प्रान जात, मनु मीन फद परि तरफरात ॥६४॥

---

५५. झूर=सब। छनंकिय=छेद दिये। बरच्छनि छोह=बरछियोंकी नोक। बोह=प्रहार। ननंकिय=निश्चय ही किया। बिलंबनि लोह=लिपटा हुआ लोहा, कवच।
६१. इभ=हाथी। किरवान पान=तरवारकी धारसे। खिमंत=चमकती है।
६३. चुकुमार=गदा। पंजर=शरीर, देह। नटसाल=तीरकी गाँस। दुसार=आर पार छेद। मादिक असाध्य=खब (अत्यंत) नशे वाला।

आयुध अलीह-हय परचों खेत, घन घाव मीर घूमत अचेत ।
साहस्स धारि हय चढयो ओर, फिरि सार धार बजि ठौर ठौर ।।६५।।
केते कुठार बाहत करूर, परिघन कितेक सिर चकनचूर ।
बके छछोह करि बोह सेल, नट जेम तेहरीय चोट खेल ।।६६।।
गुपती कटार भमकार घाव, नन परत भूमि पर ठाह पाव ।
गिर जात भूमि तन भाफ धारि, फिर उठत मार मारहु बकारि ।।६७।।
घायल अनेक रन खेत घूमि, सनि गई श्रोनते रंग भूमि ।
कुल भान खान जुध येम कीन, धरपरयो भूभि आयुध अलीन ।।६८।।

दोहा

परयो धरनि आयुध अली, प्रजर्यो दवल उजीर ।
कर तसबी रक्खी तमकि, लिए सरासन तीर ।।६९।।
मनहु देव दानव दुहुनि, पानि उद्दगन खग्ग ।
मुसलमान हिंदवान फिरि, लिए तुरग्न बग्ग ।।७०।।

छंद दुर्मिला

हय हिन्दुनि हक्किय बीर किलक्किय सोर भभक्किय ओर दहू ।
सिर शेष लचक्किय भूमि भचक्किय कोल मचक्किय दत कहू ।।
किलमायुध हट्ठिय सायक पठ्ठिय चाप चमट्ठिय जोर दये ।
कसि बागन कठ्ठिय हिन्दु इकठ्ठिय बाजिन तठ्ठिय ओर दये ।।७१।।
तुरकान तलक्किय हिन्दु ललक्किय, हूर हलक्किय हेरिवर ।
कर सेल भलक्किय ढाल ढलक्किय खाल खलक्किय श्रोन भरं ।।

---

६५. ठौर ठौर=स्थान स्थान पर ।
६६. बाहत=चलाते हैं । परिघन=आगल (आयुध विशेष) । छछोह=सोत्साह । तेहरीय=तिगुनी ।
६७. भमकार=गहरा । ठाह=सीधा; सही, ठिकाने पर । झांप धारि=लडखडा कर ।
६८. तमकि=तमक कर, क्रोध करके ।
७१. भमकिय=भकसे जलना, एक दम जल उठना । कट्ठिय=काठी, जीन । भचक्किय =भोंचक्की हो गई । चमट्ठिय=चमोंठे, धनुषके ऊपर लगे हुए चमड़ेके बंध । तट्ठिय=उस दिशाकी ।

खग धार खनक्किय तीर छनक्किय प्रोथ सनक्किय होफ हयं।
इभ घट ठनक्किय नद्द रनक्किय भेरि भनक्किय सद्द भयं ॥७२॥
हयते हय सत्थिय रत्थनि रत्थिय हत्थनि हत्थिय जुद्ध करं।
लरि बत्थनि बत्थिय लूथप लत्थिय मत्थनि मत्थिय भूमि गिर ॥
बह्नी मनु दट्टिय सोर उपट्टिय कातर फट्टिय बैन दुख।
दहु दीन अहुट्टिय आरन थट्टिय सारन घट्टिय मार मुख ॥७३॥
तन तेगनि तच्छिय मानु कि मच्छिय तोयनि तुच्छिय त्यो तलफै।
कटि पायन कच्छिय घाव वरच्छिय धाव तरच्छिय ते मलफै ॥
खग धारनि खंडिय खंड बिहंडिय भारथ मंडिय भीम नच्यो।
पिय श्रोनित चंडिय धार अखंडिय, रभ घुमंडिय राश रच्यो ॥७४॥

दोहा

दपति हूर अपच्छर सूर बरि, बैठि विमाननि जात।
मानहु तीज दिन, डुलहर बैठि डुलात ॥७५॥

छप्पय

वजि धप्पी किरवान, बीन बज्जा धप्यो मुनि।
धप्पी गिद्धनि गूद, श्रोण धप्पी सब जुग्गनि ॥
हर धप्यो सिर चुनत, हेरि धप्पे नभ-धावनि।
बर धप्पी बरहूर, बीर धप्पे बकि बावनि ॥
दल मुसलमान बलवान खल, लुत्थ बत्थ धप्पे लरत।
धप्पे न युद्ध पद्धरपति, सूर बीर बके भिरत ॥७६॥

---

७२. तलक्किय=शीघ्र गमन किया, रपटके दौड़े। हलक्किय=प्रसन्नता हुई। प्रोथ=घोड़ेकी नाक। होफ=हाफना, जोर जोरसे सांस लेना।

७३. वह्नी=वह्नि, अग्नि। दट्टिय=दधक उठी। उपट्टिय=उत्पन्न हो गयी। दहुँ दीन=दोनों धर्म, हिन्दु मुसलमान। आरन=युद्ध।

७४. तच्छिय=काटना। मच्छिय=मछली। तुच्छिय=तुच्छ, कम। कच्छिय=घोड़े। धाव=दौड़ना। तरच्छिय=तिरछा, टेढ़ा होकर। मलफै=कूदे।

७५. डुलहर=झूला जो गोलाकारमें ऊपर नीचे झूलता है।

७६ धप्पी=धाप गया, तृप्त हो गया। नभधावनि=नभचर।

कर थक्के तरवार, म्लेच्छ कर थक्के मच्छर ।
बरि थक्के बरिहूर सूर बरि थक्के अच्छर ।।
पर थक्के पल चरनि धरनि थक्की नर भारनि ।
मार मार मुख बकत जीभ थक्की जोधारनि ।।
थक्के विमान असमान सुर, नर हैमर थक्के फिरत ।
थक्के न जुद्ध पद्धरपती सूरबीर बके भिरत ।।७७।।

श्रोन धार धर चलत चलत लख पंक्ति पलच्चर ।
कातर बिमुहे चलत, चलत समुहे नर हैमर ।
चलत लोह उत्ताल, सूल सरगदा परिघ्घन ।
चलत सोर साबत, मनहु डडूर बूंद घन ।।
उरचलत हॅस किरवान कर, चलत मुगल चलविचल चित ।
नन हिन्दु-पाय पुट्ठिन चलत, चपि अँगूठनि भूमि जित ।।७८।।

लोहकार उत्ताल, मनहु ऐरन घन गज्जिय ।
गजर मनहु घरियार जाम पूरन प्रति बज्जिय ।।
मनहु बूंद बस बात, असनि असमान विछुट्टिय ।
येक मेक अन्नेक तडित मानहुनभ तुट्टिय ।।
यम बजिय सार आतुर अनिय जुद्ध जीति फतमल प्रबल ।
बल मीरखान हुय चल विचल, वे भग्गे तुरकान दल ।।७९।।

दोहा

हुय तग्गा तग्गा तुरक, वे भग्गा तजि बैर ।
पानि उनग्गा खग्ग ले, लग्गा हिन्दू लैर ।।८०।।

---

७७. मच्छर=मत्सर, घमंड। अच्छर=अप्सरायें।
७८. बिमुहे=उलटे, विमुख। साबात=हवासे। डंडूर=वर्षाकी वे बूंदें जो हवाके वेगसे छितर कर पड़ती हैं। पुट्ठिन=पीछे। चपि=चांप कर, दबा कर। जित=जितना।
७८. उत्ताल=ऊची। असनि=विजली, वज्र। अनिय=फौज सेना।
८०. उनग्गा=नगे। लैर=पीछे।

छंद भुजंगप्रयात

सबै छाडि सब्बाब नव्वाव भग्गे, सुभट्ट फतैसिंहके लैर लग्गे ।
फतैसिंह राजा धरे बीर खेत, लुटे खानके सोर सीसा समेतं ॥८१॥
लुटे मेछके तोप तम्बू कनातं, लुटे अम्वर कीमखाबं बनात ।
फरी तेग बदूक सिल्लैहखान, लुटै तीर तूनीर सुद्धि कबान ॥८२॥
दुहाई फिरी पद्धरी हिन्दवान, लये छीनिके फील सुद्धे निसान ।
रुपे रोक पेटिनके भार फट्टै, हय पक्खरं टोप सन्नाह लुट्टै ॥८३॥
लई दीनताई रहे खानजादे, कहै खो गये मेच्छ बेरे विवादे ।
फतैसिहके बोलबाला चहेगे, सदा हिन्दुगी बादस्याही रहैंगे ॥८४॥
बचै ज्यान जो हिन्दु आगे हमारी, करै जारता पीरख्वाजे तुम्हारी ।
फतैसिहकी मेच्छ बोलै दुहाई, फतैराव राजा फतै जुद्ध पाई ॥८५॥

दोहा

यमजुट्टे दुह ओर जुध, मीरखान फतमाल ।
अपनी मति अनुसार कहि, वरनै ग्रथ गुपाल ॥८६॥

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वस कलहकेलिवर्णन सुकवि गोपालदान विरचित चतुर्थ प्रसग उनियारा युद्ध समाप्त ।

———०———

८१. सब्बाब=असबाव, सामान ।
८२. सुद्धि=सहित ।
८५. जारता=यात्रा, ज़ियारत ।
८८. उनग्गा=नंगी । लैर=पीछे ।

द्वितीय लावा युद्ध

सोरठा डिंगल

उणियारे आथाण, फतह नृपति कीधी फतह।
अब 'लावै' आराण, 'करणै' कीधी सो कहू ॥१॥
कुण सिर महुकम पाग, धर लावै सबलो धणी।
वाघ मणी थह बाघ, पाट लदाणै पातलो ॥२॥

छंद वेक्खरी

लावै भूमि मेर लख बिघ्घनि, हाटिक पाट अमारत दिघ्घनि।
नहि लबार ठग चोर जुवारी, पुर बसवान सकल सुखकारी ॥३॥
गढ़ सफील उन्नत छवि छाजत, रजत द्वार कलशादिक राजत।
पूर तोय परिखा चहू पासी, मगर मीन जलचर सुखरासी ॥४॥
कमल खिलत सरिता सर सोहत, वन उपवन खग मृग मन मोहत।
मधु छाके मधुकर गुँजारत, कोकिल कीर कपोत पुकारत ॥५॥
नित कृसान कृषि रचत नवीनी, मालव कासमेर धर चीनी।
आफू ईख जवानि उपज्जत, सप्त धान उपधानहु निपजत ॥६॥
दुगन साख षट् ऋतु मधि लूनत, सुनि सुनि टूँक असुर सिर धूनत।
करनसिंह दुज गो प्रतिपालत, वेद मृजाद नीति ध्रम चालत ॥७॥
वनु, सुजान, रनो बखतावर, गोविंद, हनुमत, तेग-किरावर।
बीर समुद्र सिंह बरदाई, क्षिति वितान सम कीरत छाई ॥८॥

---

१. आथाण = स्थान। आराण = युद्ध। करणै = कर्णसिंह।
२. कुण = किसके, यहां 'उण' शब्द होना चाहिए। सबलो = बलवान।
'मणीं' के स्थान पर 'तणी' शब्द होना चाहिए। थह = सिंहके रहनेका स्थान।
पातलो = प्रतापसिंह।
३ मेर = सीमा। बिघ्घनि = बीघा। लबार = वाचाल, बकवादी।
८, तेग किरावर = तलवारका धनी, तलवार चलानेमें चतुर। चावो = प्रसिद्ध।

सुनत पुरान त्रिसध्या साधत, दिन प्रतिदिन द्विज देव अराधत।
सम प्रभुता उरमे पूरन हित, एक थार भोजन नित जीमत ॥९॥
टूंक नजीक बैर जग चावो, गल सिघनि बधे गढ लावो।
लरन मनोरथ करि उर आनत, प्रबल नरुकनिको पहिचानत ॥१०॥
आसुर प्रतिदिन चित ललचानो, मन ही मन गुनि भयो अयानो।
तूल पत्र चित चक्र चढ्यो सो, ज्ञान मूढ़ मति मूढ पढ्यो सो ॥११॥
दिन छिनदा अहिमति उर आनत, प्रथम जुद्धकी रीति पिछानत ॥१२॥

दोहा

भय कर करत निरास चित, लालच करत प्रवेश।
आसुर जीव ससाक ज्यो, बढ घटि होत हमेश ॥१३॥
भावनगरको तुरक यक, सब तुरकन सिरताज।
कुसती पटो विनोट कृत, सव येलम उसताज ॥१४॥
टूक मध्य आयो तदन, सदन सदन परिसोर।
एलमगीर अधीर उर, सव तुरकन पर तोर ॥१५॥
रखहु सरब पर तव हुकम, ज्यान मान सब राज।
रहुगे दवलउजीर कहि, तुम हमरे उसताज ॥१६॥
करी सीख घरको किलम, दई नवाब विचारि।
हय पाटबर तार हिम, फरि तुप्पक तरवारि ॥१७॥
रुकि नवाबपै आय रहि, सबै सबाबनि मुक्कि।
पच सवारनते चढे, मेछ गये मग चुक्कि ॥१८॥

१४. येलम = विद्या। उसताज = उस्ताद, मास्टर, गुरु।
१५. एलमगीर = विद्या वाला। तोर = श्रेष्ठ, तुर्रा।
१७. करी सीख = विदा किया। फरि = बड़ी तरवार। तुप्पक = बंदूक।
१८. सबावनि = असबाब, सामान।

रंगकार तेलार बिनु, बिनु कलार दरवेश ।
सारबंध 'लावै' असुर, पुर नहि करत प्रवेश ॥१६॥
याते यहि मति धार उर, तहि खल उतरे आन ।
कुसमनि कर उपवन सघन, सर नजीक शिवथान ॥२०॥

छप्पय

करनसिंह उमराव, ईश पूजन यक आयो ।
करि परिक्रमण अनेक, बील पत्रनि हर छायो ॥
धूप दीप नैवेध, सुरख श्रीखंड चहोरे ।
अरक सुमन आधार, वारि मदाकिनि बोरे ॥
तुम चरन शरन त्रिलोक पति, यम सरनागत उच्चरी ।
वदन विनोद आनदमय, करि प्रणाम अस्तुति करी ॥२१॥

अथ शिव स्तुति छंद गीतिका

त्रिगुणात्म ईश त्रिलोचन त्रपुरात मार - प्रजारन ।
अलिकेन्दु बिन्दु, अदेव मर्दन, वारिधी-विष जारन ॥
गिरिजास्मितं, प्रतिमा सिता शिव सर्गुणात्मक रूपणं ।
निगमाग्म गावत विश्व व्यापक निर्विकार निरूपणं ॥२२॥
उरमाल मुडनि छाल मृगकी खाल केशरि जूसणं ।
वपुभस्म लेप स्मशान राजित व्याल पाणि विभूषणं ॥

---

१६. रंगकार = रंगरेज, नीलगर। तेलार = तेली। रंगकार·· प्रवेश = रंगरेज, तेली, फलार और फकीरके सिवा और कोई हथियार बंध मुसलमान "लावै" में प्रवेश नहीं कर सकता है।

२१. सुरख श्रीखंड = लाल चन्दन। चहोरे = चढ़ाए।

२२ त्रपुरांत = त्रिपुर नामक राक्षसको मारने वाले । मार-प्रजारनं = कामदेवको जलाने वाले। अलिकेन्दु = निश्कलंक चन्द्रमा। अदेव = दैत्य, राक्षस।

गनभूतप्रेत पिशाच कौतुक अत ततु जटा जुटी।
जय व्योम केश महेश त्रबक भीम भूतप धूर्जटी ॥२३॥

दोहा

येम सुभट अस्तुति करी, पानि जोरि परि पॉय।
करि वदन आनदमय, विविध कपोल बजाय ॥२४॥
बाजत सुनत कपोल हँसि, अरि करि कधुर वक।
ईशालय गमन्यो असुर, पनही सहित निसक ॥२५॥

छप्पय

तुरक एक तिन मध्य, रोष पोरुष गुन रत्तो।
मनहु छाग मुख मूत, येम आसुर उन्मत्तो ॥
पान सूल कव्वान, सुभर तूनीर शिलीमुख।
कटि बाँधी किरवान, चरम पावन आवन रुख ॥
खल आत सुभट बरजे प्रथम, मति आवहु यह मूढमति।
यह ठोर मेच्छ आवत नही, ये त्रिपुरारि त्रिलोक पति ॥२६॥
सुनत बत्त प्रज्जर्‍यो, आनि ईशालय अदर।
ईश शीश दिये पाव, कुबुद्धिकारी मनु बदर ॥
रोस नयन मुख रक्त, मूछ भूहनि मग चढ्ढिय।
कर कढ्ढिय किरवान, कुबत मुखते खल कढ्ढिय ॥
दहुं मार मार मुख उच्चरो, होय शब्द हंकार हर।
किरवान पान वाही किलम, हनी कटारी हिन्दु कर ॥२७॥

---

२३. जूसणं = लगा हुआ, चिपका हुआ।
२४. कंधुर = कंधर, गरदन।
२५. पनही = पगरखी, जूता।
२६. मनहु छाग मुख मूत = विषयोन्मत्त बकरा (बकरीके या अपने) पेशावको मुँहमे ले कर मानो मस्त हो गया हो। पान = पानि, हाथ। सुभर = खूब भरा हुआ।

आसुरके उर मध्य दत अतक सम बैसिय।
मानहु रध्र मुसाल, खभ ज्वाला गनि जैसिय ॥
बसन बेधि कटाक्ष, कोर कुलटा द्रग कढ्ढिय।
हढ्ढ बेधि जमद्ढ्ढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय ॥
ऊघरी जानि सपा जलद, चुवत श्रोन रग चढ्ढियो।
मानहु कुमारि जावक सहित, कर बतायन कढ्ढियो ॥२८॥
ते रिपु धरनी पर्यो, बहुरि मुरि मेच्छ हकारे।
सुनि कोतुक पुर लोग, आनि तिनको फिर मारे ॥
यम देवालय मध्य, दीन जुट्टे दहुँ सम्मर।
आलबाल भरि श्रोन भई प्रतिमा रातमर ॥
छड्यो सुमेक लघु बैस लखि, ते मग लग्गो टूकपुर।
दवलाउजीर दरगा तदन, अदन हेतु कूके असुर ॥२९॥

दोहा

उर कपित सूकत अधर, भरत ढरत युग नैन।
चित चक्रित वैबरन तन, कहत बाल कटु बैन ॥३०॥

छंद त्रिभंगी

नब्बाब कहाँरे राज तिहारे, हिन्दुनि धारे सो करि है।
हनि पिदर हमारे मातुल मारे बैर बिचारेको करिहै ॥

---

२८. दत अतक = यमके दात। बैसिय = बैठ गई, गड गई। मुसाल = मशाल, चिराग। बसन = वस्त्र। जमदढ्ढ = कटारी। पारऊ = दूसरी ओर, आरपार। ऊघरी = प्रकट हुई। सपा = बिजली। श्रोन = श्रोणित, खून। बातायन = वातायन, खिड़की, झरोखा

२९. हकारे = बुलाये। दीन = धर्म (यहां धर्म वाले) सम्मर = समर, युद्ध। आलवाल = थॉवला। रातंमर = लाल। बैस = वयस, उमर। दरगा = दरगाह, दरबार। कूके = पुकारे।

३०. वैवरन = वैवर्ण, मलिन।

अब या तुरकानीको हम जानी भई पुरानी बीगरि है।
असमान गिरेगा ना उबरेगा काफर रैगा तू मरि है ॥३१॥
दोजिगमे जैहै तू फल पैहै दावन गैहैं हम तुमरे।
ऐसी अनहूनी लखी न सूनी, कबरैं धूनी कुल हमरे॥
अब कोन हमारे देश तुम्हारे आनि पुकारे जोरयहां।
तुम सुनत न ऐसी हम परदेसी बालक भेषी जाय कहाँ ॥३२॥

दोहा

ते लरका मुख विष सुने, वायक सायक सार।
श्रुति सभर मेच्छदके पंजर करत प्रहार ॥३३॥
तब नवाव कथ उच्चरी, रक्खहु मनमे धीर।
सकल नरुकनिको हनो, तव मैं दवलउजीर ॥३४॥
गढ तोपनते करि सफा, पुरते करो तगीर।
"लावैं" हिन्दु न रक्खहूं, तो मैं दवलउजीर ॥३५॥
बोले सुनत तमाम खल, कर तोले किरवान।
जो "लावैं" जुध नहि जुरे, से नहि मुस्सलमान ॥३६॥
वडे मीरखा जुध जुरे, तहा परे रन खेत।
तुजे विरादर सबनके, चच्चे पिदर समेत ॥३७॥
कर मुच्छनि घल्ले किलम, यम बुल्ले उजवक्क।
स्याम काज पितुके वयर, हदपै मरना हक्क ॥३८॥

---

३१ पिदर = पिता। रैगा = रहेगा।
३२ दोजिग = दोजख, नर्क। दावन = दामन, पल्ला। गैहैं = पकड़े हैं।
सूनी = सुनी। कवरैं धूनी = क़बरमें धुआँ।
३५. तगीर = तगय्युर, परिवर्तन, निकालना।
३६. तोले किरवान = तलवार पकड़ कर।
३८. उजवक्क = मूर्ख, उजड्ड, असभ्य, उद्दंड। स्याम = स्वामी। वयर = वैर।

कर असील किरवान गहि, बुल्ले मीर मसूर ।
'लावै' लरना हक्क है, मरना बरना हूर ॥३९॥

नमक सरीतिन रक्खही, भक्ख अभक्ख समान ।
काफर दोजगमे परे, अक्खै मीर जहान ॥४०॥
अपने खावदके हुकम, करहि ज्यान कुरबान ।
हक बे मरना हक्क है, कहै कुतब्बी खान ॥४१॥
अक्खै सेख ततारखा, उर सहना जमदढ्ढ ।
मरनासे डरना कहा, लरना 'लावै' गढ्ढ ॥४२॥
यम बुल्ले इकतारखा, करना गढ़ चकचूर ।
काफर हैं सो बरजना, जुरना जुद्ध जरूर ॥४३॥

छन्द नीसाणी

उस बिरयो मुलतानखा मूछाँ कर घल्ले ।
अैंचि कवादे टक तोलि जब्बू कहि बुल्ले ॥
हम गिरते असमानको शिर केई बर झल्ले ।
दक्खनके दरम्यान कल दोऊ दल मिल्ले ॥४४॥
भूरि जमी असमानदे भालो मग झिल्ले ।
चल्ले हुलकर सिंधिया मुज पाव न चल्ले ॥
क्या किल्ले चोगानदे क्या उस पर हल्ले ।
हम किल्ले असमानदे कई बेर उथल्ले ॥४५॥

---

३९. असील = अशील, शील रहित, तेज ।
४०. सरीतिन = सरीकता, हिस्सा, साथ । अक्खै = कहै ।
४१. खावंद = पति, स्वामी । ज्यान = जीवन । कुरबान = बलिदान ।
४४. उस बिर = उस समय । घल्ले = डाले । अैंचि = खेंच कर । कवादे = सींगके टुकड़ोंसे बना धनुष । टंक = ४½ सेरकी शक्ति (जैसे हार्सपावरकी गणना मशीनमे होती है उसी प्रकार धनुषकी शक्ति टंकसे की जाती है जो ४½ सेर का होता है ।) जब्बू = जबून, खराब, बुरा । बर = बार, दफा, समय ।

सीकर ईश नवावको दोसत कर थट्टे ।
हम किल्ले सकरायदे सोरै पख जुट्टे ॥
तोप दगी दहुँ ओरते भर सोर उपट्टे ।
लुट्टे माल जखीरदे नर हैमर कट्टे ॥४६॥
उसदी अपनी सेन सव हल्ले कर कट्टे ।
आगे भी हनुमत थे किल्ले नहि छूट्टे ॥
क्या अच्छे कमनेत थे तीरो सिर तुट्टे ।
फिर उसदे तूनीरतैं सव तीरनि खुट्टे ॥४७॥
यो तर उन्मत फील करि भर पोरुष हट्टे ।
महा उपल मु जफटते सीनो विचि फट्टे ॥
हम किल्ले इस तोरसै वहु वेर उलट्टे ।
यारो 'लावा' कोटपै सवके दिल घट्टे ॥४८॥

छन्द भुजंगी

वडे मीरखाके चचा एक जुल्ला, कहावैं सवोंमे वड़े मीर मुल्ला ।
वडे मोलवी नेक पढ्ढे कुरान, यलल्ला यलल्लाह यलल्लाह जान ॥४९॥
इनो खूँन कीनो उनो वात अक्खै, उनोके इनों देवपै पाव रक्खै ।
लखे आपने दीनकी क्षीनताई, जिनोपै मरै मारना हक्क भाई ॥५०॥
वदी जो करै तो खुदाकी सजा है, सदा नेक रहना इनोमे मजा है ।
मिया एक मस्सूरखा नाम जाकै, वड़े तेजवान सवोमें कजाके ॥५१॥

४६. जखीर = खजाना । सौरे पख = सोडे गॉव वालोंकी पक्ष लेकर, वा सोलह पक्ष ।
४७. खुट्टे = समाप्त हो गये ।
४८ हट्टे = हट्टे कट्टे, मोटे ताजे । महा . . फट्टे = जिस प्रकार हाथी सूंडसे वड़े २ पत्थर लेकर अपने सीनेसे टकरा कर तोड़ देते हैं ।
४९. यलल्ला = या अल्लाह, ईश्वर ।
५१. वदी = बुराई । कजाके = कज्जाक, बलवान, लुटेरा ।

वही मीरखांके बजीरं कहावै, बड़े मीरजादे अदाब बजावै ।
बडे फारसी पोस जुब्बान चल्ली, अरब्बी पढ़े बुल्लके कल्ल बल्ली ॥५२॥

बड़े मीर मुल्ला कहा बात कीनी, खुदा मीरखाको नई भूमि दीनी ।
यते मीर मुल्ला कहा एक मानूँ, चमूँ जोरिके मूल "लावे" न जानूँ ॥५३॥

उनोके बनेंसिह राजा सहाई, जिनोकी फिरै देश देशो दुहाई ।
बबाजान याके जुरे जग 'लावै', उनोके रहेगा तुमारे न आवै ॥५४॥

सबै कूँममे यह नरूके बुरे है, जुरे जगमे यह कहूं ना मुरे है ।
जिते ये नरूके जुदे नाहि जानो, सबै देशके 'उन्नियारो', 'लदानो' ॥५५॥

वड़े मीरखाके रहे पीर पक्खै, उनोके कबीले इनो कैद रक्खै ।
कहा जो हमारा उनो भी न माना, सबै यार जानो रहा नाहि छाना ॥५६॥

सबै सोर सीसा सबाब लुटाये, रुपा लाख देके कबीला छुटाये ।
तुम्ही कल्ल यापै गये 'उन्नयारे', कला खोयके रोय पीछे पधारे ॥५७॥

हमै आज लौ बात ऐसी निहारी, अबै जो न मानू रजा है तिहारी ।
अबै मीर मस्सूरखा बत्त बोले, किये नैन 'रत्ते' करो तेग तोले ॥५८॥

उमीरी फकीरी बडे एक आंटे, खुदाने दई है किसीके न बांटे ।
किनू कायरी सूरताई दई है, जिनो अप्पनी अप्पनी ही लई है ॥५९॥

दरग्गाह जावो फकीरो पढावो, तसब्बी फिरावो खुदाको लडावो ।
तुम्हें बात ऐसीनसे काम क्या है, बड़े जो कहाये खुदाकी रजा है ॥६०॥

---

५२. फारसी पोस = फारसीदां, फारसी भाषा जानने वाले । बुल्लके कल्ल बल्ली = कल वल करके वोले ।
५६. छांना = छुपा हुआ । पक्खे = पक्ष पर, मदद पर ।
५६. उमीरी = अमीरी, ठकुराई । आंटे = फर्क है, अंतर है । बांटे = हिस्सेमें ।
६०. खुदाको लडाओ = ईश्वरका लाड (प्यार) करो, ईश्वरका भजन करो ।

रहै पीर दोला मदत्ति तिहारी, यलल्लाहके हाथ है जीति हारी ।
करि आज हिन्दूनि ऐसी अनेसी, तिहारे रही राजके पाज कैसी ॥६१॥

दोहा

करिय मीर भृकुटी कुटील, बोले येह जुवाब ।
किय रजपूतहि रज्ज विन, किय नवाव विन आव ॥६२॥
करहु वध चतुरगनी, सीसा सोर सवाव ।
कल बनास उतरहि कटक, यम दिय हुकम नवाव ॥६३॥

छंद मोतियदाम

भरो सत मत्त गयदनि सोर, करो फिर पीठ मदत्तिय ओर ।
हकी सब तोपन जुट्टि लगाय, धुनी लवबान पताकनि छाय ॥६४॥
वडे गजराजनि रग चढाय, करे उन्मत्त घनू मद पाय ।
चढै छलते हुजदार कजाक, मनो हनमंत चढ्यौ मयनाक ॥६५॥
सिरी असिता सिर भुल्ल समेत, मनो तम राह पडा रहि केत ।
किते गजराजनि पीठ निसान, किते गज पीठनि नोबत खान ॥६६॥
किते चवदंडिय होदनि छाय, दये डगबेरनिते खुलवाय ।
चले मिलि दतिय पक्ति समग्र, मनो बग पक्ति उठी घन अग्र ॥६७॥

---

६१. अनैसी = खोटी बात, बुरी बात, असह्य । पाज = सीमा, मर्यादा ।
६२ किय = किधों, अथवा, संदेह सूचक शब्द है ।
६४ जुट्टि = जोड़ी, बैलोंकी जोड़ी । धुनी = धूंणो, धूंम, धूआं । लवबान = लोबान, एक प्रकारका सुगधित द्रव्य, जिसको 'धूप' के स्थान पर मुसलमान लोग जलाते हैं।
६५. घनूं = घणां, अधिक । हुजदार = महावत, हाथीको चलाने वाला ।
६६ सिरी = श्री, हाथीके मस्तक पर किये जाने वाले रंग आदिको कहते है। असीता = काली । राह = राहु । केत = केतु ।
६७ चवदंडिय = चार डंडे वाले, अम्बावाड़ी छतरीदार हौदा । बेरनि = जंजीरोंसे ।

लसै उपमा यक और अचंभ, किधो शनि भोन शशी प्रतिबब।
ठनकत घँट चलै तनु मोर, मनू कुलटा चलि चित्तहि चोर ॥६८॥
झनकित झल्लिय कठनि सोर, मनो बरखागम बुल्लिय मोर।
चलावत अकुशते हुजदार, मनो गिरिके सिर बज्र प्रहार ॥६९॥
चले इभ अँदुक अेचत पाय, जरे पग लोह मनो जम जाय।
चवै मद पूर छभट्ठिय रांह, मनो बरषे घन भद्दव स्याह ॥७०॥
किते बिरच्चे गज मत्त करूर, करै गज गीरनके चकचूर।
उखारत मूल पिचू बटु तार, बजारनि हाक परी हटनार ॥७१॥
अनी चख भालनि भेरिय अग्र, धुवा चरखीनि मची धम जग्र।
तरायल हत्थनि दे बहुतारि, लये पुर बाहिर निठ्ठि निकार ॥७२॥

दोहा

उर अहिमति सिर भिरि उरस, हय पैदलनि समुच्च।
यम उजीरदवला चल्यो, कुच्च कुच्च दर कुच्च ॥७३॥

छंद भुजंगी

चढ्यो मीरखा सग जग्गि सवाब, चढ्यो मालवी जावरेको नबाब।
चढे बाजी ह्वैके सबै सैद सगी, हय पक्खर टोप सन्नाह जगी ॥७४॥

---

६९. झल्लिय = झालर, हाथीके गलेमे पहिनाई जाने वाली घूघरोंकी माला।
७० अँदुक = हाथीके बांधनेकी जजीर। छभट्ठिय = गंडस्थल छै स्थानोंसे। जम = यमराज।
७१. बिरच्चे = क्रोधित। गज गीरन = मजबूत दीवार। पिचू = कैरका वृक्ष, नीमका वृक्ष। हाक = हल्ला। हटनार = हडताल।
७२ भेरिय = सटा कर, भिड़ा कर। तरायल = चपल। बहुतारि = बहुत सी।
७३. उरस = आकाश।

चढे सिंधके भावनग्री मुसल्ले, करो ले कमट्ठे वय केक भुल्ले ।
चढे कुच्च दढ्ढे सिखा हीन मत्थे, इरानी अरब्बी तुरक्की चिगत्थे ॥७५॥
दिलीवाल सगी चढ़े जुद्ध काजं, जिनों सीसपै वंक वत्ती विराजं ।
चढे वंगसी रूम सींदी गिलज्ज, भतं भत्तनि कंत काता विलज्जं ॥७६॥
चढ्यो मीर मस्सूरखा तेज ताजी, जिनो देख मारुत्तकी गत्ति लाजी ।
चढ्यो खान दोरा बरच्छी घुमावै, फुलै अंग ये तो जरद्दं न मावै ॥७७॥
चढ़्यो जावदीखां सुरा अ्रध कधं, लगाए दुसालो जिनो जेर वंधं ।
चढ्यो जाफरीखा नचै बाजि अैसे, जिनूके अगे मृग्गके धाव कैसे ॥७८॥
हरेई चढ्यो वाजि साहावदीनं, भये कथ्थ केकीनके मान हीनं ।
चढ्यो दावदीखा हय वाग खच्चै, मनो पातुरी चातुरी भूमि नच्चै ॥७९॥
चढ्यो मीर कालू हयं बे विरच्चे, मनो मेक मूगा थतं थाल नच्चै ।
चढ्यो पीरखानं यतै वाज लक्खी, जिनोके रहे पीर चोवीस पक्खी ॥८०॥
चढ्यो गोसखान उड्यो हय हरेई, मनो आसमान विमानं परेई ।
चढ्यो मोजदारं दिवाना रवद्द, हयं पाव मंडै करीके हवद्दं ॥८१॥

---

७५. कुच्च दढ्ढे = कूँचीके समान दाढ़ीवाले, (कुच्च = एक प्रकारका औजार जिससे बुनकर लोग सूतको सुलझाते हैं) चिगत्थे = चगताई । कमट्ठे = कवान । केक = कई । भुल्ले = बूढ़े ।

७६. दिलीवाल = देहली वाले । वंकवत्ती = टोपीके ऊपरकी कलगी । भतं भत्तनि = भाँति भांतिके । कंत कान्ता विलज्जं = दूल्होंको भी लज्जित करने वाले ऐसे बने ठने ।

७७ जरद्दं = कवचमे ।

७८. अंधकंधं = मस्त हुआ ।

७९. हरेई = नीला, वाजिका विशेषण ।

८१. परेई = परी, अप्सरा ।

चढ्यो सेख तत्तारखा बाजि तत्ते, उडै आसमान मनो पोन पत्ते।
चढे खान जादे किते बाजि फेरै, उलट्टे सुलट्टे पटे दाव घेरै ।।८२।।
चढे मीरजादे सबे एक सत्थ, लखै आफताब जिनो थामि रत्थ ।।८३।।

दोहा

पच अयुत लय सग दल, होय किलम हमगीर।
कियो मुकाम उलघि जल, खल वासिष्टी तीर ।।८४।।
करनसिंघ प्राकार प्रति, सजि पूरन सामान।
कग्गल बधुनको दये, आसुर आवत जान ।।८५।।

छप्पय

उनियारे पति प्रबल मदत फतै नृप भेजी।
चोरू, महर्‌यो मिले तोर उत्थल अगरेजी ।।
स्योरापति हनुमत मिले बंधव पचालय।
पाट, थान, लद्दान, सदा असुरा उर सालय ।।
भारत्थ करन भारथ तनय, सग सुभट लाये सबल।
'लावै' उबेल आये दहू, पातिल गोबरधन प्रबल ।।८६।।
नग मारन मघवान दक्ष मारन शभूगन।
मृग मारन मृगराज, पनग मारन पनगासन ।।
कन्हर मारन कस, हरी हिरनाक्ष विदारण।
हर मारन मनमत्थ, पार्थ खांडीव प्रजारन ।।

---

८४. हमगीर = साथ। बासिष्टी = बनास नदी।
८५. कग्गल = कागज, पत्र, चिट्ठी।
८६. चोरू, महर्‌यो = गांवोंके नाम है, यहां उनके स्वामियोंसे मतलब है। तोर = तेवर, त्यौंरी। तोर उत्थल अंगरेजी = अंगरेजोंकी परवाह न करके। उर सालय = हृदयमें खटकने वाले। उबेल = मदद। पंचालय = पंचाला, एक ठिकानेका नाम। पाट = पाटन। थान = थाना, एक ठिकानेका नाम। लद्दान = लदाना, एक ठिकानेका नाम।

तुरकान सेन मारन तदन, इसो रूप दरसावियो ।
"लावै" ज्वेल वधू प्रवल, यम गोवरधन आवियो ॥८७॥

मार छोरु कर गह्यो धनुप कामातुर मारन ।
ईश छोरु ऊघरचो नयन तीजो प्रज्जारन ॥
अनिल छोरु व्रत परचो वहुरि मारुत भकभोरयो ।
सार छोरु दुद्धार वहुरि वाको विप वोरयो ॥
रन पत्थ छोरु सारथ हरी, सिघ छोरु पक्खर घल्यो ।
करनेग छोरु कल्लह करन, वहुरि आनि पातिल मिल्यो ॥८८॥

दोहा

वखतावर, गोविन्दवर, वीर पराक्रम सूर ।
आये 'लावै' वचि खत जैपुर हूत जरूर ॥८९॥

निसि वासर उन्मत्त रहि, आसुर जुत्थ उथाल ।
श्रो वखतो नव्वाव उर, सालत ज्यो नटसाल ॥९०॥

लावा-पति बंधु प्रवल, अलवर रहत असंक ।
तिनको धावन पठ्ये, लिखे वुलावन अंक ॥९१॥

---

८७. नग = पर्वत । मघवान = इंद्र । पनगासन = गरुड । कन्हर = कृष्ण ।

८८. छोरु = था तो सही, और । ऊघरयो = प्रकट किया, खोला । दुद्धार = दोधारा, दोनों तरफ पाण (धार) वाला । वोरयो = डुवाया । पत्थ = पार्थ. अर्जुन । घल्यो = डाला गया । कल्लह = कलह, युद्ध । पातिल = प्रतापसिंह ।

८९. वंचि = बांच कर, पढ़ कर । हूंत = से ।

९०. जुत्थ = यूथ, झुंड । उथाल = उलट कर । वखतो = बखतावरसिंह । सालत = खटकता है । नटसाल = फांस, गांस, कांटेका वह भाग जो टूट कर शरीरमें रह जाता है।

९१. धावन = दूत । अंक = आंक, अक्षर, पत्र ।

किल्ले रक्खनहार नहि, आज 'सलो' अनभंग ।
'रैनालय'मे थट्टियो, तुज्जि भरोसे जग ॥६२॥

जुध 'महुकम' थट्टो जदन, छो 'सादूल' सहाय ।
आज 'पना' ! तू सीस पर, ओ असमान उचाय ॥६३॥

पहिले जुद्ध खुमानसी, असुरा दिया उत्थल्लि ।
आज सुजान भुजानपै, सरम समूची झल्लि ॥६४॥

छप्पय

येम पत्र करनेश, लिखे अलवर पुग्गाये ।
पति पति प्रति पति, सकल बधुनि सुनि पाये ॥
अंक येम उघ्घरे, लोभ लग्गो पुर लुट्टन ।
आयो सरित उलघि, जुद्ध अपने गढ जुट्टन ॥
छुट्टै न दान किरवान बिनु, कहु दल जोर उमगियो ।
लग्गियो केत बासर किरन, ज्यो आसुर 'लावै' लग्गियो ॥६५॥

मत्तो मत्ति उर मद्धि, पत्र भूपति कर दिन्हिय ।
बचि खत्त बनराय, नयन रोषारुन किन्हिय ॥
बयन येम उच्चरे, गमन पल जैज न कीजै ।
सिलह तोप बारूद, जुद्ध सजत सब लीजै ॥

---

६२. सलो = सलहसिह । रैणालय = रणजीतका घर ।

६३. महुकम = महुकमसिंह । थट्टो = स्थापित किया । सादूल = शार्दूलसिंह । पना = पनेसिह । उचाय = ऊँचो, सर पर रखो ।

६४ सरम = शर्म, लज्जा । समूची = सम्पूर्ण ।

६५ पुग्गाए = पहुँचाये । उघ्घरे = प्रकट हुए । केत = केतुग्रह । बासर किरन = सूर्य ।

अव खूव जुद्ध करिवो उचित, पूरन मदति पठाय हैं।
जो रहत किलम सिर जोर तव, वहुरि सवलता आय हैं ॥६६॥

लखनेऊ पति कवन, कवन पंचाल धरत्तिय।
पल्हनपुर पठ्ठान, कवन भागलपुर पत्तिय ॥
खल भावलपुर कवन, कवन सिंधी जिल्लायत।
को वपुरो नव्वाव, टूक जावरै मिल्लायत ॥
अनयास होत मैवासपति, तुरक तोर तुट्टै तदन।
वनराव येम कथ उच्चरत्, सोर परत दिल्लय सदन ॥६७॥

मत मत्ते मातंग, द्वार खभारनि गज्जहि।
अयुत पंच रजपूत, सकल आयुध तन सज्जहि ॥
प्रवल तोप रथ पंक्ति, याम प्रति नोवत वज्जत।
सूर सुभट तोखार, सार पक्खर जुत सज्जत ॥
वावन दुरग वंके विविध, सव क्षिति छोगो छत्रपति।
वखतेश तनय वनराव नृप, करत राज अलवर नृपति ॥६८॥

छंद मोतीदाम

चढै वनराव महल्लनि भोर, परै सव शत्रुनके घर सोर।
जुरं नर हैमर गैमर जुत्थ, मनो चतुरंगनि रावन्न सत्थ ॥६९॥

---

६६. जेज = देर, विलंब। मत्तो मत्ति उर मद्धि = मनमें अपने आप ही मनसवा करके, अपने आप ही खूब सोच विचार कर।

६७. अनयास = अन आस, आशा रहित।

६८. तोखार = घोड़े। छोगो = शिरोमणि।

परै बहु ठोर बमीलनि बब, नचै मनु लकप काल कुटब ।
निवालनि धप्पिय लेत डकार, किते सद तोपनि फट्टि पहार ।।१००।।
करी समकौर करीनकी पति, उठी बरखा मनु ग्रीषम अति ।
लसै रद इदव देह दुनाय, जुटे मनु राह सनम्मुख आय ।।१०१।।
जरै सब पीतरतै सम दत, बसी हिमके मनु भोन बसत ।
झल्लकत झूल हवद्दनि पास, किधो झर मध्य रच्यो कयलास ।।१०२।।
हय सफ सारनकी खुरतार, खनकित पाहन अग्गि उपार ।
सजै हिम साखति भूखन गात, ग्रस्यो मनु आतप भान प्रभात ।।१०३।।
लसै पति पद्धर पिठ्ठ निसक, कसै कर बग्गनि कधुर वक ।
गुहे कच यालनके भरि बत्थ, सितासित पीत कनादिक सत्थ ।।१०४।।
मिलै जरदोजनितै मखतूल, सरासनपै मनु आतस फूल ।
बरक्खत पच तते तनु अच्छ, तलफ्फत मीन मनोजल तुच्छ ।।१०५।।

---

१००. ठोर = चोट । बमीलनि = नगारे, नक्कारे । बंब = रणनाद । लंकप = लंकापति रावणके । निवालनि = ग्रासोंसे ।

१०१. समकोर = बराबर, एकसार । इंदव = बहुतसे चन्द्रमा । राह = राहु ।
देह दुनाय = शरीरको दोहरा करके । (बंक चंद्रमहि ग्रसै न राहू, तुलसी)

१०२. पीतर = पीतल, धातु विशेष । भोन = घर । हवद्दनि = हौदा ।

१०३ सफ = पंक्ति, कतार । साखति = घोड़ेका साज सामान ।

१०४-१०५. गुहे . सत्थ = घोड़ेकी अयाल (गर्दनके) बाल कनोतीके साथ सफेद काले और पीले डोरोंसे गुथे हुए थे ।

पद्धरपति जिस घोड़े पर बैठे थे वह 'पंचकल्याण' (पाच सफेद चकते वाला) था । लसै पति.. मनोजल तुच्छ—पद्धरपति उस पंच कल्याण घोड़ेकी पीठ पर हाथ निशंक हाथमे लगाम कसे कंधेको तिरछा कर बैठे हुए थे, उसकी गर्दनके बाल कनोतीके साथ कफेद, काले और पीले डोरोंसे गुंथे हुये थे, ऐसा मालूम होता था कि मानो रेशम पर जरदोजीका काम हो रहा है अथवा, धनुष पर सूर्यमुखी फूल लगा हो । उसके तेज और स्वच्छ शरीर पर वे पाचों चिकत्थे, जब वह उछलता था तो मालूम होते थे मानो थोड़े जलमें मछली तड़पती हो ।

उड़े नभ रागनि लग्ग छछोह, मलफ्फत पच वरच्छनि बोह ।
सजै तिनपै असवार कजाक, छके उन्मत दुबारनि छाक ।।१०६।।
'लखा' हंनुमत जिसे उमराव, जिनू जुध मद्ध न डुल्लत पाव ।
चढ्यो मनु सिंधु उलघत पाज, जुरे जुध कौन वनेशते आज ।।१०७।।

दोहा

यम अक्खी बनराव नृप, हारि जीति हरि हत्थ ।
लरना मरना मारना, येह तिहारे सत्य ।।१०८।।

कर मुच्छनि घल्ले रवत, बुल्ले 'पनो', 'सुजान' ।
जो खल अग्गल भग्गि है, उगि है पच्छिम भान ।।१०९।।

सकल जुद्ध सामान दिय, विदा किये बनराज ।
मनु जग वोरनको उदधि, लगे उलघन पाज ।।११०।।

'थाना' पति 'हनुमंतसी', कँवर गढी पति 'कान' ।
'वीजवार' गढपति 'लखै', कर झल्ली किरवान ।।१११।।

छंद मोतीदाम

गढीपतिके रनजीत कुमार, सुनी यह वत्त गह्यो कर सार ।
किते वलके खल टूके नवाव, हरों गज वाजि करों विन आव ।।११२।।

---

१०६. छछोह = उत्साह सहित । मलफ्फत = उछलते हैं । रागनि = रानोंके (जघाके) इशारेसे ही । दुबारनि छाक = दूसरी वार निकाली हुई शराब । पच वरच्छनि वोह = पांच वरछियों जितनी लम्बाई तक ।
१०९. रवत = रावत, वीर । अग्गल = आगे, सन्मुख ।
११०. वोरन = डूबोनेके लिए ।
१११. वीजवार = अलवर रियासतका एक प्रसिद्ध 'ठिकाना' । थानां, गढ़ी = ये भी अलवरके ठिकानोंके नाम हैं ।

यतैं हनुमत कहि यह बत्त, अबैं घन मेच्छ भये उन्मत्त।
गह्यो कर बान उदग्गनि हत्थ, महिख्य समान उनत्थहि नत्थ ॥११३॥
'लखै' यम अक्खिय बत्त निसक, करो खल जुद्ध निकारहु बक।
सबो दल पूर मदत्तिय सग, करो न विलब जुरो यम जग ॥११४॥
हनूं खलके दल खग्गनि जोर, शकिते मग ग्गहि छाँडि मरोर।
यतो बलहीन करो खल जुद्ध, जुरैं नन जाय कहू फिर जुद्ध ॥११५॥

दोहा

बिंटि सनाहनि अट उर, सकल जुद्ध तन सज्जि।
चढे बीर पद्धरपती, पूर नगारनि वज्जि ॥११६॥

छंद भुजगी

घन घोर बबील बज्जे निघात, उडे गैन पखी मनो तूल पात।
'रणो' सूर बीर चढ्यो बाजि तत्ते, भये रोसकी ज्वालते नैन रत्ते ॥११७॥
महासूर बीर चढ्यो येम 'सूजो', मनो भानके बाजिपैं भान दूजो।
'पनू' पक्खरादी हय पीठि ओपै, मनू कामकी सेनपै ईश कोपै ॥११८॥
'पना'को तनू येम 'गोपाल' सज्जै, धरा नेत बधी हय खूर मज्जै।
चढ्यो रेवतं पूत 'सुज्जान' केरो, भयो जेठके भान जैसो उजेरो ॥११९॥
'हरन्नाथ' कुम्मेरको नद चढ्यो, घने आसुरोके घरो सोक बढ्यो।
दरोगो चढ्यो 'हाजर्‌यो' तेज ताजी, करैं लून राई भई रभ राजी ॥१२०॥

---

११३. महिख्य = भैंसे। उनत्थहि नत्थ = बिना रस्सी वालोंके नाकमे रस्सी डाल दूंगा।
११५. जोर = बल, ताकत। मरोर = मरोड़, ऐंठ, गर्व।
११६ बिंटि = वेष्ठित करके। अंट = आंटियें, कड़ियें।
११७. बंबील = नगारे। निघातं = चोट। गैन = गगनमे, आकाशमे।
११९. धरा नेत बंधी हयं खूर मज्जै = वह भाला लिए हुए था और उसका घोड़ा अपने खुरसे जमीनको खोदता था। तनूं = पुत्र। रेवतं = हाथी। केरो = का।
१२०. करैं लून राई = नोन राईको ले कर और वार कर अग्निमें डाल दिया जाता है। ऐसा करनेसे 'नजर' दृष्टि-दोष नहीं होता।

कपाली चढ्यो बैलपै लैर लग्यो, चढी सिघ काली, लखैं बैल भग्यो ।
गिरि मादिके मेखली रुड माला, गिरे अंत तंतावली मृग्गछाला ।।१२१।।
गिर्‍यो कालकूट परी भग तुच्छी, परे बित्थुरे भूमिपै नाग बिच्छी ।
जटी भूत प्रेत लिये लैर लग्यो, हठी वीरभद्रं तमासैं उमग्यो ।।१२२।।
चली जुग्गनी चोसठी पत्र झल्ले, बसूहीन सट्ठी महावीर चल्ले ।
मुनि जंत्र पाणी असोमं बजायो, ललक्कारि भैरूं किलक्कारि आयो ।।१२३।।
गुडी लो उडी गिद्धनी व्योम छायो, नही हूर रभा रथो पंथ पायो ।
भिरी पक्खरो पक्खरो भीरि पूरं, हय गज्ज गाह भयं चूरमूरं ।।१२४।।
धरा धूसरी धूरि आकास लग्गी, हय खूरते सीस धूनै पनग्गी ।
सवै सूरवीरं धर्‍यो सिघ भेस, कर्‍यो पद्धरि सेन 'लावै' प्रवेसं ।।१२५।।

दोहा

अब अरजन राठोरको, आवन कहू वखानि ।
जुद्ध भयो "लावैं" जदन, जिहि बिध जुट्टे आनि ।।१२६।।
बनयसिघ मातुल तनय, जिनो अरज्जुन नाम ।
मेरतियो कुल राठवर, पुर'मारौठ' सुधाम ।।१२७।।
हैदल पैदल संग दय, बिदा किये बनराज ।
यम कहि "लावै गढ्ढ"की, तुज्ज भुजो पर लाज ।।१२८।।

छंद मोतीदाम

चढ्यो हय पक्खर बिट्टि रठोर, पर्‍यो सिर शेष समस्तनि जोर ।
डुली मनि मत्थ फनी फन चपि, उरब्बिय ताम थरत्थर कंपि ।।१२९।।

---

१२१. कपाली = शिव । लैर लग्यो = पीछे २ चला । मादिके = मादक द्रव्य ।
१२२. जटी = जटा वाले, शिव । लैर = साथ ।
१२३. वसूहीन सट्ठी = आठ कम साठ अर्थात ५२ भैरव ।
१२९. उरब्बिय = उर्वि, पृथ्वी । ताम = उस समय ।

चले चक पत्र चलद्दलभाति, तलातल ज्यो अतला बिचलाति ।
शस्त्रनि तेज हुतासन धुक्ख, प्रलै रविकी मनु तुट्टि मयुक्ख ॥१३०॥
हयं सफ वज्र हरग्गिर खिज्ज, खिवै खुरतार मनो घन बिज्ज ।
उडी रज डबर अबर गोम, बिहगमकी पर वज्जिय व्योम ॥१३१॥
कियो मनु वाडव सिंधु प्रलोप, कियो मनु कसपै कन्हर कोप ।
भरी मनु सिंघ करीनिपै डग्ग, अरज्जन येम लग्यो जुध मग्ग ॥१३२॥

छप्पय

जिमि जैमल राठोर मरन चित्रागढ पायउ ।
पित्थुर संभरि ईश येम अरबुद्दनि आयउ ॥
धर छुट्टत चदेल आनि अन्हल सिर तुट्टिय ।
कन्हर पन कर हल्ल जग फतैपुर जुट्टिय ॥
यह तोर वदन राठोर तन, बीर नूर बरसावियो ।
पन झल्ल पूर मारन मरन, येम अरज्जन आवियो ॥१३३॥
लख बटेर सिच्चान मनहु चीतो मृग मारन ।
हेरि पत्थ जयद्रथ बाघ हेर्‌यो मनु बारन ॥
हर हेर्‌यो मनु मार सोर हेर्‌यो हुत्तासन ।
सर हेर्‌यो आगस्त, पनग हेर्‌यो पनगासन ॥
पायो कुलग कुल बाज मनु, भीम दुसासन पावियो ।
आसुरां सीस 'लावै' मलफि, येम अरज्जुन आवियो ॥१३४॥

---

१३०. यहां 'पत्र' के स्थान पर 'पत्त' पाठ होना चाहिए । चक पत्त = दिशाओंके मालिक । बिचलाति = विचलित हो गये ।
१३१. सफ = पंक्ति, कतार । खिज्ज = खिरना, टूटना । खिवै = चिनगारी निकलती है, चमकती है । डंबर = समूह । गोम = धुंधला गया ।
१३३. चित्रागढ़ = चित्तोड़ । पित्थुर = पृथ्वीराज । अरबुद्दनि = अर्बुदाचल, आबू पहाड़ ।
१३४. पत्थ = पार्थ, अर्जुन । वारन = हाथी । सोर = बारूद । मलफि = कूद कर ।

जिमि जालधर तक्कि, जुद्ध जुट्टन हर आयो ।
हैहय नैं हकार, मनहु फरसाधर धायो ।।
पंडव पत्थ सहाय, क्रस्न आयो जिमि जद्दव ।
कृषि सूकेते मेघ, मनहु धायो धुर भद्दव ।।
हय हक्कि वीर आतुर यते, रज डंबर नभ छावियो ।
"लावै" उवेल असुरां लरन, येम अरज्जन अवियो ।।१३५।।

दोहा

येम अरज्जुन आवियो, "लावा" मधि राठोर ।
तदन खद्दनके हिये, पर्‌यो अचानक सोर ।।१३६।।
तुरकनके आगम तदन, कर गहि ऐचे काल ।
आये जुत्थपैं जुत्थ मनु, सिहालय श्रगाल ।।१३७।।
के मरना के मारना, यम नवाव पन झल्लि ।
हम ऊतरि है फीलते, "लावो कोट" उत्थल्लि ।।१३८।।
फिरी प्रबल चतुरंगनी, पुर दुरग चहु कोर ।
इत हिन्दुनि उत आसुरनि, दगीं तोप दहुं ओर ।।१३९।।

छन्द मोतीदाम

यतै दुहु ओरनि दग्गिय तोप, किये मनु काल प्रलै कृत कोप ।
मिले सद मध्य जमूर जुगाल, किलक्कत जुग्गनि जानि कराल ।।१४०।।
भयो दुहुं ओर भयानक सद्द, पर्‌यो उन्मत्त मतगनि मद्द ।
भयो उर सूरनके उछरंग, थरत्थर कंपिय कातर अंग ।।१४१।।

---

१३६. फिरी = घूमी, घूम गई, घेरा डाल लिया । दुरंग = किला ।
१४०. सद = शब्द । सदमध्य = तोपोंके शब्दोंके बीचमें । जुगाल = दोनों ओरके ।
१४१. उछरंग = उत्साह ।

धुनी उडि सोर उपट्टिय ज्वाल, किधो घन तुट्टिय बिज्जु कराल।
तुपक्कनि तोप जमूरनि जुट्टि, परै नर हैवर प्रान विछुट्टि ॥१४२॥
उडी झर सोर बिथोरत बाय, लगी मनु ग्रीषमकी ऋतु लाय।
तलत्तलि तोय तते मनु तेल, लगे दुहु ओरनितै यह खेल ॥१४३॥

छप्पय

मुख्य तनय 'सादूल' सुभट सगी रोषारुन।
सजि आयुध सन्नाह, बीटि पक्खर तोषारुन ॥
खल खग्गनि खडिहु, येम बायक मुख बुल्लै।
पाहन रेख प्रमाण, 'पनै' पूरन पन झल्ले ॥
हय हक्कि समुख चतुरगनी, बहुरि मुगल दल मारिहू।
करि जुद्ध येम चवग्गनि फिरि, आसुर देश प्रजारिहू ॥१४४॥

दोहा

पनयसिह पद्धरपती, सूरवीर गहि सार।
तदन मुगल दलपै प्रबल, यम हक्के तोषार ॥१४५॥

छंद मोतीदाम

चढ़े मनु सिंधु उलघन पाज, करी मनु सिह करीनिपै गाज।
किधो बडवानल कोप समुद्र, किधो हथनापुरपै बलिभद्र ॥१४६॥

---

१४२. धुनी = धूनी, धुआँ धूम्र।
१४३. झर = लपट, ज्वाला। सोर = बारूद। बिथोरत = फैलाना। बाय = वायु। लाय = अग्नि। तलत्तलि = तलातल तकका। तते = गरम हो गया।
१४४. रोषारुन = गुस्सेसे लाल। तोषारुन = घोंड़ोंको। चवग्गनि = चौगान, मैदान।
१४५. तोषार = घोड़े।

किधो कुल अद्रनि इद्र हकारी, किधो कुल कद्रुनिपैं पनगारि ।
किधो सर सोखन कोप अगस्त, किधो द्रुम डारिनपैं गज मस्त ॥१४७॥
किधो कुल रावनपैं रघुराय, किधो कुल कज हिमालय-वाय ।
किधो सहिश्राभुजपैं दुजराम, किधो हनमत असोक अराम ॥१४८॥
किधो इभकुभ ब्रकोदर हत्थ, किधो जयद्रथ्थहिपैं पन पत्थ ।
किधो त्रिपुरासरपैं त्रिपुरारि, किधो मुरदानव सीस मुरारि ॥१४९॥
किधो मृग जुत्थनपैं मृगराज, किधो लखि चग कुलगनि वाज ।
किधो दखके मखपैं हर ताप, किधो कुल जादवपैं ऋषि श्राप ॥१५०॥
किधो घननादपैं लक्ष्मन वीर, जिही कुल मेच्छ'पनू' हमगीर ॥१५१॥

दोहा

तेज वाजि हक्के तदन, पनयसिह यह विद्धि ।
मुख चढ्ढे जेते किलम, मरे परे धर मद्धि ॥१५२॥
किते बोह कीने किलम, लग्गे लोहन काय ।
प्रवल नरुकनके तदन, सकर भयो सहाय ॥१५३॥
येम जोरि चतुरगनी, पद्धरपति 'पन्नेस' ।
किलम सहारनको भयो, बीरभद्र गनभेश ॥१५४॥

छंद भुजंगी

करो तेज तांजीनकी बाग झल्ले, धरा लूटिवेको महासूर चल्ले ।
मतो मत्ति ले सग जगीन सन्ने, परे मेच्छ किल्लोनपैं जोर घन्ने ॥१५५॥

---

१४७. अद्रनि = पहाड़ । कद्रनि = सर्प ।
१४९ ब्रकोदर = पाडुपुत्र भीम । पत्थ = पार्थ, अर्जुन ।
१५०. चंग = चंगे, मोटे ताजा । कुलंग = एक बतखकी जाति ।
१५१. हमगीर = समान, साथी । जिही = ज्यूहीं, वैसे ही ।
१५२. यह विद्धि = इस प्रकार । मुख चढ्ढे = सन्मुख आया ।

हरी देख मालीत भूमी प्रजारी, परे आसुरोंके घरो सोक भारी।
पुरी प्रज्जरी मेच्छकी घूम धायो, धरा व्योम धप्पे मनू अभ्र छायो ॥१५६
मिले नग्र मेच्छदवारे गरद्द, भयो टूक भारी हहकार सद्द।
चकै ओचकै तारुनी वृद्ध छोना, किती आसुरी गर्भ आवत ऊना ॥१५७
मृगाकसीपी त्यो पुरी शक्र कूटी, किधो धीर पुडीर लाहोर लूटी
हरे कोपि कुट्टी पुरी त्यो अनगी, बिधूसे 'पनै' मेच्छकी भूमि चगी ॥१५८

दोहा

बूडी सोक समुद्र बिच, जीव निसासनि जात।
बीबी दवलउजीरकी, यम लिखि भेजी बात ॥१५६॥
'पना' एक रघर सुना, जिना दिया फुरमाया
पकरेगे हमको वहै, आजकालमे आय ॥१६०॥
सकल 'टूक' बसवान खल, सरल भये तजि बक।
संधि करहु 'करनेश'ते, यम लिखि भेजे अक ॥१६१॥

छंद नीसानी

यम लिखि दोलउजीरनै पुरजा पहुँचाया।
खान बिरादर नोकरो सबको बुलवाया ॥

---

१५५. झल्ले = पकडी। मतो मत्ति = अपने आप। सन्ने = सेना, फौज। घन्ने = बहुत
१५६. मालीत = दौलत। हरी = छीन ली। धायो = फैल गया, दौड़ा। धप्पे = व्याप्त हो गये, भर गये।
१५७. अभ्र = बादल। नग्र = नगर। गरद्दं = गारत हो गये, बरबाद हो गये। चकै ओचकै = घबड़ा गये। छोना = लड़के, बच्चे। ऊना = अधूरा।
१५८. मृगाकसीपी = हिरण्यकश्यप। चंगी = ताजा।
१६०. रंघर = प्रणके पक्के राजपूत। जिना = जिसने।
१६१. बसवान = बसने वाले।

सबके वीच मसूरखा पुरजा बचवाया ।
फिर कासीद जवानदा समंचार सुनाया ॥१६२॥
उस 'पत्रै' सादूलदे सब देश जराया ।
जारी सब जरातिको मध छार मिलाया ॥
खेहाडवर धूमते धर अम्बर छाया ।
हल्ला बोलि हकारिकें किल्ला गिरदाया ॥१६३॥
'टूक' समेती भूमि गढ लूटनका दाया ।
करि समभासि नवावकों सबनैं समभाया ॥
उस वरि यो 'दोले' नवाव पुरजा सुनि पाया ।
जहर भरे जिह्मग जिम घन रोषए छाया ॥१६४॥
रोष मुसल्ले आनि उर हल्ले सिर लग्गो ।
उस बिरियो 'खुम्मान'वा 'हनुमत' उमग्गो ॥
'सिवरा'के 'हनुमंत' भी वाई भुज लग्गो ।
केसर सन्ने कापरे कर तेग उनग्गो ॥१६५॥
पानिप तासे भेरि नद वीरा रस बग्गो ।
केते सिंधू राग सुनि कातर गन भग्गो ।
तोपन दिघ्घ अवाजते धरनी धग धग्गो ।
कोल कमठ्ठे जोर परि शिर धूनि पनग्गो ॥१६६॥

---

१६२. नैं=को । पुरजा=पत्र ।
१६३. दे=के । छार मिलाया=मिट्टीमे मिलाया, वरवाद किया । गिरदाया=घेर लिया ।
१६४. समेती=सहित । दाया=हक । जिह्मग=टेढ़ा चलने वाला सर्प ।
१६५. हल्ले सिर लग्गो=हमला कर दिया । सन्ने=सने हुए, रंगे हुए । कापरे=कपडे ।
१६६. धग धग्गो=कंपित हो गई ।

कारतूस घन युट्ठ कर सुम्मा लग थग्गे ।
एक पलीती कालिका दहूं ओरनि दग्गे ॥
रिंजक प्याला सोरही झाला जगमग्गे ।
यारो परलै कालदी ज्वालानल जग्गे ॥१६७॥

छन्द मोतीदाम

मिलक्किय दीन दहूजुध पूर, हलक्किय बैठि बिमाननि हूर ।
किलक्किय जुग्गनि शब्द कराल, खलक्किय भूमि किते रुहिराल ॥१६८॥

तुपक्कनि तोप जमूर जुलाल, परघ्घन सूल गदा भिदिपाल ।
गुपत्तिय खजर धूप कटार, करत्तिय चक्र चलै चुकमार ॥१६९॥

फरी पिसतोल गुलेल कुठार, थके नन हत्थ बकै मुख मार ।
जुरै कहू सीस बिहीन कबध, परै कहू काल कला कृत फंद ॥१७०॥

किते बिन पाय परे तरफात, किते कढि प्रान पयाननि जात ।
किते कर पांय परे अनमेल, रचे मनु भूमि प्रपचिय खेल ॥१७१॥

---

१६७. घन=ज्यादा । युट्ठ कर=युक्त कर, लगा कर, डाल कर । सुम्मा=तोपको साफ करनेका डंडा, जिसके सिरे पर एक गुच्छा लगा हुआ होता है । लग थग्गे=कंपित हो गए । पलीती=बत्ती । रिंजक=तोपके कानमें रखी जानी वाली बारूद । प्याला=तोपका कान । झाला=ज्वाला ।

१६८. मिलक्किय=मिले । दीन दहूं=दोनों धर्म वाले, हिन्दू, मुसलमान । खलक्किय=बहे । रुहिराल=खूनके नाले ।

१६९. जमूर=छोटी तोपें । जुलाल=बड़ी बन्दूक । परघ्घन=आगल । सूल=त्रिसूल । भिंदिपाल=गोफा, गोफना, एक अस्त्र विशेष । धूप=तलवार, खांडा । करत्तिय=कतरनी । चुक=गदा ।

१७०. फरी=शस्त्र विशेष । गुलेल=एक प्रकारका अस्त्र, मूल प्रतिमे "गुलाल" पाठ है । जुरै=जुड़ै, भिड़ै ।

१७१. तरफात=तरफराना, तड़फड़ाना ।

लई पद चंपि अगूठनि भूमि, सरब्बसु दब्ब लई मनो सूमि।
खरे हनुमंत दुहु तिहँ ठौर, लये मनु हिंदव सिंधु हिलोर ॥१७२॥
लये तहँ मीर मसूरहि मारि, हने मनुं सिंधु तनै त्रिपुरारि।
पर्यो रन खेत मसूर मलेच्छ, मचक्किय सेन किलमनि पच्छ ॥१७३॥

दोहा

बज्जहि पूरन जाम प्रति, मनहु घरी घरियार।
यह प्रकार दुहुँ ओरते, बज्जे सार अपार ॥१७४॥
खान पान सुध बीसरी, धरी न उरमे धीर।
मरन मसूर मलेच्छको, संभर दवलउजीर ॥१७५॥

छन्द मोतीदाम

करे तहि दोलउजीर विलाप, भयो सुरभंग महिख्य अलाप।
लख्यो तन तेगनते चकचूर, पुकारत मेक मसूर मसूर ॥१७६॥
बढ्यो उर सोक असाद्धि प्रलाप, तच्यो बडवानलकी मनु ताप।
पर्यो भुव प्रान दुखी मुख फैन, तलफ्फत व्याधि हन्यो मनु अैन ॥१७७॥
यते बहु दीर्घ बिरादर आय, दयो उरु धीर किते समुझाय।
सुनी रजपूतनकी कुल रीत, परी हमको यह सच्च प्रतीत ॥१७८॥
मरै तिनके घर मंगल होय, करै जुध मृत्यू बिलाप न कोय।
करो नन सोक दवल्लउजीर, करो द्रढ़ पांव धरो उर धीर ॥१७९॥

---

१७२. चंपि=दावना। दब्ब लई=दावली, अधिकारमें कर ली। सूमि=घोड़ोंके खुरोंसे।
१७३. तनै=तनय, पुत्र। मचक्किय=सरकी, हिली, हटी।
१७६. महिख्य अलाप=भैंसेकी तरह चिल्लाया।
१७७. तच्यो=तपा हुआ। अैन=हारण।
१७८. बिरादर=भाई।

छंद निसानी

मरा मीर मसूरको दुख धारा तब्बी ।
ज्यो घ्रत डारा आगिमे हिय पावक हुब्बी ॥
जानिक तत्ते तेलमे बूंदै परि अब्बी ।
जानि बिरूते सेरदी पग साकल दब्बी ॥१८०॥

कायमखां कपतानसे करि बाते चब्बी ।
सेख इनायत खानके भुज पलटए ढब्बी ॥
टेरि कुतबीखांनसे खुद कहा मुरब्बी ।
हल्ले पूठे ना फिरै कल उसकी फब्बी ॥१८१॥

के तुम किल्ले तोरियो के मरियो सब्बी ।
देखो नब्बी क्या करै कर नाख तसब्बी ॥
उस बिर यो वज्जीरदौलकू कहै कुतब्बी ।
जानिक सुर्गे लेनको हिरनाख्य मुरब्बी ॥१८२॥

दोहा

रहो नवाब निसंक उर, सोक न करहु सयान ।
मारा मीर मसूर तहु, खर्यो कुतब्बी खान ॥१८३॥
प्रलय सिंधु सम खिजि असुर, गवने तोपन दग्गि ।
मही काल बासर समय, यहि विधि चले उमग्गि ॥१८४॥
स्याम बसन सायुध सिली, मिली भयानक भेस ।
मनहु हलाहलकी सरित, पुर मधि कियहु प्रवेश ॥१८५॥

---

१८०. तब्बी = तव । हुब्बी = उठी, । अब्बी = आब, पानी । बिरूते = क्रोधित ।
१८१. चब्बी = टेंडी, चिडानेको । ढब्बी = संभलाई, अधिकारमे दी । पूठे = पीछे । फब्बी = शोभा होगी । मुरब्बी = मालिक, स्वामी ।
१८४. मही काल बासर = प्रलयका दिन ।

छप्पय

सेन समुख तिह समय आनि 'हाजरियो' जुट्टे ।
हुय कोलाहल शब्द किलम इक्वान कुट्टे ॥
खजर सेल कटार, तेग तुरकायन तच्छे ।
स्याम काज सिर दयो, पाव धर दिये न पिच्छे ॥
सिर माल काज सकर लयो, सिर बिहीन धर फिर लर्यो ।
बरि रभ गयो सुरलोक मग, एम दरोगो 'हाजर्यो' ॥१८६॥

दोहा

सुनत बत्त रनजीत यम, आगम असुर समाज ।
मनहुं जुत्थ मातग पर, लखि गमन्यो मृगराज ॥१८७॥
उते कुतब्बीखान अरु, यत रणजीत सजोर ।
तदन पत्थ जयद्रत्थ लो, पर्यो दहुनि पर जोर ॥१८८॥

छंद भुजंगी

'रणो', खाकुतब्बी तणे सीस चल्यो ।
मनो मत्त मातग खूनी मचल्यो ॥
खिज्यो खाकुतब्बी मनूं सिंधू लोप्यो ।
किधो पत्थके रत्थपै द्रोन कोप्यो ॥१८९॥
जरासिध लो अगमे जोर पायो ।
पनग्गी मनू पाँय पुच्छी दबायो ॥
दहूकी अनी मोसरो मुह चढ्ढी ।
दहूंके करो ज्वालसी धूप कढ्ढी ॥१९०॥

---

१८६. कुट्टे = कूटे, मारे । तच्छे = छील दिये । स्याम = स्वामी ।
१९०. अनी = फौज । मोसरों = मंछें, होठोंके बाल ।

दुहूँके जुरे छोइते नैन छक्के ।
खरी लाट लग्गी, मनू लोह पक्के ॥
दहूँ मेरलो भूमिपै मडि पाँव ।
दहू बीर बके करै दाव घाव ॥१६१॥
दहू प्रान बाजी रची मोह छड्डे ।
दुहूँ जै पराजै भुजों भार मड्डे ॥
दहू जेम जुट्टे मधु कीट दानू ।
मनी हेत श्रीकृस्न जामूत मानू ॥१६२॥
किये मेच्छ बोह किते पूर घाय ।
भयो भीम कैलास पत्ती सहाय ॥
बही मेक रनालय हत्थ रूक ।
तुपक्क फरी मुट्ठि मेच्छ बिट्टूक ॥१६३॥
पर्‌यो खाकुतब्बी सबै सेन भग्गी ।
लगे लैर हिन्दू लिये तेग नग्गी ॥
भई जीत हिन्दूनकी मेच्छ हारे ।
किले मद्धिते कूट पीछे निकारै ॥१६४॥

दोहा

एक सहस अरु एक सत, एकादस जुध जुट्टि ।
"रैनालय" कट्टे रवद, किल्ले बाहिर कुट्टि ॥१६५॥
किल्ले भिरि भग्गो किलम, जे नहि जुट्टन जोग ।
मरे डरे घायल परे, भये अजीरन रोग ॥१६६॥

---

१६१ छोइ=क्रोध। मेर=मेरू पर्वत।
१६२ जामूत=जामवन्त। बोह=वार। घायं=घाव।
१६३. रूकं=तरवार। मेक=एक। रनालयं=रणजीतसिंहका स्थान, लावाकी युद्ध भूमि। बही=चली। बिट्टूकं=दो टुकड़े हो गये।
१६५. रवद=म्लेच्छ, मुसलमान।

अहुटे दवलउजीर पँह, जियत रहे जे आय।
अपनी अपनी बुद्धि बल, कहत सकल समुझाय ॥१६७॥

वचनिका

नबावके सामने आया, हल्लेका जिकर चलाया। किस तौरसे आजका दग्गा, कोन भिरा कोन भग्गा। उस बखत बोले कालू मीर, फुरतके फरिस्ता अकलके उजीर। इस किल्लेमे सुजानसिंघ ठाकर, जिसके 'हाजऱ्या' चाकर। 'हाजऱ्या'ने आपा दिखलाया, गलबेके साथ बाहरको आया। 'हाजऱ्या'ने जान झोका, आफताबने विमान रोका। निमककी सरीतीपै सिर दिया, हूरके विमान बैठि आसमानको गया। आजके हल्लेमे नवाबकी दुहाई, सीनासे सीना मिला कर तरवार चलाई। सब जवान वहा गया था, किल्ला लेनामे कसूर ना रहा था। उस सुन्ने-रनि मूठ वालेने जुल्म किया, तमाम मुसलमानोको घेंचि किल्लेकी रनीमे दिया। क्या अच्छी तरवार चलाई जिस बखत बोले खान दुर्जन, काल-पीके सैयद ईलाहीबकसके फरजन। हिन्दु जाति कालके काल, बाडबके

---

१६७. अहुटे = वापस लौटे।
बचनिकामें-जिकर = चर्चा, प्रसंग। गलबेके साथ = हल्लेके साथ। जान झोका = तन-मनसे महनत करना, तन मनसे लड़ा। सरीतीपै = एवजमे। घेंचि = खींच कर। रनी = खाई। वितुंड = हाथी। जलाल्या = दरवाजेके बीचमें लगा हुआ पत्थर जो किवाड़ोंको रोकता है। (यहा जलाल्याकी टक्करका अर्थ है अडिग) उरस = आकाश। झाट = फेट, कोडा, चपेट।

वचनिका = यह भी दवावैतकी तरह होती है। अर्थात् यह भी गद्यका एक रूप है। इसका भी "रघुनाथ रूपक" में इस प्रकार लक्षण लिखा है—

वचनिका दो प्रकारकी होती है पदबंध और गदबंध। पदबंधके दो भेद हैं। प्रथम भेदमे तो केवल 'वारता' ही रखना चाहिए, दूसरे भेदमें वारतामें मोहरा (अनुप्रास) रखना चाहिए। और दो ही भेद गदबंध वचनिकाके होते हैं। प्रथम

ज्वाल । सेरोंके झुंड, बलके बितुंड । हूरोके हार, दिलके उदार । कालीके चक्र, जलाल्याकी टक्कर । उरसकी तेग, मारुतका बेग । पोरसका भीम, उतरकी सीम । बीरोके बीर, सागरके धीर । नाहरके थाहर लोहकी लाट, जगूके जालम जमकी सी झाट । लावाके किल्लेमे ऐसे रजपूत, सारके संगर बलके मजबूत ।

दोहा

यम बुल्ले इकतारखा, सुनि नवाब यह बात ।
सकल बिरादर बीगरे, अब प्रानन पर घात ॥१९८॥
कर कफनी कोपीन कर, कर करवा भर आब ।
अब मक्का जैबो उचित, नवणों नही नवाब ॥१९९॥
आयुधखान अजीमखा, यम अक्खी दहुँ आय ।
ते श्रुति सभर सबनके, लगी करेजनि लाय ॥२००॥
कही मीर मारुत्तखां, सुनहु दवलउजीर ।
कै मरिहै कै मारिहै, नहि फिर होय फकीर ॥२०१॥

छंद भुजंगी

चढ्यो कोपि उज्जीरदोला नवाब ।
लिये जुद्धके संग जंगी सबाबं ॥

भेदमें तो आठ मात्राका पद होता है और दूसरे भेदमे २० मात्राका पद होता है । उक्त बचनिका पदबंध बचनिकाका दूसरा भेद है । इन सब बातोंको जाननेके लिए 'रघुनाथ रूपक' जो एक उत्तम ग्रंथ है, देखना चाहिए ।

१९९. करवा = शिकोरा, मटकाना, मिट्टीका छोटा गिलासनुमा पात्र । नवणो = नम्र होना ।

२००. लाय = अग्नि । श्रुति = कान । संभर = सुन कर ।

२०२. सबावं = असबाव, सामान ।

करी अग्र तोपं किये नद्द शद्दं ।
सदा मादिक पाय मत्ते दुरद्द ॥२०२॥
किये भूत कप्पाटकी फेट कज्जं ।
परि त्रास सोई भई प्रान तज्जं ॥
खिले टोप सन्नाहके बान सज्जे ।
भयो कोह भेरी भयानक बज्जे ॥२०३॥
यते लागया नैं बडे राग सिधू ।
मिले साजि हल्ले महावीर हिन्दू ॥
नरुकूनि ले सस्त्र हत्थौ उकढ्ढे ।
किधों कोटते सावठे सेर कढ्ढे ॥२०४॥
दहू दीन आरानमे प्रान झोके ।
लगे खेल विम्मानकों भान रोके ॥
मुनि बीर ऊमाहि ले संभू आयो ।
तजे लोक वृन्दारकू बेत छायो ॥२०५॥
घरी चार लो सांवठी सोर दग्गी ।
तप्यो लोक तेगूनकी रीठ बग्गी ॥
किते वीर बके गजो घाव मडै ।
परे पाव हीनं हय प्रान छडै ॥२०६॥

---

२०३. फेटकज्ज=टक्कर देनेके लिए । कप्पाट=किवाड़ । किये भूत=पागल किये । त्रास=डर ।

२०४ सांवठे=इकट्ठे । कढ्ढे=निकले, बाहर आये । यते...सिंधु=इधर सिंधुराग (वीर रसकी राग मे) 'दूहे' कहे जाने लगे ।

२०५ आरान=युद्ध । वेत=वेंतकी तरह ।

२०६. रीठ=युद्ध ।

कितेे अग हीने मुसल्ले कजाकी ।
लरै लुत्थ बत्थे रहे प्रान बाकी ॥
किते भूत बैताल भैरु किलक्कै ।
किती जुग्गनी गिद्धनी ओन छक्कै ॥२०७॥
धनी जावरेको अनी ज़ोर गिल्यो ।
घनै घाय आरानके घान घल्यो ॥
उतै जावरे टूक पत्ती मुसल्ले ।
यतै रूक हत्थो करन्नेश झल्लै ॥२०८॥

छन्द दुर्मिला

उतते तुरकान यते हिन्दवान दहु पुर बाहर जुद्ध किये ।
तिह ठोर रठोर 'अरज्जन' से 'रनजीत' उदग्गनि खग्ग लिये ॥
दहु राम रु 'स्याम' 'हनू' तनये 'हरनाथ' 'कुमेर'के पूत हले ।
बहु रेवतसिंह 'गुपाल' 'सुजान' 'पनै' सुतनै किरवान झलै ॥२०९॥
'बखतेश' 'सुजान' 'गोविन्दरु' 'पातिल' 'गोबरधनरु' 'लदान' पती ।
'करनेश'के पुत्र 'उदैक्रनदेव' दहू उमगे मृगराज भती ॥
उगली किरवान मियाननते मुगली भद कट्टि परै बिथुरे ।
शर पेख पिनाकनि बाननकी अवली अनहद्द सबद्द करै ॥२१०॥
अरिबद्ध बिसब्द कराल कितैं करि कोप कुलाहल शब्द कढै ।
करनेश उजीरदवल्लनकी दहुँ ओर दुहाई मनुष्य पढै ॥

---

२०८. जोर गिल्यो=बलसे भरा हुआ । घने=अधिक, अनेक । घाय=प्रहारोंसे, वारोंसे । घान=समूहमें । घल्यो= सम्मिलित हुआ । रुक=तलवार ।

२१०. भती=भांति, तरह । उगली=निकाली । भद=गिरनेकी हल्की आवाज, जैसे पट, धप, धम वैसे ही भद है । विथुरे=बिखर गई, फैल गई ।

बजि सार कुठारन बारनि ले, नर हैमर गैमर देह फटै ।
खिर बाढ परै खग धारनतैं मनु आरनतै चिनगी उछटै ॥२११॥

कछवाह अकटक भूमि रमै, तुरकान हने खग धारनतें ।
मनु सग्र तनै खिनि कोटि पचास, तलातल भूमि कुदारनतें ॥

हिंदूवान विमान अपच्छरकी गलबाँह मनो दमनी घनकी ।
तुरकान लिए परलोक परी गमनी मनु जुट्टिटी जुराफनकी ॥२१२॥

हर मुडनि हार बनाय हँसे, बिहसी सब जुग्गनि श्रोनछकी ।
पल खाय अघाय पलच्चर नाचत भूत पिसाचनकी किलकी ॥

बजि भैरव डैरव जत्र मुनी, धुनि गिद्धनि गुद्द अघाय उडी ।
लखि आतुर सार प्रहारयतै किलमी गति सोक समुद्र बढी ॥२१३॥

ढरके मनु कुभ मजीठनके रनभूमि तलातल रक्त मई ।
करनेश हनी खग धारनतै खल सेन चलद्दल भूमि भई ॥

कमनेत बिनोट पटै कुसती उडगी सब सिद्धि किलमनकी ।
फिरि तोप न दग्गिय खग्ग न बग्गिय भग्गिय सेन किलमनकी ॥२१४॥

---

२११. खिर=गिरना, टूटना। बाढ़=धार, पाँण। आरन=लुहारकी भट्टी। उछटैं=उछलती है। बारनि=प्रहारोंसे। अरिवद्ध=शत्रुसे घायल हुए मनुष्य।

२१२. तनै=तनय, पुत्र। कुदारनतें=कुदालसे। दमनी=दामनि, बिजली। जुराफनकी=जिराफोंकी, जुराफ, अफ्रीकाका एक पशु विशेष, जिसकी गरदन बहुत लम्बी होती है।

२१३. डैरव=डमरू।
गुद=गूदा। अघाय=तृप्त हो कर।

२१४. ढरके=पड़े हुए, गिरे हुए।

दोहा

यम जुट्टे हिन्दू असुर, जुट्टे माल जखीर ।
हुय तग्गो तग्गो तदन, भग्गो दवलउजीर ॥२१५॥

छप्पय

जुध जीत्यो करनेश येम मुनि जत्र बजायो ।
जुध जीत्यो करनेश ईश चुनि शीश अघायो ॥
जुध जीत्यो करनेश, बीर बावन यम बक्के ।
जुध जीत्यो करनेश, ओन जुग्गनि सब छक्के ॥
पलचार हूर अप्छर सकल, भूत प्रेत जगम जती ।
नर नाग देव यम उच्चरत, जुध जीत्यो पद्धरपती ॥२१६॥
जुध हारयो नब्बाब जुद्ध पद्धरपति जीत्यो ।
सर छिल्लर सुकि गयो येम आसुर दल बीत्यो ॥
तिमिर घोर तुरकान भान कूरम लखि भज्ज्यो ।
कुजरकुल सहारि मनहु मृगराज गरज्यो ॥
जुध-जीति मेक 'महुकम' जदन, 'फतयसिह' घर आभरन ।
'भारथ' समान भारत्थ करि, किलम हूँत जीत्यो 'करन' ॥२१७॥

दोहा

'दातोपुर' दक्खिन दिसा, 'सीकर' उत्तर कोन ।
'कूहर' पच्छिम जानिए, पूर्व जीएको भोन ॥२१८॥

---

२१७. छिल्लर=छिछला, कम गहरा । बीत्यो=समाप्त हो गया । भारत्थ कर=युद्ध-कर ।

ताके मद्धि 'उदैपुरो', वसत सुकविको ग्राम ।
उन्नत परबत हरसको, तहँ भैंरवको धाम ॥२१९॥
कवि जन कवियो दिव्य कुल, चारन चडी वाल ।
'अलू' भक्तके वशमे, यह मम नाम गुपाल ॥२२०॥
सूर बीर रजपूत कुल, कवि चारन कुल जानि ।
जो न वहत निज धर्म जुत, दहु कुल दीरघ हानि ॥२२१॥
आदि धर्म छिति छत्र कुल, पूरन पैंज प्रतीत ।
दान करन मारन मरन, रजपूतो यह रीत ॥२२२॥
सँग रहनो सपति विपति, सुख दुख सहनो सत्य ।
कीरति कहनो दान जुध, कुल चारन यह कत्य ॥२२३॥
याते हम यह ग्रन्थमे, परिश्रम कियो अपार ।
सुजस कच्छ कुलको कियो, अपनी मति अनुसार ॥२२४॥

इति श्री कूर्म यश प्रकाश म्लेच्छ विध्वंस कलह केलि बरणनं कवि गोपालदान विरचित द्वितीय लावा जुद्ध समाप्त, समाप्तोयं पचम प्रसग

इति ग्रन्थ समाप्त ।

---

२२२. पैंज=प्रतिज्ञा ।